उदयपुर केम्प

मेरे प्रिय आत्मन्

एक छोटी सी कहानी से होने वाले तीन दिनों की चर्चाओं का मैं प्रारंभ करूंगा। एक युवा फकीर सारी पृथ्वी की परिक्रमा के लिए निकला। उसने सारी जमीन घूमीं, पहाड़ों और रेगिस्तानों में, गांव और राजधानियों में, दूर-दूर के देशों में वह भटका और घूमा। और फिर सारे जगत का भ्र मण करके अपने देश वापिस लौटा। जब यात्रा पर निकला था, तो जवान था, जब वापिस आया तो बूढ़ा हो चुका था।

अपने देश के राजधानी में आने पर उसका बड़ा स्वागत हुआ। उस देश के राजा ने उसके चरण छुए। और उससे कहा कि धन्य है, हमारा भाग्य कि तुम हमारे बीच पैदा हुए। और तुमने मेरी सुगंध को सारी दुनिया में पहुंचाया। तुम्हारी कीर्ति के साथ हमारी कीर्ति गई। तुम्हारे शब्दों के स ाथ हमने जो हजारों वर्षों में संग्रहीत किया था। वह लोगों तक पहुंचा। और मैं भी एक प्रतीक्षा ि कए तुम्हारी राह देख रहा हूं। अनेक बार मेरे मन में यह खयाल उठा है। कि मेरा मित्र और मे रे देश का भाग्य जब सारी दुनिया से घूमकर लौटेगा, तो शायद मेरे लिए कुछ भेंट भी लाए। श ायद सारी दुनिया में कुछ उसने खोजा हो जो मेरे काम का हो। तो मैं बड़ी आशा से तुम्हारी प्र तीक्षा कर रहा हूं। मेरे लिए क्या लाए हो, वह फकीर और वह राजा बचपन के मित्र थे। वे ए क ही स्कूल में पढ़े थे, राजा बड़ा सम्राट हो गया था। उसने अपने रा य की सीमाएं बहुत बढ़ा ली थी।

और उसका मित्र फकीर भी सारी दुनिया में यश और कीर्ति अर्जित करके लौटा था। करोड़ों-कर ोड़ों लोगों ने उसे सम्मान दिया था और दुनिया का कोई कोना न था। जहां उसके चरण और उ सकी वाणी न पहुंची हो। उस उस राजा ने कहा कि मैं प्रतीक्षा कर रहा हूं कि मेरे लिए क्या भें ट लाए हो। वह फकीर बोला—मैंने भी यह सोचा था कि जरूर घर लौटकर यह बात पूछी जाएग ी।

और जरूर ही तुम कहोगे, कि क्या लाए मेरे लिए। और मैंने दुनिया में बहुत सी चीजें देखी है। और मैंने सोचा कि उन चीजों को मैं ले चलूं। लेकिन हर चीज लाते वक्त मुझे खयाल आया। य ह तो तुम्हारे पास पहले से ही मौजूद होगी। तुम्हारे पास कौन सी चीज की कमी है। तुमने दूर-दूर के देश जीत लिए है। तुम्हारे महलों में सारी दुनिया की संपदा आ गई। तुम्हारे पास कौन स ी चीज की कमी होगी जो मैं ले चलूं। आखिर में थक गया, और मुझे कोई चीज ऐसी न मालूम पड़ी जो तुम्हारे महलों में न पहुंच चुकी हो। जिसके तुम मालिक न बन चुके हो, बहुत सोचकर एक चीज जरूर मैं ले आया हूं। लेकिन अकेले में और एकांत में उस चीज को मैं तुम्हें दूंगा। उ स फकीर के पास कुछ दिखाई भी न पड़ता था, एक छोटा सा झोला था, जो उसके कंधे पर ल टका था। उसमें क्या हो सकता था। ऐसी कौन सी चीज हो सकती थी जो राजा के पास न हो, क्योंकि फकीर ने खुद ही कहा—कि मैं उन सारी चीजों को छोड़ आया हूं। जिनका मुझे खयाल पै दा हुआ कि तुम्हारे पास पहले से होंगे।

उस फटे से झोले में क्या हो सकता था। बड़ी उत्सुकता और आकांक्षा से वह राजा उसे अपने म हलों में ले गया। सारे लोग जब पीछे छूट गए, उसने उस फकीर से फिर कहा कि निकालें। दिख ाओ मुझे क्या ले आए हैं मेरे लिए? उस फकीर ने जो निकाला, आप भी नहीं सोच सकते कि उसने क्या लाया होगा। वह एक बड़ी सस्ती सी और बड़ी अनूठी चीज ले आया था। उसने अपने झोले में से यूं निकाला, बड़ी साधारण सी चीज थी। एक छोटा सा आईना था, एक छोटा सा दर्पण था चार पैसे का, और उसने उस राजा को वह दर्पण दिया। राजा ने उसे उलट-पलट कर देखा उसने कहा क्या? यह दर्पण ले आए हो, उस फकीर ने कहा—यह मुझे सबसे कठिन चीज म ालूम पड़ी जो राजाओं के पास नहीं होती। इसमें तुम खुद को देख सकोगे। और दुनिया में बहुत कम लोग है जो खुद को देखने में समर्थ होते हैं। और जिनके पास बहुत कुछ होता है धन, संपि

त्त, यश वे तो अपने को देखने में और भी असमर्थ हो जाते हैं। तो बहुत खोजकर मैं यह दर्पण ले आया हूं। ताकि तुम अपने को देख सको, इस दर्पण को सस्ता मत समझना। ऐसे तो घर-घर में दर्पण होते हैं। लेकिन खुद को देखने में कौन समर्थ हो पाता है। दर्पण में हम अपने को रोज देख लेते हैं, लेकिन क्या कभी हम अपने को देख पाए तो उस फकीर ने कहा, कि यह दर्पण इस याद के लिए तुम्हें दे जाता हूं। कि जिस दिन तुम अपने को देखने में समर्थ हो जाओ। उस दिन ही समझना, कि तुम्हें दर्पण उपलब्ध हुआ है।

मैं भी सोचता था, रास्ते में कि आपके लिए क्या ले चलूं। सोचा कि मैं भी दर्पण खरीद लूं, और आपको एक दर्पण भेंट कर दूं। क्योंकि जमीन पर वे लोग कम होते जा रहे हैं। जिनके पास दर्पण हो, जो खुद को उसमें देख सकें और पहचान सकें। मैंने कहा—पता नहीं दर्पण किसी काम में आए या न आए। और दर्पण बड़ी कमजोर चीज है। पता नहीं आपके हाथों में बचे या टूट जाए। और वह कहानी का भी क्या हुआ अंत में यह भी अब तक पता नहीं चल सका। कि वह राजा अपने को देखने में समर्थ हो पाया या नहीं। इतनी ही कहानी सुनी गई है। इसके बाद क्या हुआ, इसका कोई भी पता नहीं, कि उस दर्पण का क्या हुआ। उस राजा का क्या हुआ। तो मैं वह दर्पण ले भी आऊं। तो उस दर्पण का क्या होगा, इसका कोई पता नहीं था। इसलिए फिर मैंने सोचा—कि तीन दिन में वे बातें करूंगा। जिनसे आपके चित्त में एक दर्पण बन जाए और आप अपने को देखने में समर्थ हो सकते हैं।

आने वाले तीन दिनों में आपके चित्त को दर्पण कैसे बनाया जा सके। उस संबंध में कुछ बातें कहूंगा। और आपका चित्त दर्पण बन जाए तो वह दर्पण न तो फूट सकता है, न टूट सकता है। और वह दर्पण चार पैसे में किसी बाजार में भी नहीं मिल सकता। चार लाख में भी नहीं, चार करोड़ में भी नहीं। कितनी भी संपदा देकर उसे किसी बाजार से खरीदने का कोई उपाय नहीं है। वह तो जब खुद को ही कोई निखारता है, खुद के ही जीवन को ही जब कोई घिसता है। और खुद के ही पत्थर जैसे मन को जब कोई चमकाता है। तो वह दर्पण उपलब्ध होता है, जिसमें खुद की छवि बनती है। और बड़े रहस्यों का रहस्य यह है कि जो खुद को जानने में समर्थ हो जाता है। वह परमात्मा को भी जान लेता है। और जो खुद को जानने में समर्थ नहीं होता। वह चाहे कुछ भी जान लें, उसके जानने का दो कौड़ी से यादा कोई मूल्य नहीं है। क्योंकि जिसके भीतर अज्ञान हो, उसके बाहर के ज्ञान का क्या अर्थ हो सकता है। जिसके भीतर का दीया बुझा हो उसके घर के बाहर सूरज भी जल रहा हो तो उसका क्या प्रयोजन है? जिसकी अपनी आंखें फूटी हो, और बंद हो, रास्तों पर कितनी ही रोशनी हो, उस रोशनी से क्या होगा। लेकिन अगर भीतर दीया जल जाए, और रास्ते अंधकार से भरे हो। अमावस की रात से भरे हो, तो भी वह रास्ते का कोई खतरा नहीं है उस अंधकार का। कोई डर नहीं है, एक छोटा सा दीया भीतर हो। तो जहां भी हम कदम रखेंगे वहां प्रकाश हो जाएगा।

अंधेरा रास्ता प्रकाशित हो उठेगा, और हम उस रास्ते को पार हो सकेंगे। और बाहर के जगत में चाहे कितना ही अज्ञान हो, भीतर अगर ज्ञान की एक किरण भी फूट जाए। तो इस दुनिया भर का अज्ञान भी उस किरण के सामने बहुत कमजोर होता है। और भीतर अगर दर्पण मिल जाए तो हम खुद को तो देख ही पाएंगे और उस खुद के देखने में हम यह भी जान पाएंगे कि उस खुद में ही वह भी छिपा था जो खुदा है। स्वयं में वह भी छिपा था जो सत्य है। स्वयं में वह भी मौजूद था, जो कि भगवान है। और स्वयं में खोजे बिना चाहे हम किन्हीं मंदिरों की पूजा करें और किन्हीं मस्जिदों में प्रार्थनाएं पढ़ें। और किन्हीं शिवालयों में जाकर हम दीये जलाए, न कोई शिवालय है, और न कोई मस्जिद और न कोई मंदिर काम का आएगा। क्योंकि मंदिर तो एक है जो मनुष्य के भीतर है। पत्थर और इ्रध!टों के मंदिरों ने मनुष्य को परमात्मा से जोड़ा नहीं है। बल्कि तोड़ा है, मंदिर और मस्जिद दु—ध।मन की भांति खड़े हो गए। मस्जिदों, मंदिर में

जाने वाले लोग एक-दूसरे के शत्रु होकर खड़े हो गए। भगवान क्या किसी के बीच शत्रुता बन स कता है। परमात्मा क्या मनुष्य और मनुष्य को तोड़ने के लिए है। दीवार बन सकता है। परमात्म ा क्या कोई सीमा बन सकता है। जो एक को दूसरे से अलग कर दें। नि–ध्।चत ही जो मंदिर और मस्जिद मनुष्य को मनुष्य से अलग करते हो। वे झूठे होंगे, पत्थरों से बनाए गए होंगे। उनमें बैठे हुए भगवान भी पत्थर से यादा नहीं हो सकते। लेकिन एक और मंदिर भी है, जो मन क ा है, और वह जो मन का मंदिर है। वह न हिंदू का है, और न मुसलमान का है, और न ईसाई का, और न जैन का है। क्योंकि मन तो मन है, न वह हिंदू होता है, न मुसलमान और न ईसा ई। उस मन के मंदिर को अगर कोई उपलब्ध हो जाए खोज कर ले। उसी में वह प्रभु को भी प ा लेगा। तो उस दर्पण की हम चर्चा करेंगे, इन तीन दिनों में और वह खुद के भीतर दर्पण कैसे विकसित हो जाए। कैसे हम उसको दर्पण को निर्मित कर लें, उस दर्पण में अपने को पा लें।
क्योंकि जो मनुष्य अपने को भी नहीं पा सका है। वह और क्या पा सकेगा, और खुद को छोड़क र चाहे वह सारे जगत का साम्रा य भी पा लें। तो भी आखिर में पाएगा, उसके हाथ खाली के खाली है। सिकंदर जिस दिन मरा, उस दिन जिस राजधानी में उसकी अथ(निकली। लोग हैरान हो गए, एक ही बात उस दिन उस राजधानी में राजपथ पर गूंजने लगी। हजार-हजार होंठों प र, हजार-हजार मुंह से एक ही बात पूछी जाने लगी कि यह क्या है? सिकंदर के दोनों हाथ अ थ(के बाहर लटके हुए थे। ऐसी अथ(कभी भी नहीं निकली थी। लोग पूछने लगे कि क्या कोई भूल हो गई है। अथ(के बाहर दोनों हाथ क्यों अटके हुए है, क्यों लटके हुए हैं।
हाथ तो अथ(के भीतर होते हैं। धीरे-धीरे लोगों को पता चला सिकंदर ने मरने के पहले कहा था। मेरे हाथ अथ(के बाहर रखे जाए, ताकि लोग देख ले। मैं भी खाली हाथ दुनिया से जा रह ा हूं। मैंने बहुत कुछ जीता, जमीन करीब-करीब जीत ली थी। और जो भी ज्ञात था, वह सब मे रा साम्रा य हो गया था। लेकिन मरते वक्त मैं अनुभव करता हूं, कि मुझसे यादा दरिद्र आदमी और कोई नहीं है। और दुनिया यह बात देख लें, कि एक सम्राट भी खाली हाथ मरता है। इसि लए मेरे हाथों को अथ(के बाहर खुले लटके रहने दें। हम सब के हाथ भी खाली ही जाते हैं, और खाली जाएंगे ही। क्योंकि एक ही संपदा है जो प्राणों को भर सकती है और वह हमारे भीत र है। और बाहर जो भी संपदा है उसे हम भ्रम में रहे भला। कि उसे इकट्ठा करके हम अपने प्रा णों को भर लेंगे। परिपूरित कर लेंगे फुलफिलमेंट हो जाएगा, लेकिन आज तक यह न हुआ है अ ौर न होगा, आप भी उसके अपवाद नहीं हो सकते। जीवन का नियम यही है, जो बाहर है, वह भरने का भ्रम देता है। लेकिन भर नहीं पाता, और जो भीतर है,वही केवल भरत सकता है।
और उसे लाने को भी कहीं जाना नहीं। कोई यात्रा नहीं करनी, कोई युद्ध नहीं करना, कोई आ क्रमण नहीं करना। केवल आंखें फेरनी है, और भीतर खोज लेना है। वह दर्पण मिल जाए, भीत र का तो यह खोज पूरी हो सकती है। हममें से सारे लोग ही शायद इसकी खोज में है, हममें से शायद ही कोई व्यक्ति हो। जो दुखी पीड़ित और अशांत नहीं है, हममें से शायद ही कोई हो ज ो खाली-खाली अनुभव नहीं करता। हममें से शायद ही कोई हो जिसे यह अहसास नहीं होता कि मेरा जीवन पानी पर खींची हुई लकीरों की भांति रोज मिटा जाए। और मेरे हृदय में कुछ भी उपलब्ध ही नहीं है। कोई पाना नहीं है, मैं खाली और रिक्त जी रहा हूं और मरा जा रहा हूं। यह जो अहसास है खाली और रिक्त होने का है, यह जो एंपटिनेस है, सारी दुनिया में हर आ दमी को अनुभव हो रही है। इस अनुभव को भरने के वह उपाय करता है। लेकिन वे उपाय भी अगर बाहर ही हो, तो उन उपायों से भी कुछ भी नहीं हो पाता।
जब हम पीड़ित और परेशान होते हैं तो हम भगवान की तलाश में निकलते हैं। मंदिरों में मस्जि दों में खोजते हैं उसे। पहाड़ों पर उन तीर्थो में खोजने जाते हैं उसे। दूर ही की यात्राएं करते हैं उसके लिए। लेकिन एक बात भूल जाते हैं, कि हमारे भीतर जो प्राणों का प्राण बैठा है। क्या क

भी उसको भी खोजेंगे। क्या कभी उसको भी पहचानेंगे? इसके पहले कि कोई किसी और खोज में जाए जिसके पास भी थोड़ी समझ और बोध है। उसे अपनी खोज कर लेनी चाहिए। हो सकता है जिसे हम खोजना चाहते हों, वह हमारे भीतर मौजूद है। और हो सकता है कि जहां हम उ से खोजने जा रहे हैं वहां वह बिलकुल भी मौजूद न हो।

एक अंधेरी रात में, एक चर्च पर, एक नीग्रो ने जाकर द्वार खटखटाया। चर्च के पादरी ने द्वार खोला, काश उसे पता होता कि एक काला आदमी द्वार बजा रहा है। तो वह द्वार भी न खोलत ा। क्योंकि वह चर्च तो था सफेद चमड़ी के लोगों का चर्च था। अब तक जमीन पर आदमी ऐसा मंदिर नहीं बना पाया जो सबका हो। और जो मंदिर सबका नहीं है वह परमात्मा का कैसे हो सकेगा। सफेद चमड़ी के लोगों के मंदिर हैं, काली चमड़ी के लोगों के मंदिर हैं, हिंदुओं के मंदिर है, मुसलमानों के मंदिर हैं, जैनों के मंदिर हैं, बौद्धों के मंदिर हैं, ब्राह्मणों के मंदिर हैं, शूद्रों के मंदिर हैं, लेकिन मनुष्य का कोई मंदिर नहीं है। वह मंदिर भी मनुष्य का नहीं था। दरवाजा खो ल दिया तो देखा एक नीग्रो खड़ा है, काला आदमी। पुराने दिन होते तो उसने कहा होता हट शू द्र यहां से। भगवान के मंदिर में तेरे लिए कोई जगह नहीं है। और पुराने दिन होते तो शायद उ सकी गर्दन कटवा देता या उसके कानों में शीशा पिघलवाकर भरवा देता कि तू इस मंदिर के अ ास-पास क्यों आया। लेकिन जमाना बदल गया है। तो उस चर्च के पादरी को उसे प्रेम से समझा कर लौटा देना पड़ा। उसने उस शूद्र, उस नीग्रो को कहा, मेरे मित्र! किसलिए मंदिर में आना च ाहते हो। उसने कहा, मन है मेरा दुखी, चित्त है मेरा पीड़ित और चिंताओं से भरा, शांत होना चाहता हूं।

जीवन बीत गया मालूम होता है और कुछ भी मैंने पाया नहीं। भगवान की शरण चाहता हूं। यह एक ही मंदिर है गांव में, मुझे भीतर आने दो भगवान का सान्निध्य मिलने दो। उस पादरी ने कहा, मित्र! जरूर आने दूंगा। लेकिन जब तक मन शुद्ध न हो, चित्त पवित्र न हो, प्राण शांत न हो, आत्मा योति से न भर जाए, तब तक भगवान से मिलना नहीं हो सकेगा। आकर भी क्या करोगे? जाओ और पहले मन को शुद्ध करो और शांत करो हृदय को प्रार्थना और प्रेम से भरो फिर आना। फिर मैं तुम्हें भीतर प्रवेश दूंगा। वह नीग्रो वापस लौट गया। उस पादरी ने सोचा, न होगा कभी इसका मन शांत और न यह दुबारा कभी आएगा। लेकिन कोई दो तीन महीने बी त जाने के बाद एक दिन बाजार में उस पादरी ने देखा, कि वह नीग्रो चला जा रहा है। लेकिन वह तो आदमी दूसरा हो गया मालूम पड़ता है। उसकी आंखों में कोई नई रोशनी, कोई नई झल क उसके पैरों की चाल बदल गई, उसके चारों तरफ कोई वायुमंडल और हो गया उसके होंठों पर कोई और ही मुस्कुराहट है जो इस जमीन की नहीं। कोई और ही मुस्कुराहट है जो इस जमी न की नहीं। तो उसने उस नीग्रो को पूछा और कहा कि तुम वापस नहीं आए। वह नीग्रो हंसने लगा और उसने कहा कि मैं तो आना चाहता था। और उसी आने के लिए मैंने प्रार्थनाएं की, उ सी आने के लिए मैंने भगवान से न मालूम कितनी मनौतियां मांगी, उसी आने के लिए मैंने अप ने मन को सब भांति शांत किया। लेकिन मैं क्या करता खुद भगवान ने मुझे रोक दिया कि मत जाओ।

एक रात जब प्रार्थनाएं करते सो गया तो मैंने सपना देखा कि भगवान खड़े हैं। और वे मुझसे पू छे रहे हैं कि क्यों तू मुझे पुकार रहा है क्यों तू मुझे बुला रहा है। तो मैंने कहा--कि वह जो हम ारे गांव का मंदिर है, चर्च है, मैं उसमें प्रवेश पाना चाहता हूं इसी के लिए सारी प्रार्थनाएं कर रहा हूं। तो भगवान हंसने लगे और उन्होंने कहा कि तू बड़ा पागल है, यह खयाल छोड़ दे। दस साल से मैं खुद उस चर्च में घुसने की कोशिश कर रहा हूं, वह पादरी मुझे भी नहीं घुसने देता। तू यह खयाल छोड़ दे।

और सच्चाई तो यह है कि उस मंदिर में ही नहीं आज तक किसी मंदिर में किसी पुरोहित ने भ गवान को प्रवेश नहीं पाने दिया। आज तक जमीन पर कोई मंदिर भगवान का घर नहीं बन सक ा। कई कारण है न बनने के, पहली बात भगवान प्रेम है और हमारे सब मंदिर व्यवसाय है। प्रेम का और व्यवसाय से क्या संबंध हो सकता है। जहां व्यवसाय है वहां प्रेम का कोई प्रवेश नहीं है । दूसरी बात सब मंदिर आदमी के बनाए हुए हैं। भगवान का आदमी का बनाया हुआ नहीं है। आदमी की बनाई हुई चीज में भगवान का प्रवेश असंभव है।
तीसरी बात आदमी जो भी बनाएगा आदमी से छोटा होगा। बनाने वाले से बनाई गई चीज बड़ी नहीं हो सकती। सृष्टा से बड़ी उसकी सृष्टि नहीं हो सकती। आदमी खुद ही बहुत छोटा और शूद्र है उसके बनाए हुए मंदिर और भी छोटे और शूद्र हैं। और परमात्मा है विराट, असीम इन शूद्र घेरों में और दीवालों में उसका आगमन कैसे हो सकता है। आज तक नहीं हुआ आगे भी न हीं होगा। लेकिन जिन लोगों को यह खयाल पैदा होता है। कि हम सत्य की खोज करें, लेकिन इन मंदिरों में उस खोज को करने लगते हैं। इससे बड़ी भूल और कोई दूसरी नहीं हो सकती। स त्य की खोज करनी हो, तो खुद को मंदिर बनाना होगा इसके सिवाय और कोई रास्ता नहीं है। कोई जमीन पर मंदिर नहीं हैं, जहां सत्य की खोज हो सकें। हां, हर आदमी खुद मंदिर बन सक ता हैं। जहां भगवान का प्रवेश हो सके। और यह खुद आदमी मंदिर कैसे बन जाए। चित्त दर्पण बन जाए तो आदमी मंदिर बन सकता है। चित्त दर्पण बन जाए, तो आदमी इसलिए मंदिर बन सकता है कि उसी दर्पण में भगवान की छवि उतरनी शुरू हो जाती है।
एक बार ऐसा हुआ, एक अरबी बादशाह के दरबार में, कुछ यूनानी चित्रकार आए। और उन ि चत्रकारों ने कहा, हम अपनी कला का प्रदर्शन करना चाहते हैं। लेकिन अरबी बादशाह के दरबा र में अरब के बड़े-बड़े चित्रकार थे, उन्हें बड़ी इस बात से प्रतिस्पर्धा पैदा हुई। और उन्होंने कहा कोई हमारी कला कम हैं। जो इन चित्रकारों को आमंत्रण दिया गया हैं। अगर ये कुछ प्रदर्शन करना चाहते हैं तो हम भी कुछ प्रदर्शन करना चाहते हैं। दोनों चित्रकारों की मंडलियों को यूना नी और अरबियों को एक बड़ा भवन दे दिया गया कि वे अपनी-अपनी कला का प्रदर्शन करें। अ रबी चित्रकारों ने बड़ी अदभुत दीवालों पर चित्रकारी की, बड़े खूबसूरत चित्र बनाए। छः महीने तक निरंतर वे दिन-रात श्रम करते रहें और उन्होंने पूरी दीवाल पर जादू खड़ा कर दिया। उन की मेहनत तो देखने जैसी थी, उनका श्रम तो अदभुत था। लेकिन और भी बड़े आ–ध।चर्य की बात तो यह थी कि यूनानी चित्रकार कुछ भी नहीं कर रहे थे। न उनके पास तुलिकाएं थीं और न रंग था। और राजा ने बहुत बार उनको कहा कि तुम्हें कोई जरूरत हों, तो उन्होंने कहा हमें कोई भी जरूरत नहीं। उन्होंने अपनी दीवाल पर एक पर्दा लटका लिया था। दोनों दीवालें आम ने-सामने थीं। उन्होंने अपनी दीवाल पर एक पर्दा लटका लिया था। अरबी चित्रकार दीवाल पर पागल की भांति मेहनत कर रहे थे। और दीवाल को एक, एक अदभुत चित्र में निर्मित कर दि या था। यह यूनानी चित्रकार क्या कर रहे थे। वे अपने पर्दे के पीछे क्या करते थे। न तो वे कभ ी रंग ले जाते दिखाई पड़ें, न कभी तुलिकाएं, लेकिन वे भी दिन-रात भीतर लगे थे क्या कर र हे थे। सारे नगर में चर्चा थी, उत्सुकता थी।
छः महीने पूरे हो तो लोग देखें, छः महीने पूरे हुए राजा गया। राजा भी दीवाना था जानने को, कि वे क्या कर रहें हैं। वे जब कोई सामान नहीं ले जाते तो क्या करते होंगे। अंतिम दिन आ गया और राजा गया, अरबी चित्रकारों का, चित्रकला देखने जैसे थीं। दंग हो गए लोग देखकर, इतने सजीव चित्र उन्होंने बनाए थे। जिससे वे दीवाल से बाहर निकल आएंगे। ऐसे सजीव वृक्ष उ न्होंने दीवाल पर पेंट किए थे। कि भूल हो जाए कि वे असली हैं, या नकली। दीवाल पर ऐसे रा स्ते थे कि मन होने लगे कि उन पर चल पड़ो। बहुत अदभुत था, राजा बहुत प्रसन्न हुआ। और उसने कहा, मेरी कल्पना भी न थी कि मेरे दरबार में ऐसे चित्रकार हैं। मुझे खयाल भी न था ि

क इतनी बड़ी कला, इतनी क्षमता तुममें हैं। और फिर वह मुड़ा दूसरी दीवाल की तरफ और उ
सने यूनानी चित्रकारों को कहा, हटाओ अपना पर्दा। तुमने तो हमारी नींद तक मु–ध।कल कर
दी हैं रात में भी सपना आता है कि तुम क्या कर रहे हों आखिर। उन्होंने पर्दा हटा दिया और
लोग देखकर हैरान रह गए। जो चित्र अरबी चित्रकारों ने बनाया था वही चित्र और भी अदभुत
रूप में सामने की दीवाल पर मौजूद था। यूनानी चित्रकारों ने कोई चित्र नहीं बनाया। वे तो के
वल दीवाल को घिसकर दर्पण बनाते रहें। उन्होंने सारी दीवाल घिस डाली थी। छः महीने में उन्
होंने दीवाल को दर्पण बना दिया था।

अरबी चित्रकारों का चित्रकार अदभुत, अदभुत थीं उनकी कला लेकिन दर्पण में वही चित्र और
हजार गुना सुंदर होकर दिखाई पड़ने लगा। वह यूनानी चित्रकार बोले, हम तो केवल दर्पण बना
ना जानते हैं। चित्र तो परमात्मा ने बना दिए हैं हम दर्पण बना देते हैं। और परमात्मा और हज
ार गुना खूबसूरत होकर उन दर्पणों में झलक आता है। परमात्मा तो सब तरफ मौजूद हैं, हमारे
पास दर्पण चाहिए और दर्पण है तो वह दिखाई पड़ेगा और वह दिखाई पड़ेगा तो हम सब उस
के मंदिर हो जाएंगे। और जब कोई आदमी उसका मंदिर हो जाता है। तभी उसके जीवन में आ
ता है आनंद तभी उसके जीवन में आता है सौंदर्य, तभी उसके जीवन में पैदा होता है संगीत, त
भी उसके जीवन में कोई नई क्रांति घटित हो जाती हैं वह कुछ से कुछ और हो जाता हैं। इन
आने वाले तीन दिनों में कैसे हम दर्पण बन जाएं, कैसे हम मंदिर बन जाए उसके हम बात करें
गे। मैं बात करूंगा, लेकिन मेरी बात करने से आप मंदिर बन नहीं सकते। मेरी बात करने से अ
गर आप दर्पण बन सकते होते तब तो बड़ी आसान बात थीं। मैं बात करूंगा वह बात अगर आ
पके हृदय में किसी कोने में पहुंच जाए। अगर आप अपने हृदय में दरवाजा खोलें और उसको भ
ीतर जाने दे। तो वह आपके भीतर बीज बन सकती हैं। और वह बीज आपके भीतर विकसित
हो सकता हैं। लेकिन वह विकास करना होगा आपको, वह बदलाहट करनी होगी आपको, इतना
जरूर मैं कह सकता हूं कि वह बदलाहट कठिन नहीं हैं, बहुत आसान है, बहुत सरल हैं। इसीि
लए सरल है वह बहुत, कि परमात्मा को पाने से यादा सरल और क्या बात हो सकती हैं। अग
र परमात्मा को पाना ही कठिन हो गया तो फिर तो और सब बातें और कठिन हो जाएंगी। क्यों
कि परमात्मा है सब जगह उपलब्ध और सबके भीतर मौजूद। असलियत तो यह है कि परमात्मा
को खोना असंभव है। क्योंकि परमात्मा का अर्थ यह है कि जिसमें हम जी रहे हैं जो हमारा जी
वन है, जो हमारी –ध।वास-–ध।वास और हमारा प्राण-प्राण है। उसे हम खो कैसे सकते हैं। जैसे
मछली सागर को नहीं खो सकती है, सागर में होना ही उसका जीवन है। उसकी आत्मा है। ऐ
से हम भी परमात्मा को नहीं खो सकते। लेकिन जो परमात्मा निरंतर हमें उपलब्ध है उसका भी
हमें स्मरण नहीं और बोध नहीं। वह बोध थोड़ी ही सरलता से उपलब्ध हो सकता है। वह थोड़े
ही सहज और स्वाभाविक होने से उपलब्ध हो सकता हैं। बड़ी सरल है बात, लेकिन सरल बात
भी कभी-कभी बहुत कठिन मालूम होती है। क्योंकि हम उस सरल बात के विरोध में इतने दूर
तक चले गए होते हैं। कि लौटना कठिन हो जाता है। हम इतने दूर चले गए होते हैं किसी स
रल बात के विरोध में, कि लौटना कठिन हो जाता है।

एक आदमी पेकिंग के बाहर कोई तीन-चार मील की दूरी पर रास्ते पर चला जाता था और उ
सने एक छोटे से बच्चे से पूछा, पेकिंग कितनी दूर हैं। उस लड़के ने कहा, जिस तरफ आप जा
रहे हैं अगर उसी तरफ आप चलते चले जाए तो इस जिंदगी में पेकिंग पहुंचना कठिन है। लेकि
न अगर आप कृपा करें और लौट पड़े तो चार मील से यादा फासला नहीं है। वह जिस तरफ
चला जा रहा था अगर वह उसी तरफ चलता चला जाए तो पूरी जमीन का चक्कर लगाए तब
पेकिंग पर पहुंच सकता था। लेकिन अगर लौट पड़े तो चार मील का फासला था जो कोई फास
ला नहीं था। हम जिस तरफ चले जा रहे हैं वह परमात्मा के बिलकुल विरोधी दिशा है उस शांि

त की विरोधी दिशा है। वह सत्य की विरोधी दिशा है, अगर हम उस पर ही चले जाए तो पेिं कग तो कोई पहुंच भी सकता है पूरे जमीन का चक्कर लगाकर क्योंकि कोई जमीन बहुत बड़ी नहीं है। लेकिन जिस रास्ते पर हम चलते हैं जीवन के वह अनंत हैं। और हम चलते चले जाए तो परमात्मा से दूरी निरंतर बढ़ती चली जाती हैं। लेकिन यदि हम लौटने का साहस करें तो शायद हम लौटें और परमात्मा मौजूद है। जैसे कोई सूरज की तरफ पीठ खड़ा हो और पूछे कि सूरज कहां है? मैं कैसे पहुंचू। तो हम उससे कहेंगे कहीं पहुंचना नहीं है। केवल तू पीठ फेर लें और आंखें उस तरफ ले आ जिस तरफ तू पीठ किए हैं तो सूरज तेरी आंखों के सामने आ जाएगा। शायद पीठ फेरने की बात है हम परमात्मा के सामने आ सकते हैं।

कैसे ये पीठ फेरेंगे, उसकी बात तो कल सुबह से आप से करूंगा। यह तो प्राथमिक चर्चा है थोड़ी सी। आपको सिर्फ यह खयाल दिलाने को कि हम तीन दिनों में क्या करने वाले हैं? एक निवेदन है, जो भी व्यक्ति उत्सुक हो वह पूरे-पूरे तीन दिन आए नहीं तो बिलकुल न आए। जो भी उत्सुक हो वह कल सुबह से आए तो फिर पूरे तीन दिन आए नहीं तो कल सुबह से न आए। कोई भीड़ करने की यहां जरूरत नहीं है। आना हो तो पूरे तीन दिन आने का खयाल हो तो आना चाहिए नहीं तो नहीं आना चाहिए। क्योंकि अधूरी बातें सुनना, कभी-कभी न सुनने से भी याद ा खतरनाक हो जाता है। आधी बातें सुनना न सुनने से भी यादा खतरनाक हो जाता है। अधूरा ज्ञान अज्ञान से भी यादा खतरनाक हो जाता है। इसलिए पहला निवेदन तो यह है कि आज की बात की तो कोई फिक्र नहीं। लेकिन कल सुबह से आना है तो फिर पूरे दिन पूरे वक्त पूरी चर्चाओं में मौजूद होना हो तो ही आना है। नहीं तो नहीं आना है।

दूसरी बात कोई भी जो बातें मैं कहूंगा, इन तीन दिनों में उन पर निर्णय लेने की, जजमेंट करने की जल्दी मत करना। जब तक कि मेरी पूरी बात न सुन लें। तो निर्णय को थोड़ा स्थगित रखना जब मेरी तीन दिन की पूरी बात सुन लें। तब सोचना और विचार करना। मेरी एक-एक बात पर अगर विचार करना शुरू किया तो समझना मु—ि‍ध।कल हो जाएगा। क्योंकि हो सकता है कि जो मैं कहूं, वह शुरू-शुरू में अटपटा मालूम पड़े। लेकिन अगर तीन दिन पूरी बात को समझने की कोशिश की तो हो सकता है उसका अटपटापन चला जाए। और तीन दिन में पूरी बात खयाल में आ जाए। तो जल्दी निर्णय करने की कोशिश मत करना। जीवन और जीवन के सत्य इतने रहस्यपूर्ण है और हमारी समझ इतनी छोटी है कि जब हम उससे निर्णय कर लेते हैं तो हम अकसर भूल में पड़ जाते हैं। तो जल्दी निर्णय नहीं करेंगे।

दूसरी निवेदन रोज-रोज फुटकर निर्णय नहीं करेंगे। एक-एक बात पर नहीं सोचेंगे पूरी बात मेरी सुन लेंगे तीन दिन। फिर सोचने का काफी वक्त होगा। फिर धीरे-धीरे उस पर सोच। हमारी अ ादतें गलत हैं। इधर मैं बोलता हूं उधर आप सोचना जारी रखते है कि यह जो मैं कह रहा हूं ठीक है या गलत। यह जो मैं कह रहा हूं यह गीता में लिखा है या नहीं। यह जो मैं कह रहा हूं यह क्राइस्ट ने कहा या नहीं महावीर ने यही कहा या नहीं। जब मैं बोलता हूं उसी वक्त अगर आप सोचते हैं तो आपको पता है मन एक समय में एक ही काम कर सकता है या तो सुन सकता है या सोच सकता है। तो अगर आप उसी वक्त सोचते हैं तो आप सुन न पाएंगे। और जिस बात को आप सुन ही न पाएंगे उसको सोच कैसे पाएंगे। तो पहले सुन लेना, सोचना बाद में कर लेना। कोई जल्दी नहीं है और मैं यह भी नहीं कह रहा हूं कि सुनने का मतलब मान लेना नहीं। सुनने का मतलब यह भी नहीं है कि मैं जो कहूं, उसे मान लेना। मान लेने की भी जल्दी मत करना। क्योंकि मान लेना भी एक निर्णय है। सुनना सिर्फ न मानने की जल्दी, न मानने की जल्दी, न स्वीकार, न अस्वीकार सिर्फ चुपचाप मौन से सुन लेना काफी है। और अगर तीन दिन मौन से बात को सुना भी तो सुनते-सुनते ही अगर उस बात में कोई सच्चाई है तो वह आपके

प्राणों तक पहुंच जाएगी। और अगर वह बात गलत है तो उसके गलत होने का भी स्पष्ट बोध आपको हो जाएगा।

एक फकीर एक गांव में नया-नया पहुंचा था। उस गांव के लोगों ने कहा, कि चलो शुक्रवार का दिन था और मस्जिद में नमाज का दिन था। तो गांव के लोगों ने कहा, कि आओ और मस्जिद में आज हमें समझाओं कुछ वह गया। वह मंच पर बैठा और उसने कहा, मेरे मित्रों इसके पहले कि मैं बोलना शुरू करूं मेरी एक खराब आदत हैं मैं एक प्र–ध।न पूछता हूं हमेशा। वह प्र–ध।न मैं आज भी पूछूंगा और तुम सबको उसका उत्तर देना पड़ेगा। और उस फकीर ने पूछा, मैं यह पूछना चाहता हूं कि मैं जिस संबंध में बोलूंगा आप लोग उस संबंध में कुछ जानते है या नहीं। उन सारे लोगों ने कहा, हम कुछ भी नहीं जानते हमें कुछ भी पता नहीं है। वह फकीर मंच से नीचे उतर गया। और उसने कहा, कि क्षमा करें! फिर मैं न बोल सकूंगा। क्योंकि जो लोग कुछ भी नहीं जानते उनके पास सिर खपाना फिजूल है, बेकार है। लोग बड़ी हैरानी में पड़ गए वह फकीर उठकर चला गया। फिर दूसरा शुक्रवार आया, उस गांव के लोगों ने कहा कि बड़ा अजीब फकीर है। अब फिर उसके पास चलें। वह फिर गया और उन्होंने कहा, कि चलो शुक्रवार का ि दन आ गया है उपदेश करो। वह फकीर फिर राजी हो गया और आ गया। मंच पर बैठा और उसने कहा कि जैसी मेरी खराब आदत है मैं एक प्र–ध।न बिना पूछे कभी अपनी बात शुरू नहीं करता। और तुम सबको उत्तर देना पड़ेगा। लोग तैयार थे। लेकिन पिछली बार भूल हो गई थी । उसने कहा कि मैं पूछना चाहता हूं कि मैं जिस संबंध में बोलूंगा। आपको उस संबंध में कुछ प ता है या नहीं। सारे लोगों ने कहा हमको पता है। पिछली दफा भूल हो गई थी यह कहकर कि नहीं पता है। वह फकीर नीचे उतर गया और उसने कहा कि जिनको सब कुछ पता है। उनके साथ सिर पचाना फिजूल है। मैं वापिस जाता हूं। तो लोग तो बड़ी मु–ध।कल में पड़ गए।

लेकिन तीसरा शुक्रवार आ गया। और उन्होंने कहा कि एक मौका और लेना चाहिए। यह आदमी है कैसा? वे गए और उन्होंने उस फकीर से कहा, कि चलें शुक्रवार का दिन आ गया। उपदेश करें, वह फिर राजी हो गया। वह वापिस आकर मंच पर बैठा उसने कहा कि जैसी कि मेरी सद ा कि आदत है। एक प्र–ध।न बिना पूछे मैं कभी चर्चा शुरू नहीं करता। लोग तैयार थे, उसने पू छा कि जो मैं बोलने वाला हूं उस संबंध में कुछ पता है या नहीं। तो लोगों ने कहा कि कुछ लो गों को पता है और कुछ लोगों को पता नहीं है। वह फकीर नीचे उतर कर खड़ा हो गया। उस ने कहा फिर जिनको पता है, वह उनको बता दें जिनको पता नहीं है। मैं जाता हूं मेरी यहां क्य ा जरूरत है।

चौथा शुक्रवार भी आ गया, लेकिन चौथा कोई उत्तर नहीं था लोगों के पास। वह फिर वही बात पूछेगा, अब क्या करेंगे। तीन ऑलटरनेटिव, तीन विकल्प हो सकते थे। तीनों खतम हो गए थे। चौथा कोई विकल्प नहीं था। अब इस फकीर के साथ झंझट हो गई थी। अब क्या करें! उस गां व के लोग समझ लीजिए वह फकीर मैं ही हूं और आप है उस गांव के लोग है तो क्या करिएग ा? तीन विकल्प के अलावा चौथा विकल्प है। तीन उत्तर के अलावा चौथा उत्तर है। उस गांव में उस फकीर का प्रवचन न हो सका। क्योंकि गांव के लोग चौथा उत्तर देने में समर्थ नहीं सकें। चौथा उत्तर लेकिन है। चौथा उत्तर यह था कि उन्हें कोई भी उत्तर नहीं देना था। उन्हें चुप रह जाना था। वह फकीर जरूर बोलता। उन्हें मौन रह जाना था। उन्हें कोई बात नहीं कहनी थी। उ न्हें कोई जल्दी नहीं करनी थी। वे चुप रह जाते फकीर जरूर बोलता। क्योंकि केवल उन्हीं लोगों के सामने बोला जा सकता जो चुप हो। जो चुप नहीं है उनके सामने कुछ भी नहीं बोला जा स कता। तो यही प्रार्थना आज की संध्या मैं आपसे करूंगा कि इन तीन दिनों में आंतरिक रूप से थ ोड़ा सा चुप और मौन होकर जो मेरे हृदय में कुछ बातें हैं वह मैं आपसे कहूं तो सुनने की कृपा करना। आज की रात तो इतनी ही बात। चित्त को एक दर्पण बनाना है। ताकि परमात्मा पाया

जा सके। चित्त दर्पण बन सकता है। सरल है यह कीमिया सरल है यह राज चित्त को दर्पण ब ना लेने का। उसका मैथड, उसकी विधि उसकी हम बात करेंगे। मैं बात करूंगा तो जरूरी है कि आप चुप रहें। नहीं तो बात नहीं हो सकेगी। अगर मेरे ऊपर यह जुम्मा है कि मैं तीन दिन कु छ बातें आपसे करूं तो आप पर यह जुम्मा होगा कि तीन दिन आप चुप होंगे। नहीं तो फिजूल हो जाएगी बात। और जो उस फकीर ने किया वही फिर मुझे भी करना चाहिए। उतना कठोर मैं नहीं हूं उतना नहीं कर पाऊंगा। इसलिए बेफिक्र रहें लेकिन आप भी दया करेंगे। और कठोर न होंगे, और थोड़ा चुप मौन साइलन्स से बातों को सुनने की कोशिश करेंगे। तो शायद वे बातें आपके प्राणों तक पहुंच सकें।

जमीन में हम बीज बोते हैं। पथरीली जमीन में बीज भीतर नहीं पहुंच पाता। पत्थर रोक देते हैं। पत्थर न हो तो बीज भीतर पहुंच जाता है। जड़ें फैला लेता है। अंकुर फूट पड़ता है पौधा बन जाता है। जो मन बेचैन बातचीत में लगा रहता है अपने भीतर। पत्थर की तरह हो जाता है उ सके भीतर कोई बात नहीं पहुंचती। कोई बीज नहीं पहुंचता। फिर उसमें कोई अंकुर नहीं आता। लेकिन जो मन मौन होता है, शांत होता है। साइलन्स में सुनता है और समझता है। वह मन उस जमीन की भांति होता है जिसमें पत्थर नहीं है उसमें बीज भीतर प्रविष्ट हो जाता है। उसक ी जड़ें फैल जाती है उसमें अंकुर आ जाते हैं। वह जीवन बदल जाता है। बस इतनी ही थोड़ी सी बात आज की रात कहूंगा। मेरी बातों को इतने प्रेम और शांति से सुना। उसके लिए बहुत-बहु त अनुगृहीत हूं। सबके भीतर बैठे हुए परमात्मा को प्रणाम करता हूं। अंत में मेरे प्रणाम स्वीकार करें।

मेरे प्रिय र्आमन

बहुत से प्र—ध।न मेरे सामने हैं। उनमें से थोड़े से प्र—ध।नों पर अभी बात करूंगा। सबसे पहले एक मित्र ने पूछा है जीवन का लङय क्या है? यह प्र—ध।न तो बहुत सीधा-सादा मालूम पड़ता है। लेकिन शायद इससे जटिल और कोई प्र—ध।न नहीं है। और प्र—ध।न की जटिलता यह है कि इसका जो भी उत्तर होगा वह गलत होगा। इस प्र—ध।न का जो भी उत्तर होगा वह गलत होगा। ऐसा नहीं कि एक उत्तर गलत होगा और दूसरा सही हो जाएगा। इस प्र—ध।न के सभी उत्तर गलत होंगे। क्योंकि जीवन से बड़ी और कोई चीज नहीं है। जो लङय हो सकें। जीवन खुद अपना लङय है। जीवन से बड़ी और कोई बात नहीं है जिसके लिए जीवन साधन हो सकें। और जो सा य हो सकें। और सारी चीजों के तो सा य और साधन के संबंध हो सकते हैं। जीवन का नहीं, जीवन से बड़ा और कुछ भी नहीं है। जीवन ही अपनी पूर्णता में परर्मांमा है। जीवन ही, वह जो जीवंत ऊर्जा है हमारे भीतर। वह जो जीवन है पौधों में, पक्षियों में, आकाश में, तारों में, वह जो हम सबका जीवन है। वह सबका समग्रीभूत जीवन ही तो परर्मांमा है। यह पूछना कि जीवन का क्या लङय है, यही पूछना है कि परर्मांमा का क्या लङय है। यह बात वैसी ही है जैसे कोई पूछे प्रेम का क्या लङय है। जैसे कोई पूछे आनंद का क्या लङय है। आनंद का क्या लङय होगा, प्रेम का क्या लङय होगा, जीवन का क्या लङय होगा।

संसार में दो तरह की चीजें हैं। एक जो अपने आपमें घ्यर्थ होती है। उनकी सार्थकता इसमें होती है कि वह किसी सार्थक चीज तक पहुंचा दें। उन चीजों को साधन कहा जाता है। वह मींस होती है। एक बैलगाड़ी है उसका अपने में क्या लङय है। कुछ भी नहीं लेकिन उसमें बैठकर कहीं पहुंच सकते हैं। अगर पहुंचना लङय में हो तो बैलगाड़ी साधन बन सकती है। एक तलवार का अपने-आपमें क्या लङय है। लेकिन अगर लड़ना हो, लड़ना लङय हो तो तलवार साधन बन सकती है। तो जीवन में एक तो वे चीजें हैं। जो साधन है और कुछ करना हो तो उनके द्वारा किया जा सकता है और अगर न करना हो तो बिलकुल बेकार हो जाते हैं। जीवन में ऐसी चीजें भी हैं जो साधन नहीं है। वे त्त्वयं ही सा य है उनका मूंय इसमें नहीं है कि वह कहीं आपको पहुंचा दे। उनका मूंय खुद उनके भीतर है, खुद उनमें ही छिपा है। प्रेम ऐसा ही अनुभव है। प्रेम अपने आप में ही अपनी उपल ध है। उसे पा लेने के पीछे कुछ और नहीं पा लेने को बचता। और वह किसी और चीज का

साधन भी नहीं है। आनंद आनंद अपने आप में अपना सा य है। जीवन तो परम-सा य है त्त्वयं में उसके पार और उसके ऊपर कुछ भी नहीं है। जिसे पाने के लिए वह मा यम बन सकें। इसलिए यह पूछना कि जीवन का लङय क्या है। एकदम ही ऐसा प्र—ध।न पूछना है, कि इसके जो भी उत्तर दिए जाएंगे। वह सभी गलत होंगे, लेकिन हम पूछते हैं। और पूछना हमारा सब प्रयोजन है, अर्थपूर्ण है। हम इसलिए पूछते हैं क्योंकि हमें जीवन का पता ही नहीं कि वह क्या है। अगर हमें यह पता होता कि जीवन क्या है। तो हम कभी न पूछते कि उसका लङय क्या है। जिसने कभी प्रेम नहीं किया, वह पूछ सकता है कि प्रेम का लङय क्या है। और जिसने कभी आनंद नहीं जाना वह पूछ सकता है कि आनंद का लङय क्या है। लेकिन जिसने प्रेम को जाना है, उसके जानने में ही उसके लङय को भी पा लेगा। और नहीं पूछेगा कि प्रेम का लङय क्या है।

इसलिए जब कोई यह पूछता है कि जीवन का क्या लङय है? तो मैं जानता हूं, कि वह इसलिए पूछ रहा है कि उसे जीवन का ही पता नहीं। अगर जीवन का पता हो तो कोई उसका लङय नहीं पूछेगा। जीवन खुद है अपना लङय। लेकिन चूंकि हमें जीवन का ही पता नहीं है कि जीवन क्या है। इसलिए हम पूछते हैं कि जीवन का लङय क्या है। और जिसे हम जीवन जानते हैं वह बिलकुल जीवन नहीं है। हम किसे जीवन जानते हैं। ज`म ले लेने से मृंयु लेने तक का जो उप७म है उसे हम जीवन समझते हैं। वह जीवन नहीं है, वह धीरे-धीरे मरने का नाम है। उसका जीवन से क्या संबंध, बच्चा पैदा होने के बाद मरना शुरू हो जाता है। आप जिसको ज`मदिन कहते हैं वह मृंयु की घड़ी है। शुरुआत है मृंयु की। सत्तर वर्ष बाद वह मरेगा, सौ वर्ष बाद मरेगा, मरना आकत्त्मिक नहीं है कि अचानक आ जाता है, रोज-रोज हम मरते जाते हैं, धीमे-धीमे मरते जाते हैं। मरने की लंबी ७िया है लंबी प्रोसेस है। ज`म से लेकर मृंयु तक हम मरते हैं। रोज मरते जाते हैं थोड़ा-थोड़ा मरते जाते हैं। इसी मरने की लंबी ७िया को हम जीवन समझ लेते हैं। यह जो लंबी ग्रेजुअल डेथ है, यह जो धीमे-धीमे मरते जाना है रोज-रोज। इसी को हम समझ लेते है कि जीवन है। कल और आज में आप थोड़ा मर चुके हैं। नहीं तो आप बूढ़े नहीं हो सकते थे। कल आप और थोड़े मर जाएंगे। रोज हम मर रहे हैं, इस मरने को हम जीवन समझते हैं। तो प्र—ध।न खड़ा हो जाता है कि जीवन का लङय क्या है। जिसमें हम पैदा होते है ज`मते और मरते और रोज-रोज वही रिपीटीशन, वही दोहराना, वही सुबह उठाना, वही सांझ सो जाना, वही भोजन, वही कपड़े, वही झगड़े, वही संघर्ष, वही सब रोज-रोज इसका अर्थ क्या है, इसका प्रयोजन क्या है? तो हम पूछते हैं कि जीवन का लङय क्या है?

मैं आपसे पहली बात तो यह निवेदन कर दूं, कि यह जीवन ही नहीं है जिसको आप जीवन कह रहे हैं। और इसका आप कोई भी लङय बना लें। वह कोई भी लङय इसको जीवन न बना सकेगा। यह जीवन है ही नहीं, यह तो लंबी मरने की प्र७िया है। और इसीलिए तो इसे हम जीवन कहते हैं लेकिन न तो इसमें हम आनंद को जान पाते हैं, न हम शांति को जान पाते हैं, न हम प्रेम को जान पाते हैं, न हम प्रकाश को जान पाते हैं। कोई सौंदर्य का अनुभव जीवन में नहीं हो पाता। होगा कैसे? मरने के प्र७िया में होगा कैसे? मरने में होगा दुख, मरने में होगी पीड़ा, मरने में होगी चिंता, मरने में होगा अंधकार। रोज बढ़ता हुआ अंधकार जीवन को घेरता चला जाता है। इसीलिए तो लोग कहते हैं कि बचपन के दिन बड़े सुख के दिन थे। कैसी अजीब बात है, अगर जीवन विकसित हो रहा है तो बुढ़ापे के दिन सबसे यादा सुख के दिन होना चाहिए। बचपन के दिन क्यों? बचपन तो थी शुरुआत, बुढ़ापा है पूर्णता, तो दिन होने चाहिए सुख के बुढ़ापे के। अगर जीवन बड़ा है तो आनंद बढ़ना चाहिए। लेकिन हम सारे लोग तो गीत गाते हैं बचपन के कि बड़े खुशी के दिन थे। और हमारे कवि-कविताएं लिखते हैं कि बड़े सुख थे बचपन में। बड़ा आनंद था बालपन में नि—ध।चत ही यह इस बात का सबूत है। कि बचपन के बाद हम जिस यात्रा पर चल रहे हैं वह जीवन की यात्रा नहीं है, मृंयु की यात्रा है। इसलिए दुख बढ़ता जाता है। मृंयु की छाया बढ़ती जाती है, पीड़ा बढ़ती जाती है। और बचपन के दिन सुखद मालूम होते हैं। ठीक कोई आदमी जीएगा और जीवन को अनुभव करेगा। तो रोज-रोज उसका आनंद बढ़ता जाना चाहिए। विकास का अर्थ यही होगा तो यह विकास होता है जीवन में या पतन।

हम नीचे उतरते हैं या ऊपर जाते हैं। बचपन की सुखद त्त्मृति गलत जीवन का सबूत है। जीवन ठीक से नहीं जीया गया जाना नहीं गया पहचाना नहीं गया। लेकिन इसको हम मान लेते हैं, कि यह जीवन है। यह जीवन नहीं है। यह जीवन हो भी नहीं सकता। जीवन की हमें गंध भी नहीं है। जीवन के त्त्वरों का हमें कोई बोध भी नहीं है कि कहां जीवन का संगीत छिपा है।

बुद्ध के पास एक बूढ़ा भिक्षु आया। बुद्ध ने उस भिक्षु को पूछा तेरी उम्र क्या है? उस भिक्षु ने कहा, चार वर्ष। वह बूढ़ा था, बुद्ध और उनके आस-पास के भिक्षु हैरान हुए। सोचा बुद्ध ने शायद मेरे समझने में हो गई है भूल। पूछा फिर मेरे मित्र तेरी उम्र क्या है? उस बूढ़े ने कहा, मैंने निवेदन किया चार वर्ष। बुद्ध ने कहा बड़ी हैरानी में डाल दिया तुमने। प्रतीत होते हो कोई सत्तर वर्ष तु हारी उम्र होगी कहते हो चार वर्ष किस हिसाब से गणना करते हो। उस बूढ़े ने कहा, चार वर्ष के पहले जो था वह जीवन नहीं था। उसकी मैं गिनती नहीं करता। इधर चार वषाध से जीवन की सुगंध मिलनी शुरू हुई। इधर चार वषाध से चित्त हुआ शांत। इधर चार वषाध से नि वचार हुआ। इधर चार वषाध से भीतर झांका, तो उसकी प्रतीति हुई जो जीवन है। बाहर तो थी मृंयु, जीवन था भीतर। और मैं बाहर ही देखता रहा, तो मैंने मृंयु को जाना था चार वर्ष पहले। उस उम्र को कैसे जीवन की उम्र बताऊं। वह मेरी गणना में नहीं आती।

बुद्ध ने अपने भिक्षुओं से कहा, भिक्षुओं सुन रखो मन में। इस आदमी ने जिंदगी को नापने की नई बात बताई है। और आज से मेरे भिक्षुओं की उम्र उसी दिन से नापी जाए। जिस दिन से उनको शांति मिले, वह जीवन को अनुभव करें। उसके पहले कि उम्र को जोड़ने की अब कोई जरूरत नहीं। कौन सी बात भीतर दिखाई होगी उस बूढ़े भिक्षु को क्या दर्शन हुआ होगा। कौन है? क्या है भीतर? क्या दर्शन हुआ होगा? कोई उसे आंमा कहें, परमांमा कहें, उचित तो यही है कि हम उसे जीवन कहें। जीवन है भीतर, जीवंत कोई धारा, कोई चेतना भीतर है। और उसके ऊपर एक खोल है शरीर की, शरीर मरण-धर्मा है। शरीर को जो जीवन मान लेता है, वह मृंयु को ही जीवन समझकर जी लेता है। और तब होता है बहुत दुख और बहुत पीड़ा। और इस पीड़ा और दुख में वह पूछने लगता है कि क्या है लङय? क्योंकि इस दुख, पीड़ा में कोई लङय तो दिखाई पड़ता नहीं। इस दुख पीड़ा में इस रोज के दैनंदिन अंधकार में कोई अर्थ, कोई अभिप्राय, कोई मीनिंग तो दिखाई पड़ता नहीं। तो मन में प्र—ध।न उठने लगता है, क्या है इस जीवन का अर्थ? ठीक है पूछने वाला, लेकिन उसको निवेदन कर दे। पहली बात, यह जीवन ही नहीं है जिसका वह अर्थ पूछ रहा है। रह गया दूसरा जीवन उसे हम जानते नहीं है। क्योंकि जो उसे जान लेता है, वह अर्थ नहीं पूछता। क्योंकि उसे पा लेना ही उसका अर्थ है। वह त्त्वयं सा य है उसके पार फिर पा लेने को कुछ भी नहीं है। उसे पा लेना है, उस जीवन को जान लेना, उस जीवन के साथ एक हो जाना। सब कुछ पा लेना है। क्योंकि उसके बाद मन में कोई अभाव नहीं रह जाता। कोई कामना नहीं रह जाती, कोई मांग नहीं रह जाती। मन सब भांति शांत और तृषत और संतुह्रट हो जाता है। वह जो परम विश्राम और परम संतुह्टि है। वही उस जीवन को पाने से और जानने से मिल जाती है। तो जीवन का लङय है, जीवन को पा लेना।

जीवन का लङय है, जीवन को पा लेना। हम जीवित नहीं है। हम करीब-करीब मृत है और हम जो भी करते हैं, जो भी श्रम करते हैं, जो भी मेहनत करते हैं। इस जीवन को खड़ा करने की जो कि झूठा है। जो कि सचा नहीं, उस सारी मेहनत और श्रम का सिवाय इसके कोई परिणाम नहीं होता कि हम रोज-रोज अपनी ही मेहनत से अपनी ही कब्र के करीब पहुंचते चले जाते हैं।

एक गांव के बाहर एक फकीर का झोपड़ा था। कुछ यात्री वहां से आए, और उ होंने उस फकीर से पूछा गांव का रात्त्ता किधर है? बत्त्ती कहां है? उस फकीर ने कहा, बत्त्ती सच में ही बत्त्ती जाना चाहते हो या कि मरघट। उन लोगों ने कहा, कैसे अजीब आदमी हो। हम कह रहे हैं कि हम बत्त्ती जाना चाहते हैं। इस बात को पूछने की क्या जरूरत है कि मरघट जाना चाहते हो? उसने कहा, मैं ठीक से पूछ लूं ताकि ठीक जगह बता सकूं। क्योंकि कई लोग ऐसी भूल में है, कई लोग ऐसी भूल में है कि वे मरघट को बत्त्ती समझते हैं और बत्त्ती को मरघट। इसलिए मैंने पूछा, कहीं तुम भी तो उसी भूल में नहीं हो। उन लोगों ने सोचा होगा किसी पागल फकीर से मिलना हो गया है। लेकिन फिर भी कोई और वहां नहीं था। रात्त्ता उसी से पूछना पड़ा। उसने कहा, बाएं तरफ चले जाओ। और देखो भूल कर भी दाएं तरफ मत जाना। दाएं तरफ मरघट बाएं तरफ बत्त्ती। वे लोग बाई तरफ गए, तीन मील चलने के बाद मरघट में पहुंच गए। वे बहुत हैरान और परेशान हुए। उ होंने कहा,

पहले ही शक हुआ था उस आदमी पर। अजीब पागल है, मरघट में पहुंचा दिया। वापिस लौटे, बहुत गुस्से में थे वह फकीर वहां बैठा था। उससे उन्होंने कहा कि तुम पागल मालूम होते हैं। हम बस्ती जाना चाहते थे, तुमने मरघट भेज दिया। वह फकीर बोला, बहुत दिनों बाद मुझे खुद ही यह अनुभव हुआ है। जिसको तुम बस्ती कहते हो वह तो रोज उजड़ती है। उसमें तो कोई रोज मरता है उसको मैं बस्ती कैसे कहूं। लेकिन जहां तक मरघट का सवाल है। वहां जो लोग बसे हैं वह कभी भी वहां से जाते नहीं। वही बसे है, तो मैं मरघट को बस्ती कहता हूं। और बस्ती को मरघट कहता हूं क्योंकि वहां तो टिकटें लगी हुई है मरने वालों की। एक आज मरेगा, दूसरा कल, परसों तीसरा, रोज वहां कोई मरेगा। तो जहां रोज कोई मरता हो, उसको कैसे बस्ती कहो। मरघट से मैंने आज तक किसी को उजड़ते नहीं देखा, जाते नहीं देखा, मरघट से किसी को मरते नहीं देखा। जो मरघट में बस गया, बस गया। सदा के लिए हमेशा के लिए। तो उसको मैं बस्ती कहता हूं।

शायद ही उनकी समझ में आई हो बात कि वह फकीर क्या कहता था। हो सकता है आपकी समझ में आ जाए कि वह क्या कहता था। बहुत मु—ध।कल से यह बात समझ में आती है। लेकिन यह बात सच है। जिसको हम बस्ती कहते हैं, वह क्या है? रोज-रोज मरघट में तो बदल जाती है हमारी बस्ती। जहां हम खड़े हैं वहां कितने लोग नहीं मर चुके हैं। असल में हम खड़े है इसलिए हो सकें है कि बहुत लोग मर गए है, नहीं तो हम खड़े भी नहीं हो सकते थे। हजारों लाशों पर एक-एक आदमी खड़ा है। अपने बाप की लाश पर बेटा खड़ा है। अपनी मां की लाश पर उसकी पुत्री खड़ी है। हम सब अपने मां-बाप की लाशों पर खड़े हैं। वे न मरें तो हम जिंदा नहीं रह सकते। वे मरते हैं, उजड़ते हैं, जगह खाली होती है। हम बसते हैं, और हम बस भी नहीं पाते कि हमारे ब□चे बसने को आ जाते हैं। और हम विदा हो जाते हैं। ऐसा बदलता हुआ मरघट है। जिसको हम बस्ती कहते हैं, और ऐसी ही बदलती और मरती हुई हमारी जिंदगी है जिसको हम जीवन कहते हैं। वह भी जीवन नहीं है। वहां भी रोज-रोज हमारे भीतर मरता जाता है कुछ वैज्ञानिक कहते हैं। शरीर में, सैकड़ों कोहठ हैं, सैकड़ा सेल है, वे रोज मर रहे हैं। वे मर-मर के बाहर निकल रहे हैं। सात साल में पूरा शरीर मर कर बदल जाता है। दूसरा शरीर आ जाता है, सात साल में आपके शरीर में कुछ भी नहीं बचता जो पुराना हो। सब मर जाता है, नई, नई चीजें उसका स्थान ले लेती है। आप भी एक बस्ती की तरह है, जिसमें लोग मर रहे हैं। और नए आ रहे हैं, करोड़ों कीटाणुओं से मिलकर आपका शरीर बना है। उस पर लोग मरते जा रहे हैं। नए कीटाणु आते जा रहे हैं, मुर्दा चीजें शरीर के बाहर निकल रही है। आपको खयाल भी न होगा, आप बाल को काटते हैं। दर्द क्यों नहीं होता, हाथ को काटिए दर्द होता है, नाखून को काटते हैं दर्द क्यों नहीं होता। नाखून शरीर का मरा हुआ हिस्सा है, बाल मरे हुए हिस्से हैं। मरे हुए सेल है वे निकल रहे हैं, इसलिए उनको काटने से कोई तकलीफ नहीं होती। वे मरे हुए हिस्से हैं, वे निकलते जा रहे हैं शरीर के बाहर उनकी जगह नए हिस्से जगह लेते जा रहे हैं। शरीर भी खुद एक बस्ती है जिसमें मरघट बना हुआ है। चौबीस घंटे कुछ चीज मर रही है। नई चीज बन रही है। बड़ी बस्ती भी एक मरघट है, छोटा शरीर भी एक मरघट है। और आपके चित्त में क्या है? कल जो विचार था वह आज नहीं होगा। परसों जो खयाल थे, वह आज नहीं है। मर गए वे नए खयाल आ गए। बचपन में जो सोचा था, वह आज है कहां गए वे खयाल, कहां गई वे कामनाएं, कहां गए वे विचार। जवानी आते-आते सब बदल गया, दूर है जवानी तो, आज रात जो सोचा है वह सुबह साथ होता है।

एक आदमी सांझ को तय करता है। कल सुबह चार बजे उठेंगे, और चार बजे वही आदमी सोचता है, क्या जरूरत है फिर देखेंगे सोये रहो। कहां गया वह विचार जिसने तय किया था, कि चार बजे सुबह उठेंगे। और सुबह उठकर वह सोचता है फिर पछताता है कि कैसी बुरी बात मैंने की कि मैं आज नहीं उठा कल जरूर उठूंगा। और रात फिर सोता है और फिर सुबह चार बज जाते हैं। और फिर वह सोचता है कि रहने भी दो आज ऐसी क्या जेंदी है। ऐसी क्या जरूरत पड़ी है, नींद बहुत गहरी है कल उठेंगे। विचार प्रतिक्षण मरते हैं और बदलते हैं। मन बदलता है, शरीर बदलता है और बदलाहट तभी होती है जब कुछ मरता हो और नया आता हो नहीं तो कोई बदलाहट नहीं होती। बदलाहट की प्रोसेस, बदलाहट की प्र७िया, मृंयु की प्र७िया है, डेथ की प्रोसेस है। वही चीज बदलती है जो मरती है। जो चीज नहीं मरती वह बदल नहीं सकती। हम तो रोज बदल रहे हैं, शरीर बदल रहा है, मन बदल रहा है। इसमें कोई भी जीवन नहीं है। जहां-जहां बदलाहट है वहां-वहां जीवन नहीं है। लेकिन आपको क्या पता है कि आपके भीतर कोई ऐसा बिंदु भी है जो नहीं बदलता। जो वही है जो है अगर उसका

पता चल जाए तो जानना कि जीवन का पता चला उसके पहले जीवन का कोई पता नहीं। बाकी सब मृंयु है, भीतर अगर कोई ऐसा नित्ति शा—ध।वत, कुछ ऐसा जो सदा वही है जो है। जिसमें कोई बदलाहट नहीं, कोई परिवर्तन नहीं। ऐसा कोई बिंदु अगर उपल ध हो जाए तो जानना कि उस दिन से जीवन की शुरुआत हुई। उसके पहले तो सब मृंयु की सारी प्र७िया है। इस मृंयु की प्र७िया में, इस मरने की धारा में हम जो भी करेंगे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप क्या करते हैं। आप दूकान करते हैं, नौकरी करते हैं, घर बसाते हैं, कि पंनी और ब चों को पालते हैं। या कि घर-द्वार छोड़कर साधु हो जाते हैं, सं यासी हो जाते हैं। या कि जीवन के सामा य ७म में जीते हैं या जीवन को छोड़कर उलटे बहने लगते हैं जीवन के विरोध में। सं यास में, संसार के विरोध में चलने लगते हैं। अधा मक है, कि धा मक, मंदिर जाते हैं या नहीं, आत्तिक है या नात्तिक, गीता पढ़ते हैं या नहीं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। जो भी आप करेंगे इस जीवन की धारा में वह सब आपको मृंयु में ले जाएगा। चाहे मंदिर जाएं, चाहे न जाएं, जो भी करेंगे इस जीवन की मरणशील धारा में वह सभी आपको मृंयु में ले जाएगा। इसमें कोई फर्क पड़ने वाला नहीं है। क्योंकि जो भी मनुह्य कर सकता है, वह सब मरण-धर्मा होगा। जो भी हम कर सकते हैं वह सब मृंयु में ले जाएगा।

एक कहानी आपसे कहूं, एक राजा ने एक रात सपना देखा। देखा त्त्वषन में कोई अंधेरी छाया उसके कंधे पर हाथ रखे खड़ी है। उसने पूछा कौन हो तुम? उस छाया ने कहा, मैं हूं तु हारी मृंयु। और यह सूचना करने आ गई हूं, कि आज सांझ सूरज ढलने के साथ-साथ ठीक जगह पर मुझे उपल ध हो जाना। मैं तु हें लेने आ रही हूं। मौत की खबर सुनकर किसकी नींद न टूट जाएगी। उस राजा की नींद भी टूट गई। आधी रात थी, घबड़ा उठा क्या अर्थ है इस त्त्वषन का। राजधानी में बड़े-बड़े त्त्वषन वि—ध।लेषक थे, योतिषी थे, ज्ञानी और पंडित थे, शात्त्रों के जानने वाले घ्याड्डयाकार थे। सबको खबर भेज दी गई कि शीघ्र चले आओ। आधी रात उठा लिए गए सारे ज्ञानी राजधानी के, आए, पूछा राजा से क्या अड़चन आ गई। राजा ने कहा, ऐसा-ऐसा देखा है त्त्वषन मृंयु कहती हुई दिखाई पड़ी है। आज सांझ सूरज डूबने के साथ-साथ ठीक जगह मिल जाना। लेने आ रही हूं, क्या करूं, क्या है त्त्वषन का इस अर्थ? वे पंडित अपनी किताबें साथ ले आए थे। जैसा कि पंडित सदा ही करते हैं, क्योंकि उनकी आंमा अपने में नहीं होती, अपनी किताबों में होती है। वे अपने शात्त्र बांधकर आ गए थे। उ होंने अपने शात्त्र खोल लिए और अर्थ खोजने लगे। रात बीतने लगी, किसी ने एक अर्थ बताया तो दूसरे पंडित ने उसका खंडन किया जैसे कि पंडितों की आदत हैं। जैसे कुत्तों की आदत होती है, एक-दूसरे पर भौंकने की। वैसे पंडितों की भी होती है। दस पंडित इक े रखना, एक उप व करवा लेना है। एक उप व हो जाए, झगड़ा हो जाए, हंया हो जाए, कुछ भी हो सकता है। वे सब एक-दूसरे का खंडन करने लगे। एक-दूसरे के शात्त्र की निंदा करने लगे। एक-दूसरे की घ्याड्डया को गलत बताने लगे। राजा बड़ा परेशान हो उठा। सांझ बहुत जेंदी हो जाएगी, और पंडितों की घ्याड्डयाओं का कोई अंत न दिखाई पड़ता था। इसमें से कोई निह्पत्ति, कोई निह्कर्ष निकलता हुआ दिखाई न पड़ता था। आखिर वह घबड़ाया सुबह हो गया, सूरज उगने लगा। और पंडितों का विवाद बढ़ता जाता था, जब उ होंने बात शुरू की थी तब तक वह साफ भी था अब तो वह भी साफ न रहा था। और उलझ गया था मामला, क्या था अर्थ, कुछ तय करना मु—ध।कल था उनके श दों में और सिद्धांतों में बात और खो गई। राजा का एक वृद्ध नौकर था उसने उसके कान में कहा, महाराज! इन पंडितों को कयामत तक भी निह्कर्ष मिलेगा इसकी कोई आशा नहीं। दुनिया का अंत आ जाएगा यह निह्कर्ष न निकाल पाएंगे। आज तक पंडित कोई निह्कर्ष निकाल पाया है। आज तक वह किसी बात पर वह सहमत हो पाया है। आज तक कोई नतीजा मिल सका है उनकी चर्चाओं और विवादों से, लेकिन इनके विवाद तो लंबे चलेंगे। सांझ जेंदी हो जाएगी, देर नहीं है, सूरज उग आया। और जो सूरज उग आया है उसके डूबने में देर कितनी लगेगी। क्योंकि जो ऊग आया है, वह डूब ही जाएगा। असल में उगने में ही डूबने शुरू हो गया है। सूरज ऊपर उठ रहा है। तो अ छा होगा यह इ हें घ्याड्डया करने दे। आपके पास कोई तेज घोड़ा हो तो लेकर भागने के लिए इस घर से जितनी दूर हो सके निकल जाएं। मौत ने संकेत त्पह्ट दिया है। इस घर में जहां मौत की छाया पड़ी हो और जहां मौत ने आकर कुछ सूचना दी हो कंधे पर रखकर वहां रुकना एक क्षण भी उचित नहीं है। राजा को बात समझ में पड़ी, पंडित अपना विवाद करते रहे, राजा भागा उसके पास तेज घोड़ा था। तेज घोड़े पर बैठकर उसने यात्रा शुरू की। भागा वह प्राणों को छोड़कर, अपनी उस पंनी को जिससे उसने बार-बार कहा था। तेरे बिना एक क्षण

भी जीवन असंभव है। उसकी भी उसे याद न आई, कि उससे विदा मांग लें। मौत के समय किसको किसकी याद रह जाती है। और वे वचन जो हमने मौत के अनजाने में दिए हों। उन वचनों का किसको त्मरण रह जाता है। जिन मित्रों से उसने कहा था, तुम मेरे प्राणों के प्राण हो। और तुम हो इसलिए मेरी जिंदगी में आनंद है। और तु हें छोड़कर मैं एक क्षण भी न जी सकूंगा। उनकी भी कोई याद न आई। उनसे भी विदा लेने का कोई खयाल न पैदा हुआ।

मौत सामने हो तो कौन मित्र रह जाता है, भागा। उस दिन न उसे षयास लगी और न भूख, न उसने पानी पीने को घोड़ा रोका और न भोजन करने को। वह भोजन लाना भी भूल गया था। कुएं तो बहुत पड़े मार्ग पर, लेकिन उसे षयास का खयाल ही न था। और जिसे षयास ही न हो उसे कुएं से क्या मतलब। मौत थी सामने, मौत थी पीछे, मौत थी आगे, मौत थी ऊपर, मौत थी सब तरफ और निकल जाना था। जरूर था तेज उसके पास घोड़ा इसलिए वि—ध।वास बड़ा था कि निकल जाएगा। कोई साधारण आदमी का घोड़ा नहीं था। कोई ख चर नहीं था, राजा का घोड़ा था। राजा बड़ा था उसके पास घोड़ा भी बड़ा था। सोचा कि मेरा तेज घोड़ा अगर नहीं ले जा सकेगा। तो कौन ले जाएगा इसलिए निि—ध।चत था। हि मत से डटा था घोड़े पर, सांझ होते-होते वह सैकड़ों मील दूर निकल गया। सूरज ढलने को आ गया था। जो ऊगता है वह ढलता भी है, उस दिन भी सूरज ढलता ही, ढलेगा ही, ऐसा तो कोई दिन होता नहीं कि सूरज न ढले तो उस दिन भी ढला। राजा ने घोड़ा एक वृक्ष से बांधा। एक बगीचे में एक गांव के बाहर सूरज की आखिरी किरण नीचे डूबने लगी। वह घोड़ा बांध भी नहीं पाया था कि उसे अहसास हुआ कि कोई उसके कंधे पर हाथ रखे खड़ा है। पीछे लौटकर देखा वही छाया, वही सपना, वही रात की मौत खड़ी थी। वह तो घबड़ाया उसके तो प्राण कंप गए। क्या इतनी दौड़-धूप घ्यर्थ हो गई। क्या यह दिन-भर का परिश्रम और दिन-भर की भूख-षयास सब उसे याद आ गई। और उसने कहा, तुम कौन हो? मौत ने कहा, सुबह तो मैं मिली थी। इतनी जेंदी भूल गए। रात ही तो खबर दी थी मैंने और खबर इसीलिए दी थी कि मैं खुद डरी हुई थी कि तुम इस बगीचे में इस झाड़ के नीचे तक आ सकोगे कि नहीं, यहां तु हारे मरने का समय और त्थान तय है। घोड़ा तु हारा तेज है उसे मैं ध यवाद देती हूं। ठीक वक्त पर तु हें ठीक जगह ले आया है। मैं खुद घबड़ाई हुई थी कि कैसे होगा यह? तुम हो इतने दूर, कैसे आ पाओगे इस जगह! लेकिन घोड़ा, सच राजा घोड़ा तु हारा तेज है। एक राजा का ही घोड़ा है ठीक वक्त पर, ठीक जगह ले आया। ध यवाद है तु हारे घोड़े का।

जिससे दिन-भर भागा था, सांझ उससे मिलना हो गया। जिससे भागा था उससे ही मिलना हो गया और भागना बन गया मा यम पहुंचने का वहां, जहां से बचना था। यह कहानी कोई एक राजा की नहीं है, सभी की कहानी है। बात दूसरी है किसी के पास थोड़ा कमजोर घोड़ा है, किसी के पास थोड़ा तेज, कोई जरा धीमे दौड़ रहा है, कोई जरा तेजी से दौड़ रहा है, किसी की दौड़ उदयपुर तक है, किसी की दौड़ दिंली तक है, किसी की ओर आगे तक है, अपने-अपने घोड़ें हैं, अपनी-अपनी दौड़ है। लेकिन एक बात तय है; और बड़े मजे की बात यह है कि सब घोड़ें ठीक वक्त पर ठीक जगह पहुंचा देते हैं। और मौत ने सिर्फ राजा को ध यवाद दिया शिहृटाचारवश, क्योंकि आज तक किसी घोड़े ने कभी किसी को नहीं चुकाया। सब घोड़े ठीक वक्त पर ठीक जगह पहुंचा देते हैं। चाहे मौत सूचना दे और चाहे न दे। हमारी सारी यात्राएं, जिसमें हम मौत और दुख से बचने में ही संलँन रहते हैं। हमारे जीवन का सारा उप७म, हमारे जीवन की सारी चेहृटा क्या है? दुख से बचने की चेहृटा है, मृंयु से बचने की चेहृटा है, सदा बने रहने की चेहृटा है, जीवन को पकड़े रहने की चेहृटा है। सारे जीवन उप७म क्या है हमारा, हमारी आकांक्षा क्या है? दुख से बच जाएं; मृंयु से बच जाएं; बुढ़ापे से बचे जाएं। जीवन बना रहें सदा और सदा जीवन बना रहें। यहीं हमारी आकांक्षा है, लेकिन होता इससे उलटा है। पहुंचते हैं दुख में, पहुंचते है बुढ़ापे में, पहुंचते हैं मृंयु में। यह हमारी आकांक्षा, आकांक्षा ही रह जाती है। जो फलित होता है वह यह कि उस दरङ्गुत के नीचे हम पहुंच जाते हैं, जहां काली छाया कंधे पर हाथ रख देती हैं। जीवन भर की खोज का अगर यह परिणाम है और अगर जीवन भर की यह निहृपत्ति है तो क्या इसे हम जीवन कहें? जिस जीवन में अंत में मृंयु के फूल लग जाते हों क्या उसे हम जीवन कहें।

बीज हमने बोएं हों अमृत के और फल लगते हों मृंयु के, तो क्या यह खयाल नहीं आता कि वे बीज मृंयु के ही रहे होंगे, अमृत के न रहे होंगे। आम के बीज हम बोएं और कड़वे विषाक्त फल लग जाएं। तो क्या यह खयाल न आएगा कि हमारे

बीज ही गलत रहे होंगे। क्योंकि जो फल में प्रकट हुआ है वह अगर बीज में मौजूद न था तो आएगा कहां से। वे बीज ही कड़वे रहें होंगे, वे बीज ही आम के न रहें होंगे, वे नीम के ही रहे होंगे और हमने बीज को समझने में ही भूल की होगी। फिर तो बीज जो होता है वहीं वृक्ष बनता है, वही फल लगते हैं। तो जब जीवन के अंत में मृंयु के फल लगते हैं जो जिसे हमने जीवन कहा होगा वहीं भूल हो गई। वह जीवन न रहा होगा, वे बीज मृंयु के ही रहे होंगे।

ज˜म जीवन की शुरुआत नहीं, मृंयु की शुरुआत है। ज˜म जीवन का प्रारंभ नहीं, मृंयु का प्रारंभ है। ज˜म बीज नहीं है अमृत का, मृंयु का ही बीज है। लेकिन ज˜म को हम समझ लेते हैं जीवन का प्रारंभ और तब सारी भूल हो जाती है।

तो आज की सं   या में आपसे निवेदन करूं! ज˜म को जीवन मत समझ लेना, ज˜म जीवन नहीं है और न ही ज˜म और मृंयु के बीच जो सिलसिला है वह जीवन है। यह त्त्मरण आ जाए कि यह जीवन नहीं है तो आंखें उस तरफ उठाई जा सकती हैं जो कि जीवन है। उसको खोजा जा सकता है—त्त्वयं में में जो कि जीवन है। लेकिन जो इसे ही जीवन समझ लेंगे, वे कैसे खोज पाएंगे तो यह भ्रम टूट जाना चाहिए, यह इेंयुसन टूट जाना चाहिए कि यह जीवन है। अगर यह टूट जाए तो आज ही इसी क्षण भी उस तरफ आंख जा सकती है। वह हमारे भीतर मौजूद है, हमारे भीतर कुछ मौजूद है जिसका कोई ज˜म नहीं है और कोई मृंयु नहीं है। लेकिन मेरे कहने से वह मौजूद नहीं हो जाएगा, उपनिषदों के कहने से मौजूद नहीं हो जाएगा, गीता लाख चिंलाए तो मौजूद नहीं हो जाएगा, दुनिया भर के शिक्षक समझाएं तो मौजूद नहीं हो जाएगा, मौजूद है कुछ लेकिन वह आप ही आंख उठाएंगे तो ही मौजूद हो सकता है, नहीं तो मौजूद नहीं हो सकता। वह आपकी आंखों की प्रतीक्षा कर रहा है कि आप देखें, तो वह मौजूद हो जाएगा वह है मौजूद। आपकी आंख देखने को तैयार होनी चाहिए, तो उसे देखते ही आपको पहली दफा जीवन का पता चलेगा और जिस दिन आपको जीवन का पता चल जाएगा, उसी दिन, उसी क्षण, उसी के साथ आपका यह खयाल मिट जाएगा कि जीवन का लङ्य क्या है? जीवन को पा लेना, जीवन के लङ्य को भी पा लेना। वह अपना लङ्य त्त्वयं जीवन के पार ऊपर कुछ भी नहीं, जीवन के आगे कुछ भी नहीं, जीवन खुद ही वह सागर अनंत और असीम; जिसको कोई परर्मामा कहें तो कहें; कोई मोक्ष कहें तो कहें; कोई निर्वाण कहे तो कहे नाम कोई और दे तो कहे, लेकिन जीवन सीधा-सदा सरल सा नाम है, बाकी सब नाम झगड़े के हैं। आत्त्तिक और नात्त्तिक का झगड़ा खड़ा हो जाता है कि ई—ध।वर है या नहीं। लेकिन जीवन तो है ः कोई आत्त्तिक नात्त्तिक का झगड़ा भी नहीं है। जीवन है ः आज तक किसी ने शक नहीं किया कि जीवन नहीं है। जीवन नि ववाद अनुभव है कि जीवन है निर्वाद, निर्पवाद कोई ने कभी अपवाद में नहीं कहा कि जीवन नहीं। जीवन है, और इस जीवन की हम सबको तलाश है लेकिन कठिनाई, सारी कठिनाई एक जगह रुक जाती है। जिसे हम जीवन समझ लेते हैं वह जीवन नहीं और तब सारी उलझन हो जाती है। इसलिए पहली तो बात इस संबंध में यही जानने की है कि यह जो भ्रामक जिसे हम जीवन कहते हैं उसे जानना होगा यह जीवन नहीं है। बड़ी उदासी होगी तब तो, बड़ी चिंता सी मालूम होगी कि अगर यह जीवन नहीं तो फिर क्या? फिर तो हम खाली छूट गए अधर में, फिर तो कोई रात्त्ता न रहा, यही तो हम जीवन जानते थे ः यही धन कमाने को; यश कमाने को; बड़ा मकान बनाने को; मैं इनकी निंदा नहीं कर रहा हूं। मेरे मन में किसी चीज की कोई निंदा नहीं है। लेकिन इनको ही जीवन समझने को मैं गलती कह रहा हूं, जरूर मकान बनाएं, जरूर खोज करें जीवन की, जरूर यह सब जो चल रहा है, लेकिन इसे जीवन न समझ लें। तो बस अगर यह जीवन समझ में न आए तो आपके भीतर एक खोज जारी रहेगी उसकी खोजने की जो कि जीवन है। इसे हम जीवन समझ लेते हैं इसलिए वह खोज बंद हो जाती है। अगर यह भ्रम टूट जाए कि जीवन है तो उसकी खोज शुरू होगी। और वह खोज कैसे शुरू होगी कैसे और क्या हो सकता है उसकी ही हम चर्चा कर रहे हैं।

इधर आने वाले दो दिनों में उसकी ही बात होगी कि वह जीवन कैसे जाना जा सकता है। इस प्र—ध।न के उत्तर में फिर से मैं दोहरा दूं जीवन का कोई लङ्य नहीं है, जीवन के सिवाय। जीवन की पूर्णतः, जीवन का पूरा अनुभव, जीवन का पूरा आनंद, जीवन का पूरा सौंदर्य विकसित हो जाएं। जैसे कोई फूल खिल जाए पूरा खिल जाए तो लङ्य पूरा हुआ। वैसे ही जीवन पूरा खिल जाए तो लङ्य पूरा हुआ, उसके पार और कोई लङ्य नहीं। और कोई लङ्य नहीं है, इस जीवन की, इस पूर्णतः को खिलावट के लिए। इसके पूरे फूल के खिल जाने के लिए, क्या किया जाए? उसकी तो हम बात करेंगे। एक बात तो यह की

ही जाए जो मैंने कही कि खोज जारी रखी जाए कि जिसे हम जीवन समझ रहे हैं कहीं वह झूठा सिक्का तो नहीं है। क्योंकि जो लोग झूठे सिक्कों को असली समझ लेते हैं उनके असली सिक्के की खोज बंद हो जाती है वे झूठे को ही ढोते रहते हैं।
एक बार ऐसा हुआ, दो साधु एक घने जंगल से निकलते थे। गुरु था और उसका शिह्रय था, वृद्ध साधु था और एक युवा साधु था। वृद्ध साधु ने अपने कंधे पर एक झोली टांग रखी थी। कोई वजनी चीज उसमें लटकी हुई मालूम पड़ती थी। जंगल आ गया और रात उतरने लगी, अंधेरी रात, निर्जन वन , बीहड़ रात्ता कोई मार्ग पर दिखाई न पड़ें। उस वृद्ध गुरु ने अपने युवा शिह्रय से पूछा, बेटे! जंगल में कोई डर तो नहीं है, कोई भय तो नहीं। उस युवक को बड़ी हैरानी हुई, आज तक कभी उसके गुरु ने यह न पूछा था कि कोई भय तो नहीं, संयासी को भय कैसा। और जंगल में भी भय कैसा, मृंयु भी आ जाए तो भय कैसा, फिअर कैसा। क्या बात है , चिंतित हुआ, उसने कहा कि क्या भय की बात है, कोई भय की बात तो नहीं। तो और आगे बढ़े, और रात्ता बीहड़ होता गया, रात और उतरती गई, और सन्नाटा, और सुनसान, वह गुरु ठिठक गया और उसने कहा कि कुछ पता लगाया तुमने पूछ लिया था। कोई भय तो नहीं है। युवक और हैरान हुआ, बहुत परेशान हुआ, फिर वे एक कुए के किनारे थोड़ी देर को हाथ-मुंह धोने के लिए रुकें, पानी पीने को रुकें। झोला निकालकर उसके वृद्ध गुरु ने अपने शिह्रय को दिया, उसे थोड़ा शक तो होने लगा था कि झोले में जरूर कुछ होना चाहिए, नहीं तो भय कैसा। झोले में हाथ डाला, देखा एक सोने की इृध!ट भीतर है। वह समझ गया भय कहां है, उसने उस इृध!ट को गुरु जब तक पानी पीता था फेंक दिया। उसकी जगह रख दिया उसी वजन के पंथर को। गुरु ने पानी पीया, झोला जेंदी से लेकर कंधे पर टांगा, टटोलकर देखा, इृध!ट थी। आगे चल पड़ा।
थोड़ी देर बाद, घोड़ों की टाप की कहीं पास में आवाज आने लगी तो उसने पूछा कि बेटे, कोई भय तो नहीं हैं यहां। उस लड़के ने कहा, आप बिलकुल निर्भय हो जाएं, भय को मैं पीछे फेंक आया हूं। वह तो एकदम घबड़ा गया उसने जेंदी से झोला देखा, इृध!ट निकाली पंथर रखा हुआ था वहां। लेकिन इतनी देर यह पंथर भी भय देता रहा था। वह बूढ़ा हंसने लगा, उसने कहा, हद हो गई। इतनी देर मैं इस पंथर को ढो रहा था और यह मुझे भय भी दे रहा था। और मैं भयभीत था और कंपित था। तूने ठीक कहा कि भय को तू पीछे छोड़ आया, पर पागल तूने उसी वक्त क्यों न बता दिया। मैं इतनी देर घ्यर्थ ही इसको ढोता रहा और भयभीत रहा। यह इतनी देर का भय बिलकुल घ्यर्थ था, उसका युवा शिह्रय बोला, अगर ठीक से समझें, तो पहले भी जो भय था वह भी घ्यर्थ था। वजन वह भी था, वजन यह भी है, लेकिन वह सोना दिखाई पड़ता था। इसलिए आप सोचते हैं वह सार्थक था और यह इृध!ट दिखाई पड़ती है इसलिए सोचते हैं घ्यर्थ है। लेकिन अगर इृध!ट अभी भी दिखाई न पड़ती तो यह पूरी रात भय से बीतती और कौन जाने जिसे आपने सोना समझा, वह भी सोना या मिमी। वह समझने पर सारा निर्भर है। एक झूठी इृध!ट, भय दे सकती है, एक झूठी जिंदगी भय दे सकती है। और एक झूठी इृध!ट को हम स हाल के ढो सकते हैं और एक झूठी जिंदगी को भी स हाल के ढो सकते हैं और पूछ सकते हैं कि कोई भय तो नहीं है।
लेकिन जैसे ही दिखाई पड़ गया कि इृध!ट नहीं है, इृध!ट सोने की नहीं पंथर की है। वह बूढ़े ने वह इृध!ट फेंक दी और फिर रात उसी जंगल में वह निि—ध।चत होकर सो गया। फिर कोई भय न था, क्योंकि वह इृध!ट ही न थी। वह सोना ही न था, वह वहीं थे, सब कुछ वहीं था, जंगल वही था, रात वही थी, लेकिन भय समाषत हो गया। सब कुछ यही होगा, यही रातें, यही दिन, यही लोग, यही जमीन, यही सब कुछ होगा। लेकिन आपको अगर दिखाई पड़ जाए कि जिसे हम जिंदगी जानते थे वह जिंदगी नहीं है। तो सब बदल जाएगा, सब और हो जाएगा और तब दिखाई पड़ेगा और ज्ञात होगा क्या है जीवन? और तब उसका अर्थ और लङय भी दिखाई पड़ेगा और ज्ञात होगा, इस संबंध में इतनी ही बातें अभी कहूं, और तो हम और जीवन की खोज में विचार करेंगे। एक दो और छोटे प्र—ध।न उनकी चर्चा करूंगा, एक और प्र—ध।न पूछा हैं मित्र ने। मैं कहता हूं मौलिक चिंतन करना चाहिए सोचना चाहिए तो उंहोंने पूछा है कि क्या सभी लोग मौलिक चिंतन कर सकते हैं। क्या सभी लोग नए तरह से जीवन को सोच और देख और विचार कर सकते हैं। उंहें तो अतीत के अनुभवों का आधार लेना पड़ेगा उंहें तो सहारा लेना पड़ेगा, उंहें तो उधार विचारों को संपदा बनानी पड़ेगी। तो ही वे विचार कर सकेंगे तो उंहोंने पूछा है कि क्या सभी अतीत के विचारों का सहारा छोड़ना चाहिए और क्या यह संभव है कि हम सभी मौलिक विचार कर सकें।

पहली बातः आपसे कहूं वह यह है, जो भी घ्यक्ति विचार कर सकता है, वह मौलिक विचार भी कर सकता है। जो भी घ्यक्ति विचार कर सकता है वह मौलिक विचार भी कर सकता है। जो उधार विचारों को अपना मानकर, पकड़कर बैठ सकता है। वह विचार करने में समर्थ है, नहीं तो उधार विचारों को पकड़ना भी असंभव था। विचार की साम र्य है, इसीलिए तो दूसरों के विचारों को पकड़ लेता है लेकिन दूसरों के विचारों को पकड़ लेने से जो खुद के विचार की शक्ति थी वह पंगु हो जाती है। विकसित नहीं हो पाती, दुनिया में हर मनुहृय विचार करने में समर्थ है और उसी मात्रा में उसके भीतर मौलिक विचार का ज म हो सकता है जिस मात्रा में वह बाहर के सहारों को छोड़ने की साम र्य अ जत कर लें, साहस अ जत कर लें। मौलिक विचार संभव है, प्रंयेक घ्यक्ति को, प्रंयेक घ्यक्ति का ज मसिद्ध अधिकार है कि वह मौलिक विचार करें। जीवन के मिलने के साथ ही यह शक्ति भी मिल जाती है। मनुहृय होने के साथ ही यह संपदा भी मिल जाती है। यह र्त्वव है जीवन के साथ मिला हुआ, लेकिन हम उसका उपयोग ही न करें।

समझ लें—एक ऐसा गांव हो, जहां ब चे पैदा हों और उनके पैरों को बांध दिया जाए और हाथ में लकड़ियां दे दी जाएं और उनसे कहें चलो। तो वे लकड़ियों के सहारे ब चे चलेंगे फिर उस गांव के सब ब चे ऐसा हजारों साल तक करते रहें। कि ब चे जब भी पैदा हो उनको लकड़ियां पकड़ा दी जाएं, बैसाखियां दे दी जाएं और उन सबको चलने को कहा जाए। तो वे लकड़ियों के सहारे चलेंगे और उनके पैर पंगु हो जाएंगे। फिर हर पीढ़ी अपने ब चों के साथ यहीं करती रहे। हजार, दो हजार साल बाद उस गांव में बिना बैसाखी के कोई भी नहीं चल सकेगा। और अगर किसी दूसरे गांव से कोई आदमी भूला भटका वहां आ जाए और वह कहें, पागलों यह क्या कर रहे हो! बैसाखियों की क्या जरूरत है, अरे अपने पैरों से चलो। तो वहां के लोग पूछेंगे क्या? हर आदमी अपने पैरों से चल सकता है। क्या यह हो सकता है कि हर आदमी अपने पैरों से चल सकें। हां, कभी-कभी ऐसा होता है कोई अवतारी पुरुष पैदा हो जाता है अपने पैरों से चलता है। वह अपवाद की बात है, यह सबके बस की बात नहीं। सब तो बैसाखियों से ही चलते रहे हमेशा से। हमारे बाप-दादे भी चलते थे, उनके बाप-दादे भी, उनके बाप-दादे भी, यह तो हमेशा का ७म है। तुम यह क्या कहते हो अनूठी बात कि हर आदमी अपने पैरों से चल सकता है। जिन लोगों ने वषाध तक पैरों का उपयोग न किया हो उनको यह वि—ध।वास आना कठिन है कि हर आदमी अपने पैरों से चल सकता है। लेकिन हम सारे लोग अपने पैरों से चल रहे हैं। क्या आपको पता है चीन में हजारों वर्ष तक त्त्रियों के पैर में लोहे के जूते पहनाए जाते रहे। छोटा पैर सुंदर होता है ऐसा उनका खयाल था। हजार तरह की बेवकूफियां दुनिया में प्रचलित रही है। वह भी एक बेवकूफी थी चीन में प्रचलित थी। फलानी चीज सुंदर होती है, बस यह खयाल प्रचलित हो जाए तो कोई सोचता तो है नहीं, सोचने का तो कोई सवाल नहीं। तो चीन में हजारों वर्ष तक ब िचयां पैदा होंगी और उनके पैरों में लोहे की जूते पहना दिए जाएंगे। ताकि उनके पैर बड़े न हो सकें, छोटा पैर सुंदर और खूबसूरत होता है। फिर जिनके बड़े घर की लड़की होगी उतना ही छोटा पहनाया जाएगा। क्योंकि गरीब घर की लड़की को थोड़ा चलना-फिरना पड़ता है। तो बहुत छोटे जूते नहीं पहनाए जा सकते वह चल ही नहीं सकती। लेकिन बड़े घर की लड़कियों को तो कोई चलने-फिरने की सवाल नहीं है। तो उनके पैर के जूते और छोटे होते। राजा-महाराजाओं की जो लड़कियां होती है उनके पैरों का तो कहना ही क्या, वे तो चलने में और खड़े होने तक में असमर्थ हो जाती है इतने छोटे जूते होते हैं।

चीन भर की औरतों के पैर पंगु कर दिए गए हैं। सिर्फ गरीब औरतों को छोड़कर, गरीब औरतों का सौभाँय था कि वे गरीब थी इसलिए उनके पैर तो ठीक रहें बाकी अमीरों के सबके पैर छोटे हो गए। औरतें चलना मु—ध।कल हो गई, चीनी औरत का चलना देखने लायक हो गया उससे पैर ही रखते न बनें क्योंकि जिसका पैर लोहे में कसा हो बचपन से उसका पैर छोटा रह जाए शरीर बड़ा हो जाए, पैर का अनुपात छोटा पड़ जाए तो वह पैर देखने लायक भर रह जाएगा तो वह कुस(पर पैर रखकर बैठे तो आप देखें बाकी और किसी काम का न रह जाए। अगर उन त्त्रियों से कोई कहे कि सब त्त्रियों के पैर बड़े हो सकते हैं, सब त्त्रियां चल सकती है तो वे हैरान होंगी। वे कहेंगी सब, यह कैसे संभव है, कि सब त्त्रियां चल सकें अपने पैरों से। तो वे कंधे पर हाथ रखकर चलती थी। दो त्त्रियां साथ होंगी रानी के वह कंधे पर हाथ रखकर चलेगी खुद के पैर तो बड़े पंगु और जब पहली दफा चीन में कि हीं लोगों ने हि मत की और इसके खिलाफ विÐोह खड़ा किया। इसके खिलाफ भी वि ोह करना पड़ा कि औरतों के पैर में जूते नहीं पहनाएंगे तो बड़े उप व हुए झगड़े हुए, ऐसे लोगों को कहा गया कि ये

वि□ाही है, ये परंपरा के दु—ध।मन है, ये देश के अतीत को नह्रट कर रहे हैं। यह सारी बात बर्बाद कर देंगे हमारी संयता मिटा देंगे। हजारों साल से जो हमने नहीं किया यह नात्तिक लड़के ऐसी बातें करने को कह रहे हैं कि त्त्रियों के पैर में जूते मत पहनाओ। यह कहीं हो सकता है, कि त्त्रियां खूबसूरत त्त्रियां और बड़े पैर की हों। यह नहीं हो सकता, ऐसी ही हालत हमारे मत्तिह्रक की भी हो गई है। हजारों साल से लोहे के जूते हमारे मत्तिह्रक में कसे हुए है। हजारों साल से हमारे मत्तिह्रक को और विचार को चलने की कोई त्वतंत्रता नहीं है। बैसाखी रखों और चलो।
ैह्रण के कंधे पर हाथ रखों, महावीर के कंधों पर हाथ रखों। किसी को भी बैसाखी बना लो और चलो, लेकिन अपने पैर से मत चलना। हर आदमी कहीं अपने पैर से चल सकता है। यह तो कुछ थोड़े से सौभाँयशाली लोगों का हक है कि वे अपने पैर से चलें। 'चूसन 9ब0यू' थोड़े से चुने हुए चुनींदे लोग जिन पर भगवान कीं पा है। पता नहीं यह भगवान भी कैसा है कि कुछ लोगों पर्रे पा करता है, कुछ लोगों पर नहीं करता। पता नहीं वहां भी कोई रि—ध।वत चलती है क्या होता है। पता नहीं वहां भी खुशामद का बहुत प्रभाव होता है क्या होता है? तो कुछ चुने हुए लोग कर सकते है विचार, सब नहीं कर सकते। यह पागलपन सिखाया गया है इसका परिणाम यह हुआ कि मत्तिह्रक पंगु हो गए। चलने की साम र्य विवेक ने खो दी। तो नि—ध।चत ही आज यह बात लगती है आज हजारों साल के बाद अगर कोई कहे कि हर बात मौलिक रूप से सोच सकता है तो हमें वि—ध।वास नहीं पड़ता है यह त्वाभाविक है। यह त्वाभाविक इसलिए नहीं है कि यह हमारा त्वरूप है बेंकि इसलिए कि हजारों साल की हमारी आदत है और आदत के खिलाफ सोचना बड़ी हि मत की बात है कई कारणों से। क्योंकि आदत आसान होती है, और तोड़ना कठिन होता है।

एक आदमी सिगरेट ही पीने लगता है तो तोड़ना मु—ध।कल होता है। एक बिलकुल बेवकूफी की आदत है, जिसमें कोई भी मतलब नहीं। एक रत्ती भर मतलब नहीं है और कभी दुनिया अगर समझदार हुई तो हैरान होगी कि ऐसे पागल लोग भी थे पहले जो मुंह में धुआं खींचते थे और निकालते थे। बड़ी हैरान होगी और अरबों-करोड़ों रुपया खर्च करते थे इसमें धुआं खींचने और निकालने में तो ब□चे भविह्रय में सोचेंगे कि हमारे मां-बाप या तो पागल थे या क्या खराबी थी। क्योंकि यह केंपना भी उनके नहीं आ सकेगी कि ऐसे लोग भी जमीन पर जो धुआं पहले अंदर खींचते फिर बाहर निकालते और इसमें पैसा खर्च करते और इससे बीमार होते, इससे परेशान होते, इससे अत्पताल में जाते और उनके डाक्टर घोषणाएं करते कि कैंसर हो जाएगा, फलां हो जाएगा वे सब सुनते फिर भी पीते और जो डाक्टर यह कहते वे भी पीते। तो किसी न किसी दिन मनुह्रय-जाति में कोई न कोई पीढ़ी यह विचार तो करेगी कि ये लोग कुछ गड़बड़ रहे होंगे ये पागल रहे होंगे। क्या है इसमें? क्या होने जैसी बात है इसमें? लेकिन इसको भी छोड़ना कठिन है, इस निहायत एपसर्ड जिसमें कोई तुक, कोई संगति नहीं, कोई अर्थ नहीं, उसे छोड़ना भी कठिन है। प्राण निकल जाएं उसे छोड़ना कठिन है, उत्तर ध्रुव के पास 1930 में यात्री गए—पहले यात्री। उनका जहाज फंस गया और 15 दिन तक निकल नहीं सकता तो उनका राशन चूक गया। लेकिन राशन के चुकने से कठिनाई न हुई हो वे भूखे रहने को राजी थे। लेकिन सिगरेट चूक गई और तब एक तूफान आ गया उस जहाज में, बिना सिगरेट के रहना असंभव था। लोग सुत्त पड़ गए, लोग आंखें बंद करके पड़ गए, लोग रोने लगे, चिंलाने लगे कि हमें कोई न कोई तरह आखिर हालत यह हो गई कि जहाज की रत्सियां काटकर पी गए। और कैषटन परेशान हो गया कि तुम जहाज की रत्सियां काटे दे रहे हो कि कल जब हम निकलेंगे तो जहाज चलने योंय न रह जाएगा, उ होंने कहा कल की कल पर छोड़ें, अभी तो हमको धुंआ चाहिए। अब बचे या मरें लेकिन मरेंगे तो भी कम से कम धुआं पीते हुए मरेंगे, यह तो राहत रहेगी अब हम रुक नहीं सकते वह जहाज की रत्सियां काटकर पी गए, जहाज मुसीबत में पड़ गया बड़ी मु—ध।कल से उस जहाज को लाया जा सका। क्योंकि जहाज के लोग ही रत्सियां चोरी से काट-काट कर पी रहे थे। तो यह हमको हंसी आती हैं। और हमको हंसी इसलिए आती है कि शायद हमको खयाल नहीं है कि हम भी बहुत-सी ऐसी आदतों के बीमार होंगे जिन पर दूसरों को भी ऐसी हंसी आए। यह हो सकता है आप सिगरेट न पीते हो इसलिए मजे से हंस रहे हों सोचते हों कि बगल वाला अ□छा मु—ध।कल में पड़ गया जो पीता है। लेकिन आपकी भी ऐसी आदतें होंगी, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि सिगरेट पीते हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।

एक आदमी सुबह-सुबह बैठकर भगवान के सामने घंटी बजाता है। सिगरेट पीने से कोई भिन्न आदत, कोई फर्क है इसमें, कोई समझदारी है इसमें, क्या आप एक घंटी बजा रहे हैं भगवान के सामने बैठे हुए। अगर थोड़ा निहृपक्ष और सोचेंगे तो हैरान हो जाएंगे कि मैं यह कर क्या रहा हूं। इस घंटी बजाने से क्या संबंध, इससे क्या अर्थ। एक आदमी टीका लगा रहा है सुबह से इसमें कोई अर्थ है, सिगरेट पीने से कोई भिन्न है बात और टीका लगाकर समझ रहा है कि मैं धा मक हो गया। कम-से-कम सिगरेट पीने वाला यह तो नहीं समझता कि मैं धा मक हो गया। एक आदमी तिलक लगा लेता समझता है हम धा मक हो गए। एक आदमी जनेऊ बांधे हुए कमर से एक रत्सी बांधे हुए सोचता है हम धा मक हो गए। यह कोई भिन्न बातें हैं, अगर आपका जनेऊ तोड़ दिया जाए तो ऐसा लगे कि जैसे प्राण निकल गए।

एक साधु से मैं बात कर रहा था। वह मुंह पर पमी बांधे हुए थे, मैंने उनकी पमी खींच लीं। वह ऐसे घबड़ा गए कि जैसे मैंने उनकी आँमा ले ली हो। मैंने उनसे कहा, हद हो गई, आप तो कहते हो मैं शरीर नहीं आँमा हूं और यह पमी के खींच लेने से आप इतने घबड़ा गए कि जैसे आप प्राण निकल गए हो। यह पमी उ ़होंने जेंदी से पमी वापिस लीं, बांध ली जब तक उ ़होंने बांध न लीं तब तक वे इतने बेचैन थे बांध कर वे नि िं—ध।चत हुए। और मुझसे बोले आपने भी हद कर दी, एकदम से आपने खींच ही ली मेरी पमी। यह सिगरेट पीने से कोई भिन्न बात है, इसमें कोई फर्क है? जड़ता वही है, हमारा माइंड इडियोटिक है, मूड है और उस मोड़ मन में ऐसी हमने हजार जड़ताएं [illegible] कर रखी है। इनको छोड़ना मु—ध।कल है, तो मैं तो आपसे कह रहा हूं मौलिक चिंतन करों और हजारों साल की गुलामी यह कि हमने चिंतन कभी किया ही नहीं। हम तो हमेशा वि—ध।वास करते हैं कोई कह दें और हम मान लेंगे, कोई कह दें कि यह सच है और हम मान लेंगे और जितने जोर से कह दें उतने जेंदी मान लेंगे। जितनी ताकत से घुसा बजाकर कह दे और जेंदी मान लेंगे और कह दे कि मैं भगवान हूं। तो हम और भी जेंदी मान लेंगे कि जब भगवान खुद ही कह रहा है तो फिर शक करने का कोई कारण नहीं है। इसलिए जो आपको मनवाना चाहते हैं। वे जरूर यह घोषणाएं करते हैं कि मैं भगवान हूं कोई कहता है मैं तीथृध!कर हूं, कोई कहता है कि मैं ई—ध।वर का पुत्र हूं, कोई कहता है मैं अभी जमीन पर तीन सौ आदमी है इस वक्त जो यह कहते हैं कि हम भगवान है।

एक दफे तो एक मेले में मैं गया, तीन आदमी वहीं मौजूद थे जिनको यह खयाल है कि हम भगवान है। एक ने तो अपना नाम श्री भगवान ही रख छोड़ा। एक ही मेले में तीन थे और एक ही साथ भगवान तीन हो नहीं सकते इसलिए हर दो, हर एक बाकी दो की निंदा कर रहा था कि वे झूठे हैं, असली मैं हूं। तीन सौ आदमी है अभी जमीन पर जिनके दिमाग पर यह खराबी है वे समझते हैं, हम भगवान है। और बाकी दो सौ नि ़यानबे कि वे निंदा करते हैं सिवाय इसके कि कोई उनके पास काम भी नहीं है क्योंकि वह सब गलत हैं।

एक दफा ऐसा हुआ बगदाद में, एक आदमी ने यह घोषणा कर दी कि मैं पैगंबर हूं। मुसलमान यह बर्दा—ध।त नहीं कर सकते, [illegible] मद के बाद किसी को वे पैगंबर होने देने की आज्ञा नहीं देते। असल में हर धर्म बंद कर देता है दरवाजा, नए पैगंबरों के लिए गुंजाइश नहीं छोड़ता क्योंकि नए पैगंबर खतरनाक हो सकते हैं। महावीर चौबीसवें तीथृध!कर है अब उसके बाबत आगे [illegible] तीथृध!कर कोई कहे तो जैनी उसके दु—ध।मन हो जाएंगे कि रोको इसको। [illegible] नहीं हो सकता कोई, चौबीस मामला खतम। क्योंकि अगर [illegible] कुछ गड़बड़ बातें कहने लगे, [illegible] टाई बांधने लगे तो फिर क्या करो, फिर इसमें करो क्या? तो फिर महावीर से जो नँन रहे उनके साथ इसका मेल कैसे बिठाओ, तो इसलिए झंझट में पड़ो ही मत। नए का दरवाजा बंद तो मुसलमान भी नहीं मानते कि [illegible] मद के बाद किसी पैगंबर की जरूरत है। फिर जरूरत भी क्या? वे कहते हैं कि [illegible] मद ने सारी बात लाकर बता दी अब आगे बताने को है क्या? सारी बात जो कहने योँय थी वह कह दी गई तो अब दूसरे को कोई अमेंटमेंट तो लाना नहीं, कोई सुधार तो करना नहीं कि अब दूसरे को भेजे। एक आदमी ने घोषणा कर दीं, कि मैं पैगंबर हूं उसको बगदाद के खलीफा ने पकड़कर बुलवाया और कहा कि यह पागलपन छोड़ दो। नहीं तो सिवाय हँया के और कोई परिणाम न होगा। तो मैं [illegible] हें एक दिन का मौका देता हूं, उसको जेल में बंद करवा दिया और कहा, कि कल सुबह मैं आऊंगा तुम सोच लो ठीक से। नहीं तो सिवाय गर्दन कटने के कुछ नहीं

होगा और यह बात गलत है। और यह बात हम बर्दा—ध।त नहीं कर सकते कि कोई अपने को पैगंबर कहें, मोह मद आखिरी पैगंबर अब आगे कोई पैगंबर नहीं है।

एक है परर्मीमा और एक है उसका रसूल मोह मद अब कोई और दूसरा नहीं। बस हो गया, काम समाषत कुरान में सब है जो चाहिए, अब कोई और नई-नई किताबें लाने की भगवान के यहां से जरूरत नहीं है। उसको बंद कर दिया, सुबह बादशाह उससे मिलने गया खलीफा, वह जंजीरों में बंधा हुआ एक खंभे के पास बैठा हुआ था। खलीफा ने उसने कहा, खलीफा ने कहा, मित्र कुछ सोचा-विचार किया। वह हंसने लगा, उसने कहा तुम बड़े पागल हो, तु हें यह पता नहीं कि पैगंबरों पर हमेशा मुसीबतें तो आती ही है। इससे यह सिद्ध नहीं होता, कि मैं पैगंबर नहीं हूं, इससे यही सिद्ध होता है कि मैं पैगंबर हूं। यह तो मुसीबतें हमेशा पहले भी पैगंबरों पर आती रही, पैगंबरों को सताया जाना हमेशा होता रहा है। तो यह तो कसौटी है और तुम जितना मुझे सताओगे, उतना ही यह सिद्ध होगा कि मैं पैगंबर हूं। और तुमने मेरी हैंया कर दीं तो बस फिर तो काम बन गया। पैगंबरों की हैंयाएं होती नहीं, देखो ७इस्ट को सूली पर लटका दिया, सुकरात को जहर पिला दिया, यह तो होता रहा तो तुम करो जो तु हें करना है, यह तो भगवान ने मुझसे पहले ही कह दिया था कि तुझे भेज रहा हूं। बड़ी मुसीबतें झेलनी पड़ेंगी, वह झेलना शुरू हो गया, बात पक्की हो रही है। अब तो वह बहुत हैरान हुआ लेकिन तभी आकर कह दें हम वि—ध।वास कर लेते हैं। हम वि—ध।वास करने के आदी हो गए हैं। हमें कोई भी बात वि—ध।वास करवाई जा सकती है। हमसे कोई भी बात कह दी जाए कि वि—ध।वास करो, हम कर लेंगे। हमारा न तर्क उठेगा, न विचार उठेगा, न खयाल उठेगा, यह एक दो दिन कि गुलामी नहीं है। यह हजारों साल की गुलामी है और इस गुलामी के खिलाफ जब मैं आपसे कहता हूं मौलिक चिंतन तो आपको ऐसा लगता है यह तो बड़ी दूर की बात है जिसे कोई आकाश पर चढ़ने की बात कहे। लेकिन मैं आपसे वि—ध।वास दिलाना चाहूं, निवेदन करना चाहूं, आपके भीतर हजारों साल की गुलामी के बाद भी वह योति मौजूद है। जो मौलिक चिंतन कर सकती है, वह विवेक मौजूद है, क्योंकि उस विवेक को कोई गुलामी नहृट नहीं कर सकती है, बांध सकती है, नहृट नहीं कर सकती। उस विवेक के चारों तरफ दीवाल खड़ी हो सकती है लेकिन वह मर नहीं सकता। वह भीतर मौजूद है और आप जिस दिन हि मत करेंगे वह जाग सकता है और बड़े रहत्त्य की बात तो यह है। कि कुछ बड़ी अजीब सी बात यह है कि एक घर में हजारों साल से अंधेरा भरा हो। तो भी उस अंधेरे को मिटाने के लिए एक दिया हम आज जला ले तो वह अंधेरा मिट जाएगा। वह अंधेरा यह नहीं कहेगा मैं आज हजार साल पुराना हूं। इसलिए मैं जाऊंगा नहीं, एक दिन का अंधेरा हजार साल का अंधेरा एक ही दीये से मिट जाता है। तो हजारों साल की जड़ता है, लेकिन अगर विवेक की छोटी-सी किरण भी जगाने का आप प्रयास करें तो वह विलीन हो जाएगी। और एक नए जीवन का ज म हो सकता है। इस संबंध में और बातें और कुछ प्र—ध।न उनके संबंध में कल आपसे विचार करूंगा। अभी रात के लिए इतना ही, रात के यान के लिए बैठेंगे तो थोड़ी सी दो बात रात के यान के संबंध में आपको समझा दूं। फिर हम यान का प्रयोग करें।

मेरे प्रिय आत्मन,

मनुष्य के सत्य की खोज में जो पहली बाधा, जो पहला अटकाव, जो पहला बंधन है, उसे तोड़ने की बात हमने कल की। वह ज्ञान, जो हमें दूसरों से मिलता हैं, हमारे अज्ञान से भी यादा खतरनाक है। वह इसलिए यादा खतरनाक है कि उसके द्वारा हमारा अज्ञान मिटता तो नहीं, छिप जरूर जाता है, ढक जाता है और वह बीमारी जो ढकी हों उस बीमारी से खतरनाक होती है, जो खुली हों, उघड़ी हों, स्पष्ट हों। दूसरों के ज्ञान से, दूसरों के शब्दों और विचारों से शास्त्रों और सिद्धांतों से हम कुछ जानते नहीं, लेकिन जानने लगे हैं इस भ्रम में जरूर पड़ जाते हैं। शब्द सीख लिए जाते हैं और यह भ्रम पैदा हो जाता है कि सत्य सीख लिया गया है। ऐसे शब्दों, ऐसे ज्ञान, ऐसे उधार बासे-विचारों पर मस्तिष्क मुक्ति तो नहीं खोज पाता और नए-नए भ्रम जाल और नई-नई कल्पनाओं और नए-नए बंधनों में ग्रसित हो जाता हैं।

यह ज्ञान छोड़ना जरूरी है। इस ज्ञान को छोड़ने के लिए कोई प्रयास भी नहीं करना ह ोगा, यह स्मरण भर हमें आ जाएं, यह समझ यह अंडरस्टैंडिंग भर हमें हो कि जो मेर ा नहीं है, जो मैंने नहीं जाना, जो मेरा अनुभव नहीं है, जिसने मेरे प्रांगों में आंदोलन नहीं लिया, जिसे मेरे हृदय ने पहचाना नहीं हैं, जिसे मेरी आत्मा ने जीया नहीं हैं, व ह ज्ञान-ज्ञान नहीं हैं। यह स्मरण भर आ जाएं तो उस भवन के गिर जाने में कोई कि ठनाई नहीं हैं, जो हमने उधार और दूसरों के विचारों पर खड़ा कर लिया हैं। यह पह ली कड़ी थी जो कल मैंने इस संबंध में आपसे बात कीं। आज और एक दूसरी कड़ी पर आपसे बात करूंगा—और पहली कड़ी को समझ लेना तो फिर भी आसान था कि दूसरों का ज्ञान हमारा ज्ञान नहीं है। आज और थोड़ी सी कठिन बात पर आपसे चर्चा करनी हैं। वह शायद और भी मु—ध।कल मालूम होगी समझने में, लेकिन थोड़ी भी समझपूर्वक कोशिश की गई तो उसे भी समझ लेना कठिन नहीं हैं। वह दूसरी बात य ह है कि मनुष्य को यह भी भ्रम है कि वह कुछ करता है। ज्ञान तो उसका झूठा हैं, उसके कर्ता होने का बोध भी झूठा है, उसके कर्म का बोध भी झूठा हैं।

मनुष्य करीब-करीब यंत्र की भांति जीता है, एक चेतना की भांति नहीं, मनुष्य एक कांशसनेस की भांति नहीं जीता, एक आत्मा की भांति नहीं जीता। जीता हैं एक मशी न की भांति, एक यंत्र की भांति, पंखे चल रहे हैं, हमने उनकी बटने दबा दी हैं और उन्होंने चलना शुरू कर दिया हैं, अगर इन पंखों को यह भ्रम पैदा हो जाए कि हम चल रहे हैं तो पंखों का अज्ञान होगा, पंखे चलाए जा रहे हैं, चल नहीं रहे हैं। मशीनें चलाई जाती हैं चलती नहीं हैं। मनुष्य भी चलता नहीं है, केवल चलाया जाता है, लेकिन उसे यह खयाल हैं और यह खयाल उसके जीवन में सबसे बड़ी जंजीर हैं, उसे यह खयाल है कि मैं चलता हूं, उसे यह खयाल हैं मैं करता हूं, उसे यह खयाल हैं ि क मैं करने वाला हूं। आपने कई बार कहा होगा—कल मैंने क्रोध किया, लेकिन क्या कभी आपने कभी यह सोचा है कि क्रोध आपने कभी किया है आज तक जीवन में या कि क्रोध हुआ है। आपने क्रोध किया ऐसा आपने सोचा होगा बहुत बार, लेकिन थोड़ ा समझेंगे तो दिखाई पड़ेगा क्रोध किया नहीं हैं, क्रोध हुआ है और आप क्रोध में करने वाले नहीं थे, केवल एक मशीन की भांति चालित हुए थे। कोई आपको धक्का दे दे तो आपके भीतर जो क्रोध उठता है, वह सचेतन नहीं हैं, कांशस नहीं है, वह आपके विचारपूर्वक नहीं है, वह बिलकुल यांत्रिक हैं जैसे कोई बटन दबा दें और पंखा चल जाए, वैसे कोई धक्का दे दें तो भीतर क्रोध उठ आता है। इस क्रोध के आप मालिक नहीं है, इस क्रोध को करने वाले आप नहीं हैं। लेकिन हम कहते रोज यही हैं कि मैंने क्रोध किया, झूठ है यह बात, न आपने कभी क्रोध किया है, न आपने घृणा की है और न प्रेम किया है। प्रेम जिनके जीवन में पैदा होता है, वे जानते हैं भली-भांति इस बात को, कि यह कहना गलत है कि मैंने प्रेम किया, यही कहना ठीक है कि प्रेम हु आ इट हैपंस, हो जाता है आप करते नहीं है। लेकिन कहते हम यही हैं कि मैंने प्रेम किया, यह आपके बस में है प्रेम करना, तो मैं एक आदमी को आपके सामने बिठा दूं और कहूं कि चलिए इसे प्रेम करिए आप प्रेम कर पाएंगे। एक आदमी को आपके सा

मने बिठा दिया जाए और कहा जाए कि चलिए इस पर क्रोध करिए, आप क्रोध कर पाएंगे। जितनी आप कोशिश करेंगे क्रोध करने की आप पाएंगे कि कोई क्रोध नहीं उठ रहा है। चाहे आप मुट्ठियां बांधें और चाहें आप दांत पीसें लेकिन आप पाएंगे भीतर कोई क्रोध नहीं है और यह सब एक्टिंग है और झूठी है, अभिनय है। जब आप जानकर एक भी बार क्रोध नहीं कर पाते हैं तो जब आप क्रोध करते हैं वह कैसा होगा, वह अनजाना होगा आपके बिना जाने हो रहा है और जो आपके बिना जाने हो रहा है उसके आप मालिक नहीं हो सकते। जो आपके अनजाने हो रहा है उसके आप मालिक नहीं है, उसके आप गुलाम है और आप मशीन की भांति व्यवहार कर रहे हैं।

सामान्यतया हमारा पूरा जीवन एक यंत्र की भांति है। जिसमें हमारी कोई मालकियत, जिसमें हमारा कोई स्वामित्व नहीं है। आपके भीतर लोभ है, आप अपने लोभ के मालिक है, आपने लोभ को पैदा किया है, आपके भीतर सैक्स है, आप सैक्स के मालिक है उसे आपने पैदा किया है। नहीं, आपने उसे पाया है, बच्चा युवा होता है और अचानक पाता है कि उसके भीतर काम ने, सैक्स ने, एक तीव्र उभार लिया है, उसके भीतर कोई नई वासना जागने लगती है, जिसे वह जागते हुए पाता है, लेकिन जिसका वह मालिक नहीं है। वह वासना बिलकुल अचेतन है, उसका उसे कोई होश नहीं है, कोई बोध नहीं है, लेकिन शायद वह कहता है यही होगा, यह वासना मेरी है। अगर हम चित्त का ठीक-ठीक वि—ध।लेषण करें और अपने कर्मों का भी तो हम पाएंगे वे हमसे होते हैं। हम उनके करने वाले नहीं और यह कर्त्ता का भ्रम है कि मैं कर रहा हूं। न आप अपने जन्म के मालिक हैं आप पैदा हुए हैं; न आप अपने जीवन के मालिक हैं जीवन आपको मिला है; न आप अपनी मृत्यु के मालिक है मृत्यु घटित होगी; आप अपनी —ध।वास के भी मालिक नहीं है जो भीतर और बाहर आ जा रही है; लेकिन कहते हम यही है कि मैं —ध।वास ले रहा हूं। इससे यादा झूठी बात आदमी ने कभी नहीं कही होगी। आप —ध।वास ले रहे हैं तो-तो फिर आपकी मृत्यु होनी असंभव है। मृत्यु खड़ी हो जाएगी आप —ध।वास लिए ही चले जाना। लेकिन हम भली-भांति जानते हैं कि जो —ध।वास बाहर चली गई और नहीं लौटने को है तो हम उसे नहीं लौटा सकते। तो यह कहना गलत है कि मैं —ध।वास ले रहा हूं, यही कहना ठीक है कि —ध।वास आ रही है, जा रही है, मैं कहा आता हूं इसमें। यह कहना गलत है कि मेरा जन्मदिन है। मुझसे पूछा था किसीने, मेरा कोई वश है मेरे जन्म पर, मेरा कोई अधिकार है, मेरी कोई स्वीकृति है, नहीं मैं कहीं भी नहीं आता हूं। जीवन जन्मता है, लेकिन मैं कहता हूं मेरा जन्म —ध।वास चलती है लेकिन मैं कहता हूं मेरी —ध।वास, मैं ले रहा हूं। क्रोध उठता है, काम उठता है, लोभ उठता है और मैं कहता हूं मेरा क्रोध, मेरा प्रेम, मेरी घृणा, मेरे मित्र, मेरे शत्रु बहुत अनजाने और बहुत नासमझी से जो सारी क्रियाएं बिलकुल यांत्रिक, मैकेनिकल है, उनके हम स्वामित्व की घोषणा करने लगते हैं और कहते हैं मैं इनका मालिक हूं।

इस बात की कसौटी इससे हो सकेगी, कि अगर आपके भीतर क्रोध हो और आप न चाहे तो न हो, तो हम समझ सकेंगे कि आप क्रोध करते हैं।

एक आदमी आपको गाली दे, आप चाहे तो क्रोध हो और चाहे तो क्रोध न हो, तो ह म समझेंगे कि क्रोध के आप कर्ता है, क्रोध के आप मालिक है। लेकिन अगर आपके ि बना चाहे तो सब होता है, तब तो बड़ी कठिनाई है।
बुद्ध एक गांव के पास से निकले। कुछ लोगों ने आकर बुद्ध को गालियां दीं और अप मानजनक शब्द कहे। वे बड़े क्रोध में थे बुद्ध ने कुछ ऐसी बातें कही थी। कि उनके पु राने धर्मों के जड़ें हिल गई थी और बुद्ध ने कुछ ऐसी बातें कही थी कि उनकी परंपर ागत रूढ़ियों पर चोट पड़ी थी। वे गांव के क्रुद्ध लोग और उन्होंने बुद्ध को रास्ते पर घेर लिया और बहुत गालियां दीं। थोड़ी देर बाद बुद्ध ने कहा, 'मेरे मित्रों! अगर तुम्‍ हारी बात पूरी हो गई हो तो मैं जाऊं, मुझे दूसरे गांव जल्दी पहुंचना है।' वे थोड़े हैर ान हुए और उन्होंने कहा हमने क्या कोई ऐसी बातें कही है। कि आप इतनी शांति से यह कहें कि मुझे दूसरे गांव जाना है आपकी बातें पूरी हो गई क्या? हमने दी है गालि लयां अपमानजनक शब्द, 'विषभरी बातें' क्या आपके भीतर कोई क्रोध पैदा नहीं हुआ ।
बुद्ध ने कहा, तुमने थोड़ी देर कर दी है। दस साल पहले आना चाहिए था, तब क्रोध होता था, घृणा होती थी, तब सब होता था। क्योंकि मैं मौजूद नहीं था, मैं अनुपस्थि त था। मैं अपने जीवन के प्रति सचेतन नहीं था, जाग्रत नहीं था, सोया हुआ था, सब होता था, दस साल पहले आना था। तुम बड़े बेवक्त आए हो, अब मैं जागा हुआ हूं और अब तुम जो चाहो वही मेरे भीतर नहीं हो सकता। अब तुम मेरे मालिक नहीं रहे, मैं जब सोया हुआ था, तब तुम मेरे मालिक थे, अब मैं जागा हुआ हूं, मैं अपना मालिक हूं। तुमने गालियां दी ठीक, लेकिन मैं गालियां लेने से इंकार करता हूं। तुम ने मेहनत की श्रम उठाया, तुम गांव के बाहर इस भरी दोपहरी में आए और तुमने न मालूम कितनी पीड़ा झेली होगी तभी तो तुम इतने विषभरे शब्द बोल सकें। लेकिन ठीक तुमने बोला, लेकिन तुम अकेले थोड़ी ही इस लेन-देन में हो, मैं भी तो भागीदा र होना चाहिए। तुमने दिया, मुझे लेना चाहिए, तभी तो गाली अर्थपूर्ण होगी। लेकिन मैं लेने से इंकार करता हूं, तुम बड़ी मु–ध।कल में पड़ोगे, अब इन गालियों का क्या करोगे? कहां ले जाओगे? क्योंकि पिछले गांव में कुछ लोग फूल और फल और मिठ ाइयां लेकर आए थे और मैंने उनसे कहा मित्रों! मेरा पेट भरा है तो वे वापस ले गए , उन्होंने क्या किया होगा। भीड़ में से किसी ने कहा, अपने घर ले गए होंगे, अपने ब च्चों को बांट दी होगी।
तो बुद्ध ने कहा, तुम बड़ी मु–ध।कल में पड़ गए, तुम गालियां लेकर आए हों, तुम्हें भी वापिस ले जाना पड़ेगा किसको बाटोंगे। किसको दोगे ये गालियां, मैं लेने से इंका र करता हूं। मैं अपना मालिक हूं, लेकिन कोई जवाब तो गाली देता है तब आप लेने से इंकार कर पाते हैं। नहीं, वह दे भी नहीं पाता और आप पाते हैं क्या आप ले चु के हैं। उसकी गाली पूरी भी नहीं हो पाती कि आप तक पहुंच गई होती। उसकी गाल ी समाषत भी नहीं हो पाती कि आपके भीतर कुछ होना शुरू हो जाता है, जो क्रोध है। आप इस क्रोध के मालिक कैसे हो सकते हैं, दूसरा है आपका मालिक जो गाली दे

रहा है। उसके हाथ में है आपकी चावी, हम सब बाहर से चालित हैं, हम सबको क
ोई चला रहा है, एक आदमी दो मीठे शब्द बोल देता है और हम प्रसन्न हो जाते हैं।
वह हमारी प्रसन्नता और मुस्कुराहट हमारी नहीं है।
एक आदमी गाली दे देता है, हम दुखी हो जाते हैं। वह दुख भी हमारा नहीं है। दोनों
बाहर से पैदा किए गए हैं, इस संबंध में दो तथ्य आपसे कहना चाहता हूं: पहला,
मनुष्य के जितने कर्म है सभी यांत्रिक है। दूसरा, मनुष्य के जितने कर्म है, उन्हें कर्म
भी कहना ठीक नहीं है वे प्रति-कर्म है, वह 'रिएक्शनस' है, 'एक्शन' भी नहीं। ये दो
बातें सबसे पहले आज की सुबह आपसे कहना चाहता हूं।
मनुष्य के कर्म यांत्रिक है, यांत्रिक से मेरा अर्थ है; मनुष्य उन्हें करते वक्त सचेतन रूप
से नहीं कर रहा है, कर रहा है। उसे खुद भी पता नहीं है, वह क्यों कर रहा है। उ
से खुद भी कोई पता नहीं है, क्यों हो रही है ये बातें उसके भीतर। आपको पता है,
क्यों आपके भीतर क्रोध पैदा होता है। आपको पता है, क्यों आपके भीतर अहंकार पैद
ा होता है। आपको पता है, क्यों लोभ पैदा होता है। आपको पता है, क्यों सैक्स पैदा
होता है। कुछ भी पता नहीं है, अंधी ताकतों के हाथ में हम एक खिलवाड़ से शायद
यादा नहीं मालूम होते। कुछ होता है और हम उसके शिकार है। क्यों होता है, कोई
बोध हमें नहीं है। पहली बात इसलिए हमारे कर्मों को मैं यांत्रिक कह रहा हूं, मैकेनि
कल, मशीन के भांति। दूसरी बात हमारे कर्म, कर्म भी नहीं है, प्रति-कर्म है, कर्म व
ह होता है जो हमारे भीतर से अविरभूत हो और प्रति-कर्म, रिएक्शन उसे कहूंगा जो
बाहर से हमारे भीतर पैदा कर दिया जाए।
एक आदमी आपको धक्का दे दें, तो जो क्रोध पैदा होता है वह आपके भीतर से पैदा
नहीं हुआ। किसी ने बाहर से उसको गति दी है, वह प्रति-कर्म है, वह कर्म नहीं है,
वह रिएक्शन है। आपने कभी कोई ऐसा कर्म किया है, जो आपके भीतर से पैदा हुआ
हो। जिसका अविर्भाव अपने भीतर से आया हो, कुछ कर्म किए होंगे। जो भीतर से
आए होंगे, लेकिन उनके आने में आप सचेतन न रहे होंगे, होश से भरे हुए न रहे हों
गे। दो तरह के कर्म है हमारे, अचेतन भीतर से आने वाले और प्रतिकर्म बाहर से आ
ने वाले। इन दोनों के बीच में जो मनुष्य घिरा है, वह बड़े गहरे बंधन में है लेकिन व
ह क्या करें। क्या वह अपने क्रोध को दबा लें, दबाने में उसे कोई फर्क नहीं पड़ेगा। क
या वह अपनी वासनाओं को दबा लें, कोई फर्क नहीं पड़ेगा। क्योंकि जो उन पर पैदा
करने में मालिक नहीं है, वह उनके दबाने में भी कैसे मालिक हो सकता है। जो उन
के पैदा करने में मालिक नहीं है, वह दबाने में भी मालिक नहीं हो सकता और अगर
किसी भांति जबरदस्ती वह दबा लें तो उसका क्रोध, उसकी वासनाएं, उसके कर्म दू
सरे रास्तों से प्रकट होने लगेंगे जो और भी खतरनाक होगा। ऐसा हो रहा है रोज।
आप एक द9ब0तर में काम करते हो और आपका मालिक क्रोध से भर जाए और गुस्
से में दो शब्द बोल दें। तो शायद आपको अपना क्रोध पी जाना पड़ेगा। पी जाना पड़े
इसलिए कि जैसे नदी की धार नीचे की ओर उतरती है। ऐसे ही क्रोध की धार भी न
ीचे की तरफ उतरती है, ऊपर की तरफ नहीं चढ़ती। आपका मालिक है उसकी तर

फ क्रोध की धार चढ़ाना खतरनाक है। वह जीवन-मरण का प्र—ध्न बन सकता है इ सलिए आप पी जाएंगे ऊपर से मुस्कुराते रहेंगे। झूठी होगी वह मुस्कुराहट, भीतर क्रोध उबल रहा होगा लेकिन उसको पी जाएंगे। उसको सम्हालकर अपने घर ले आएंगे, म जबूत मालिक पर वह नहीं निकल सकता, तो कमजोर पत्नी पर निकल सकता है। घ र आकर कोई बहाना आप खोज लेंगे, जिसका आपको पता भी नहीं है कि मैं बहाना खोज रहा हूं, जिसका आपको खयाल भी नहीं है कि मैं यह क्या खोज रहा हूं और कमजोर पत्नी में कोई बहाना मिल जाएगा जो कि स्वाभाविक है आदमी बहुत कमजो र उसके पास पच्चीस बहाने है। हो सकता है वह थाली भोजन परोसते वक्त जोर से पटक दें और उसकी थाली पटकने में भी कोई और कारण हो सकता है। हो सकता है कि उसकी पड़ोसन ने कुछ शब्द कहे हों जो उसके भीतर क्रोध को दबा गई हो औ र थाली इसलिए जोर से गिरें क्योंकि वह क्रोध भीतर धक्के दे रहा है कुछ करने को, कुछ तोड़ने को, कुछ फोड़ने को। हो सकता है भोजन में वह नमक डालना भूल जाए और वह भूलना भी हो सकता है कि इस कारण हो। कि कल रात आपने उससे जो शब्द कहें थे वे इतने कड़वे थे कि आज मीठा भोजन देना आपका उसका चित्त राजी नहीं है। वह भूलना भी बिलकुल अचेतन हो सकता है, उसे खयाल भी न हो कि वह भूल गई और आप घर जाए और कोई बहाना खोजकर अपनी पत्नी पर टूट पड़ेंगे और आपको ऐसा लगेगा कि बिलकुल जायज बिलकुल जस्टीफाइड है मेरा क्रोध। पत्नी ने गलती की है, लेकिन अगर थोड़ा समझेंगे तो पाएंगे कि यह बिलकुल यांत्रिक है, क्रोध कहीं और पैदा हुआ था उसको आप इकट्ठा किए लिए आए हैं, वह बहना चाहत ा है आप झूठे बहाने खोजकर उसको बहा रहे हैं। पत्नी को आप मार सकते हैं, गाली दे सकते हैं, अपमान कर सकते हैं, पत्नी आपसे शायद कुछ भी नहीं कह सकेगी। क योंकि हजारों वर्ष उसको समझाया गया है कि पति परमात्मा है। ये पति देवता है औ र यह किसने समझाया ये पतियों ने समझाया हैं कि हम देवता है, हम परमात्मा है, हमको पूजना और हम कुछ भी करें और कोई भी व्यवहार करें वह सब ठीक है। हज ारों वर्ष की सिखावन का फल है कि पत्नी इसको पी जाएगी। लेकिन पत्नी का मन भी वैसा ही काम करता है जैसा पति का। थोड़ी देर में उसका बच्चा स्कूल से लौटेगा और वह कोई बहाना खोजेगी और बच्चे को मारेगी। इस मारने में बच्चे का कोई सं बंध नहीं होगा, हो सकता है वह कहें कि तुमने किताब फाड़ डाली, हालांकि बच्चा र ोज किताबें फाड़कर आता रहा था। लेकिन कल तक यह बात उसे दिखाई नहीं पड़ी थी। आज उसे दिखाई पड़ जाएगी। हो सकता है वह कहें कि कपड़े तुम गंदे कर के आ गए हो, हालांकि बच्चा रोज स्कूल से कपड़े गंदे कर के आता रहा था लेकिन इस पर कभी उसकी नजर न गई थी, आज नजर नि—ध्चित चली जाएगी, आज वह कारण खोज रही है। उसके भीतर इकट्ठा है क्रोध, जो बहना चाहता है, मशीन की त रह उसके भीतर कोई वेग है जो बहना चाहता है। आज यह बच्चा पीटेगा और बच्चे को पता भी नहीं होगा कि यह क्रोध बड़ी दूर से यात्रा कर के आ रहा है। यह द9ब 0तर में उसके पिता को, उसके मालिक ने दिया था। बच्चा क्या करेगा अपनी मां को

न तो मार सकता है, न गाली दे सकता है। शायद वह अपनी गुड़िया की टांग तोड़ डालें, शायद वह अपने खिलौने को तोड़ दें और हो सकता है अपने बस्ते को पटक क र स्लेट को फोड़ डाले। जहां उसकी ताकत चल सकेगी, वहां वह अपने क्रोध को बहा देगा।

ऐसा सारा यांत्रिक जीवन है हमारे चित्त का और यह सारा यांत्रिक जीवन इसीलिए य ह आंतरिक बना हुआ है कि हम इस बात को देखने की भी हिम्मत नहीं करते कि ि बलकुल मशीन जैसा व्यवहार हो, बल्कि इस व्यवहार को हम रोज-रोज न्याययुक्त ठह राकर ऐसा अहसास करने लगते हैं कि जो मैं कर रहा हूं बिलकुल ठीक कर रहा हूं और मैं कर रहा हूं। दोनों बातें झूठ है : न तो मैं कर रहा हूं और ठीक करना तो ब हुत दूर का सपना है, क्योंकि जिस बात का करने का मैं मालिक ही नहीं हूं, उसे ठी क करने का तो कोई सवाल भी नहीं उठता। यह सब हो रहा है, ये क्रोध की तो मैंने एक बात कही, हमारे जीवन की सारी वृत्तियां ऐसी ही यांत्रिक हैं। आपने देखा, रो ज सुबह गांव में भिखारी निकलते हैं, भीख मांगने। आपने कभी सांझ को भिखारियों को भीख मांगते देखा, नहीं देखा होगा। सांझ को कोई भिखारी भीख मांगने नहीं आत ा क्योंकि वह जानता है, दिनभर का परेशान आदमी भीख नहीं दे सकेगा। भीख सुबह मिल जाती है, क्योंकि रातभर का सोया आदमी भीख दे सकता है। रात भर की सो ए हुए होने के बाद भीख देने का काम हो सकता है, क्योंकि यह जो यांत्रिक आदमी है अगर यह थोड़ा शांत हो तो ही भीख दे सकता है। यह भीख इसलिए नहीं देता कि भिखारी को जरूरत है, यह भीख इसलिए देता है कि यह भीख दे सकता है इस शां त हालत में। सांझ को यही आदमी भीख नहीं देगा, क्योंकि दिनभर की अशांति इकट्ठ ी हो गई, सांझ को यह भिखारी का चांटा मारना चाहेगा, भीख की जगह। न तो वह भीख देने में भिखारी से कोई संबंध है, न चांटा मारने में कोई संबंध है, उसके भीत र कि अपनी यांत्रिक व्यवस्था उसको प्रेरित कर रही है, ऐसा करो। आपने कभी खया ल किया अगर रास्ते पर भिखारी आपको अकेला मिल जाए तो सौ में एक मौका भी नहीं है कि आप उसको कुछ पैसे दें, लेकिन अगर आपके चार मित्र आपके साथ हों तो सौ में निन्यानवें मौके है कि आप उसको कुछ देंगे और यादा देंगे, क्यों? वे तीन आदमी देखने वाले मौजूद हैं, वे तीन देखने वालों की आंखें आपके अहंकार को गति दे रही हैं कि दो, तीन आदमियों की आंखों में आपकी इ जत बढ़ रही है, भिखारी से कोई संबंध नहीं है, आपके अहंकार को तृषित मिल रही है। इसलिए भिखारी हमेश ा भीड़ में आपको खोजता है, अकेले में वह आपसे बचता है, अकेले में कोई गुंजाइश नहीं है आपसे पाने की। आपका यांत्रिक मन अकेले में आपका अहंकार तृषत नहीं हो गा, हटा देंगे कि भाग जाओ, क्योंकि भिखारी से कोई भी संबंध नहीं देने का, देने का संबंध आस-पास खड़े लोगों से कि वे आपको देख रहे हैं। उनके मन में आपकी प्रतिष ठा बन रही है, आपके अहंकार की तृषित हो रही है और आपको पता भी नहीं है ि क यह देना मेरे अहंकार की तृषित की बिलकुल यांत्रिक मांग है, इसमें भिखारी पर दया बिलकुल नहीं, इसमें कोई संबंध नहीं है भिखारी से।

चौबीस घंटे हम जो कर रहे हैं, वह न तो सचेतन है, न तो हमें उसका होश है, न हमें अवेयरनेस है कि हम यह क्या कर रहे हैं, हम क्या कह रहे हैं, हम कौन सी बातें कर रहे हैं, कौन सी बातें कह रहे हैं, कौन सी बातें सोच रहे हैं, सब यांत्रिक हैं। कभी दस मिनट को अकेला आपने कमरा बंद करके बैठ जाए और मन में जो भी विचार चलते हैं, वह एक कागज पर लिख डालें, ईमानदारी से, वही जो भीतर चलते हो। दस मिनट बाद उस कागज को आप अपने सगे से सगे मित्र को भी बताना पसंद नहीं करेंगे, क्योंकि उस कागज में आप देखेंगे कि यह क्या पागलपन की बातें मेरे मन चल रही है, जिनका न कोई तुक है, न कोई संबंध है, न कोई संगति। यह क्या है? शायद आपको खुद ही डर होगा कि मैं पागल तो नहीं हो गया हूं, ये बातें मेरे मन मग चल रही हैं। लेकिन एक यांत्रिक धार है विचारों की जो मन के भीतर चली जा रही है, उसके भी आप मालिक नहीं है। एक छोटे से विचार को भी अपने मन के बाहर निकाल देने की ताकत नहीं है, निकालने की कोशिश करें, पता चल जाएगा। किसी एकाध विचार को निकालने की कोशिश करें, हैरान हो जाएंगे, जिसको निकालना चाहेंगे वह दुगुने वेग से वापस आकर खड़ा हो जाएगा। यहां दरवाजे पर हम एक तख्ती लगा दें--भीतर झांकना मना है। फिर हममें से कौन इतना शक्तिशाली है जो बिना भीतर झांके निकल जाए और अगर कोई संयमी, कोई तपस्वी, कोई झक्की, कोई हठी निकल भी जाए, तो उसका मन पीछे लौट-लौट के झांकने का होता रहेगा, उसकी रात की नींद खराब हो जाएगी। रात सपने में वह उसी दरवाजे के आस-पास घूमेगा जहां लिखा है--भीतर झांकना मना है और हो सकता है कल वह वापिस आए और उस दरवाजे में से झांक कर देखें। उसके प्राण व्याकुल हो जाएंगे, क्योंकि जिस विचार को निषेध किया गया है, वह आकर्षण उपलब्ध कर लेता है।

दुनिया में इतनी चीजों में आकर्षण दिखाई पड़ रहे हैं आपको पता है क्यों? उन चीजों में शायद ही कोई आकर्षण है लेकिन निषेध बल दे दिया है। मुसलमान मुल्कों में जहां सारी स्त्रियां बुर्कों में ढंकी हुई हैं। एक भी स्त्री सड़क पर से नहीं निकल पाती जिस पर हजारों आंखें न टिक जाती हो। उसका कारण स्त्री नहीं है, उसका कारण बुर्कें हैं। आदिवासी कौमों में जहां स्त्रियां करीब-करीब अर्धनग्न हैं, कोई आंख उन पर टिकती नहीं है, कोई आंख उनके शरीर को भेदना नहीं चाहती। कोई कारण नहीं है भेदने का, द्वार खुला हुआ है और वहां लिखा हुआ नहीं कि भीतर झांकना मना है। जिन चीजों को हम जितना छिपाते हैं और दूर करते हैं, हमारी आंखें उतनी उनकी तलाश करने लगती हैं, खोज करने लगती हैं। यह हमारा चित्त निषेध में, जहां इंकार है, वहीं-वहीं घूमने लगता है, वहीं-वहीं घूमने लगता है, तो अजीब घटना घट गई है मनुष्य-जाति के इतिहास में। जिन चीजों से हमने मनुष्य को अलग करना चाहा, अपनी ही नासमझी के कारण उन्हीं चीजों को मनुष्य के चित्त को रोक रखा है। उन्हीं चीजों पर, जो कौम जितनी ब्रह्मचर्य की बात करती है, उतनी ही सैक्सुअल है, उतनी ही कामुक है। जो लोग जितनी अध्यात्म की बात करते हैं, उतने ही निरा भौतिकवादी हैं,

उतने ही निपट भौतिकवादी हैं। जो लोग जितनी आत्मा की बातें करते हैं और शरीर के विरोधी हैं, उन जैसा शारीरिक चित्त खोजना जमीन पर असंभव है।
एक साध्वी के साथ मैं बातें कर रहा था। समुद्र के किनारे हम बैठे हुए थे। समुद्र की हवाएं जोर से आई और मेरे चादर को उड़ाकर उन्होंने साध्वी के ऊपर गिर दी और समुद्र की हवाओं को कोई भी पता नहीं, कि कौन पुरुष हैं और कौन स्त्री। और समुद्र की हवाओं को यह भी पता नहीं कि साध्वीयां पुरुष के कपड़ों से बहुत भयभीत होती है। लेकिन साध्वी तो भयभीत हो गई, लेकिन मेरे सामने उसकी यह भी हिम्मत न पड़ें कि वह मुझसे कहें कि अपनी चादर को रोकिए और फिर मैं तो चादर को उ. डा भी नहीं रहा था, इसलिए रोकने का मालिक भी कौन था। हवाएं उड़ा रही थी, हवाएं जाने, मैं भी चुप बैठा देखता रहा, आखिर उसकी बर्दा–धात के बाहर हो गया, उसने मुझसे कहा, माफ करिए! पुरुष का चादर हमें नहीं छूना चाहिए। मैंने उनको पूछा आप आत्मा की बातें कर रही थी और कह रही थी कि हम तो शरीर नहीं है आत्मा है। बात तो यह हो रही है कि हम शरीर नहीं है, आत्मा है और मामला यहां अटका हुआ है कि पुरुष के ऊपर जो चादर पड़ी है, वह भी पुरुष हो गई। चादर भी पुरुष और स्त्री हो सकती है, बात आत्मा की है, अटकाव चादर पर है।
मैंने उनसे निवेदन किया, आप भूल में है, आपको शायद पता भी न होगा कि इस पुरुष की चादर में जो आपको भय मालूम हो रहा है, यह भय बड़ा अचेतन है, पुरुष से दूर रहने की जो निरंतर कोशिश की है उससे यह भय पैदा हुआ है। यह चादर का इसमें कोई हाथ नहीं है, इसमें पुरुष का भी कोई हाथ नहीं है, पुरुष के साथ जो दीवाल खड़ी की है निरंतर। पुरुष के प्रति जो घृणा और द्वेष और दूरी का भाव पैदा किया है, जो भय पैदा किया है, वह भय इतना मन में जाकर गहरा बैठ गया है, वह आकर्षण इतना गहरा हो गया है निषेध से कि आज पुरुष का चादर भी वही अर्थ रखता है, जो कोई भी, कोई भी ऐसी बात अर्थ रखती है, जो कि काम से और सैक्स से संबंधित होती है। आज पुरुष के चादर में भी वही अर्थ आ गया, यह अर्थ पुरुष की चादर में कहीं भी नहीं है। यह दबे हुए मन में, दमित मन में, दबाई गई सेक्सुअलिटी में है, दबाए गए यौन में है, यह सारा भाव वहां बैठा है और उसको कोई नहीं देख रहा है, वह बिलकुल अचेतन है, वह बिलकुल अचेतन काम कर रहा है। हमारा अचेतन मन बड़े अजीब-अजीब ढंग से काम करता है, जिनका हमें खयाल भी नहीं है। चौबीस घंटे हम उस भांति जी रहे हैं और हमारे कर्मों का, हमारे विचारों का, हमारे भावों का एक अचेतन प्रवाह है, यांत्रिक प्रवाह है, जिसका हमें कोई बोध नहीं कि यह क्या हो रहा है। ऐसे चित्त को लेकर क्या कोई सत्य की खोज पर निकल सकता है। ऐसे चित्त को लेकर क्या कोई स्वयं को जानने की यात्रा पर निकल सकता है। ऐसे चित्त को लेकर आत्मज्ञान संभव है, नहीं, ऐसे चित्त को लेकर आत्मज्ञान इसलिए संभव नहीं है कि जिसे अभी अपने चित्त का ही ज्ञान नहीं है उसे आत्मा का ज्ञान कैसे हो सकेगा।

तो फिर क्या करें, एक विकल्प है जो हजारों वर्ष से हमें सिखाया गया है कि ऐसे चि त्त का दमन करों। अगर क्रोध उठता है, तो क्रोध को हटाओ और क्षमा करो। हमें सि खाया गया है कि क्षमा परम-धर्म है, क्रोध छोड़ना चाहिए और क्षमा अंगीकार करनी चाहिए, सैक्स छोड़ना चाहिए और ब्रह्मचर्य को उपलब्ध होना चाहिए, असत्य छोड़ना चाहिए सत्य को पाना चाहिए, घृणा छोड़नी चाहिए प्रेम को पाना चाहिए। लेकिन मैं आपसे क्या निवेदन करूं, जो अभी अपने क्रोध का मालिक नहीं है, वह क्रोध को छोड़े गा कैसे। छोड़ने के लिए मालकियत चाहिए और जो क्रोध का ही मालिक नहीं है, वह क्षमा का मालिक कैसे हो सकता है। जो अभी अपने जीवन की सामान्य वृत्तियों को जानता भी नहीं है कि वे क्या हैं पूरी-पूरी। वह उन्हें छोड़ेगा कैसे, छोड़ तो नहीं सक ता, दबा सकता है, सप्रेस कर सकता है, दमन कर सकता है, जबरदस्ती उनके ऊपर बैठ सकता है और जो आदमी अपने भीतर किन्हीं चीजों को जबरदस्ती दबा लेता है , उसका जीवन नरक हो जाता है। क्योंकि जिन चीजों को वह दबाता है, वह उभरना चाहती है, निकलना चाहती है, वह अपनी अभिव्यक्ति की मांग करती है तो उन्हें र ोज-रोज दबाना होता है, सुबह से सांझ, रात से सुबह दबाना होता है और फिर भी वह मौका पाकर रोज-रोज निकलते रहते हैं। अच्छे लोग इसीलिए बहुत बुरे सपने देख ते हैं, जब नींद में वे सो जाते हैं और उनकी दबाने की ताकत सो जाती है तो बैठी हुई सारी प्रवृत्तियां उभरने लगती है। जिन्होंने दिनभर उपवास किया है, वे रात-भर स पनों में भोजन करते हैं। यह स्वाभाविक, इसमें कुछ भी अस्वाभाविक नहीं है, क्योंकि दिनभर जिस वृत्ति को दबाया है, जब तक हम जागे रहते हैं, दबाए रखते हैं लेकिन जब हम सो जाएंगे तब क्या होगा। हम सो जाएंगे दबी हुई वृत्ति एकदम से जोर से ब ाहर आ जाएगी। जिस वृत्ति को दिन में दबाया है वह स्वपन में वापस लौट आएगी। ि जस वृत्ति को जवानी में दबाया है, वह बुढ़ापे में वापस लौट आएगी क्योंकि जवानी में दबाने की ताकत होती है, बुढ़ापे में ताकत कम हो जाएगी। इसलिए जो लोग युवाव स्था में दमन करेंगे, बुढ़ापे में उनका चित्त अत्यंत रोगों-पीड़ित और परेशान हो जाएग ा। स्वाभाविक है, दबाने की ताकत कम हो जाएगी फिर वे वृत्तियां जो दबी है उनका क्या होगा और एक बड़ा मजा है कि जिस वृत्ति को हम जितना दबाते हैं, वह ताक त इकट्ठी करती है। वह रसिसटेंस से, विरोध से उसमें बल आता है, उसमें ताकत इ कट्ठी होती जाती है। वह और ताकतवर हो जाती है और ताकतवर हो जाती है। इस लिए तो कहा जाता है कि जो आदमी कभी क्रोध न करता हो अगर वह क्रोध कर लें तो उसका क्रोध बहुत खतरनाक होता है। दुनिया में जो लोग हत्याएं करते हैं, वो अकसर वो लोग नहीं होते जो रोज-रोज क्रोध करते हैं, वो लोग, वो लोग होते हैं, जो बहुत मु–ध।कल से क्रोध करते हैं। जो लोग मरडररस होते हैं दुनिया में, हत्यारे होते हैं वो लोग नहीं होते, जो छोटी-छोटी बात पर क्रोधित हो जाते हैं, छोटी-छोटी बात पर क्रोधित होने वाले लोगों ने आज तक कोई हत्या नहीं की। चूंकि उनके पास इतना क्रोध कभी इकट्ठा नहीं हो पाता कि किसी आदमी की हत्या कर दें, इतना पा गल होने का वेग उनके पास नहीं होता। वह तो रोज-रोज बिखर जाता है उनका क्रो

ध, रोज निकल जाता है। लेकिन जो लोग अपने क्रोध को इकट्ठा करते रहते हैं, दबा
ए रहते हैं, वे बड़े खतरनाक लोग हैं। इसीलिए तो देखा होगा, अगर दो धर्मों के लो
गों में झगड़ा हो जाए, तो जिनको हम समझते थे कि रोज मस्जिद जाकर नमाज पढ़
ते हैं, बड़े शांत हैं, रोज पांच दफा नमाज पढ़ते हैं। जिनको हम सोचते थे बड़े भले अ
ादमी है, सुबह से गीता पढ़ते हैं, जिनको हम सोचते थे बहुत भले आदमी है, रोज मं
दिर जाते हैं। वो ही लोग सबसे जघन्य हत्यारे और पापी सिद्ध होते हैं, इसका कोई
और कारण नहीं है। उसका कारण साफ और सीधा है, वृत्तियों को दबा लिया गया है
तो कोई मौका मिल जाए उनके निकास का तो फिर बड़ी कठिनाई हो जाती है।
हिंदुस्तान, पाकिस्तान के झगड़ों में, हिंदू-मुसलमान के दंगों में यही हुआ। जिन लोगों
ने दबाया हुआ था वे बड़े खतरनाक साबित हुए, बहुत खतरनाक साबित हुए। ये जो
वृत्तियां हम दबाते हैं, इनसे वृत्तियां नष्ट नहीं होती, बल्कि चित्त आत्मद्वंद में पड़ जा
ता है, सैल्फ कानफलिक्ट में पड़ जाता है और जिस आदमी का मन अपने भीतर द्वंद
ग्रस्त है, उसकी द्वंद में ही शक्ति समाषत हो जाती है। उसके पास परमात्मा तक या
त्रा करने के लिए शक्ति भी नहीं बचती और हम सारे लोग द्वंद में ग्रस्त हैं। हमने ना
मालूम कितनी बातों को दबा रखा है, हमने न मालूम कितनी बातों को अपने भीतर
छिपा रखा है। कि अगर आज हमारे हृदय के द्वार खोल दिए जाएं तो जैसे नर्क के
दरवाजे खुल जाएं। हमारे भीतर से क्या-क्या निकलेगा, कहना कठिन है। हमारे भीतर
कौन-सी बातें उठेंगी, खयाल करना कठिन है।

एक रात एक गांव में एक मां और उसकी बेटी एक बगीचे में मिली। उन दोनों मां
और बेटी को रात में नींद में से उठकर चलने की बीमारी थी, कोई चार बजे होंगे।
वे दोनों नींद में उठकर अपने बगीचे के पीछे पहुंच गई। दोनों नींद में थी, नींद में ही
चलने की उन्हें बीमारी थी। जैसे ही मां ने अपनी बेटी को देखा, वह चिल्लाई, दुष्ट!
तूने ही मेरी सारी युवावस्था छिन ली, मेरा सारा यौवन, मेरा सारा सौंदर्य तूने ही ि
छन लिया, तू तो युवा हो गई और मैं बूढ़ी हो गई। काश तू पैदा हुई न होती और
जैसे ही उस लड़की ने अपनी मां को देखा, उसने कहा चुड़ैल बूढ़ी औरत तू मेरे जीव
न में सबसे बड़ी बाधा है। मेरे प्रेम में मेरे प्रेम के विकास में तू दीवल की तरह खड़ी
है। तुझे जिंदा रहने का अब क्या हक है, क्या जरूरत है, तू मर जाती तो अच्छा हो
ता। और तभी मुर्गों ने आवाज दी और उन दोनों की नींद खुल गई, नींद खुलते ही
बूढ़ी औरत ने कहा, षयारी बेटी तू इतनी जल्दी क्यों उठ आई, कहीं सद(न लग जा
ए। सुबह ठंडी हवाएं और उस लड़की ने अपने मां के पैर छुए और कहा, हे षयारी
मां, हे पू य मां। आप क्यों उठ आई आपकी तो तबीयत रात खराब थी, इतनी जल्द
ी उठ आना उचित नहीं है आप अंदर चलें और विश्राम करें। जो उन्होंने नींद में कहा
और जो जागकर कहा, उसमें जमीन-आसमान का फर्क है। लेकिन जो नींद में कहा,
वह सच्चाई के यादा करीब है, उन्होंने निरंतर यह अनुभव किए होंगे, ये बातें जो
नींद में कहीं लेकिन इनको दबा लिया होगा। यह भीतर दब गई होंगी, भीतर पड़ी र
ही होंगी, नींद में निकल आई है।

इसीलिए तो यह होता है हम इतने लोग यहां अच्छे लोग बैठे हुए हैं। हम सारे लोगों को शराब पिला दी जाए, हमसे क्या निकलेगा पता है। क्या आप सोचते हैं कि शराब में कोई ऐसी चीज होती है कि हमारे भीतर बुरी चीजों को पैदा कर दें, गलती में हैं आप। शराब में ऐसी कोई चीज नहीं होती, शराब में तो केवल इतना ही गुण होत ा है कि आपके होश को सुला देती है, तो जिस चीज को आपने दबा रखा है, वह नि कलना शुरू हो जाती है। शराब बुरी बातें पैदा नहीं करती। शराब तो केवल उस दर वाजे को सैंसर को, वह जो हमने बिठा रखा है पहरेदार जो निकलने नहीं देता चीजों को, उसको सुला देती हैं। उस बेहोशी में सब भीतर से निकलना शुरू हो जाता है। एक भले आदमी को जो भजन गा रहा हो शराब पिला दीजिए, वही आदमी गाली दे ने लगता है। शराब कहीं भजन को गाली बना सकती है, शराब में कोई बात ही नहीं है उसमें कोई केमिकल नहीं है जो भजन को गाली बना दें। लेकिन भजन जो आदमी कह रहा था, वह ऊपर से कह रहा था और गालियां भीतर इकट्ठी थी। शराब पीते से ऊपर का आदमी सो गया, भीतर का आदमी बाहर आ गया। यह जो भीतर हम दबाए हुए, यह नष्ट नहीं होता, यह समाषत नहीं होता, यह भीतर मौजूद है। यह ह मेशा मौजूद है और हमेशा काम कर रहा है भीतर से, दमन से, सप्रेशन से, कोई चि त्त परिवर्तित नहीं होता, सिर्फ दो हिस्सों में बंट जाता है। एक अच्छा चित्त बन जाता है जो हमने सम्हाल लिया और एक बुरा चित्त जो हमारे भीतर बैठ जाता है। और इन दोनों के भीतर जो द्वंद चलता है, उसमें हम मर जाते हैं, जैसे मेरे दोनों हाथों क ो मैं लड़ाऊं तो कौन जीतेगा, कोई जीत सकता है। बायां हाथ जीतेगा कि दायां हाथ जीतेगा, कोई भी नहीं जीत सकता। क्योंकि दोनों हाथ मेरे हैं, कौन जीत सकता है, दोनों के पीछे ताकत मेरी है। मेरे दोनों हाथ लड़ेंगे, न तो कोई जीतेगा, न कोई हा रेगा। लेकिन हां, दोनों के लड़ाने में मैं बर्बाद हो जाऊंगा। मेरी ताकत नष्ट हो जाएगी । दोनों चित्त मेरे हैं वह जो चेतन में मैंने सोच रखा है और जो मैंने दबा रखा है वह दोनों मेरे हैं उनकी लड़ाई से क्या होगा, उनकी लड़ाई से कोई जीतने वाला नहीं है। उनकी लड़ाई से मैं समाषत हो जाऊंगा और नष्ट हो जाऊंगा। इसलिए दमन कोई म ार्ग नहीं है, कोई रास्ता नहीं है। दमन से आज तक मनुष्य-जाति को कोई हित नहीं हुआ, तो क्या करें, क्या मैं यह कहता हूं कि जो हो, उसे होने दें। क्या मैं यह कहता हूं कि भोग में पागल होकर कूद जाएं। क्या मैं यह कहता हूं क्रोध आए तो क्रोध क रें। क्या मैं यह कहता हूं कि घृणा आ जाए, तो घृणा करें। नहीं यह मैं नहीं कह रहा हूं, मैं आपसे यह कह रहा हूं कि घृणा, क्रोध, प्रेम जो कुछ भी हमारे चित्त में है वह सभी यांत्रिक है। हमें उसका पता भी नहीं है, वह क्यों हैं और क्या है? और ऐसी ि स्थति में उसे बदला तो जा ही नहीं सकता, फिर क्या किया जा सकता है। उसे गैर-यांत्रिक बनाया जा सकता है, उसके प्रति जागा जा सकता है, उसके प्रति होश से भर ा जा सकता है। तो जीवन की जो-जो क्रियाएं यांत्रिक है, अगर वे सचेतन हो जाए त ो उनमें क्रांति अपने-आप होनी शुरू हो जाती है। क्योंकि सचेतन होने का अर्थ है जीव न की स्थिति के प्रति पूरी तरह जागरूक होना, होश से भरे होना, हम बेहोश यांत्रिक

होने का अर्थ बेहोश। यांत्रिक होने का अर्थ सोए हुए, हम करीब-करीब सोए हुए हैं, करीब-करीब बेहोश हैं। हमें कुछ भी पता नहीं है, यह सब क्या हो रहा है, क्यों हो र हा है।

इस बेहोशी में लिए गए कोई निर्णय काम के नहीं है, अगर आप बेहोश ही बने रहते हैं। क्योंकि बेहोशी में लिए गए निर्णय भी बेहोश होंगे और बेहोशी में लाई गई क्षमा भी बेहोश होगी। बेहोश में लाया गया प्रेम भी बेहोश होगा और इसलिए दिखाई तो पड़ेगा प्रेम, लेकिन परिणाम बड़े खतरनाक होंगे। हम सबको इस बात का शायद अनु भव भी होगा, जो आपको प्रेम करता है, वह आपके गले में हाथ डालता है, बड़े प्रेम की बातें करता है, लेकिन थोड़े दिनों बाद पता चलता है, उसके हाथ प्रेम के नहीं थे, आपके गले की जंजीरें बन गई। आप जिसको प्रेम करते हैं; पहले बड़ी मधुर और मीठी बातें और बड़ी कविताएं करते हैं और थोड़े दिनों बाद जिसको आपने प्रेम किय ा उसे पता चलता है कि आप तो उसके प्राण के ग्राहक हो गए, आप तो उसकी पर तंत्रता बन गए। आपने तो सब तरफ से उसे कस लिया, प्रेम का नाम लिया था, पोजे शन। प्रेम का नाम लिया था और प्रभुत्व कायम कर लिया। सारी दुनिया में यह हो र हा है, बेहोश आदमी प्रेम भी करेगा तो उसका प्रेम भी बहुत खतरनाक है, क्योंकि बे होश आदमी की किसी बात का कोई भरोसा नहीं है कि वह क्या कर रहा है और क या नहीं कर रहा है।

एक फकीर, फकीर होने के पहले एक बादशाह की लड़की से प्रेम करता था। एक सु बह उससे विदा होते वक्त उसने उस लड़की को कहा, तुझसे यादा सुंदर, तुझसे या दा श्रेष्ठ और कोई स्त्री पृथ्वी पर नहीं है। वह युवती प्रसन्न हुई होगी, क्योंकि युवक युवतियों से हमेशा ही यही बातें कहते रहे हैं, सभी युवक, सभी युवतियों से। वह युव ती प्रसन्न हुई होगी, बहुत खुश हुई होगी, उसकी आंखों में खुशी भर गई, उसके होंठ मुस्कुराहट से भर गए। लेकिन वह आदमी अजीब रहा होगा, वह उतर रहा था सीि. ढयां वापिस अपने घर जा रहा था, रुक गया और उसने कहा कि सुन, तुझे मैं एक और बता दूं। मैंने यह तो कह तो दिया लेकिन कहने के बाद मुझे खयाल आया कि यह बात तो मैं और स्त्रियों से भी पहले कह चुका हूं। यही बात मैंने और स्त्रियों से भी कही है तुझसे पहले। तेरी मुस्कुराहट देखकर मुझे यह खयाल आया, कि मैं बिलकु ल अनजाने में यह बात और स्त्रियों से भी कही है, तुझसे भी कह रहा हूं। इसमें कोई अर्थ नहीं है, मुझे कोई होश ही नहीं है कि मैं क्या कह रहा हूं और क्या कर रहा हूं । हम क्या कह रहे हैं, क्या कर रहे हैं, क्या सोच रहे हैं? इसका होश है, अगर होश हो तो जिंदगी दूसरी हो जाएगी, क्योंकि होश में आदमी वही काम नहीं कर सकता, जो बेहोशी में करता है।

एक बादशाह की सुबह-सुबह एक राजधानी में सवारी निकलती। चौरस्ते पर खड़े होक र एक आदमी बादशाह को गाली देने लगा। उस आदमी को पकड़कर बंद करवा दिय ा गया और दूसरे दिन बादशाह के सामने लाया गया। और बादशाह ने उससे पूछा तू ने किसलिए गालियां दी मुझे। मुझे याद भी नहीं आता कि मेरे द्वारा तेरा कभी कुछ

बुरा हुआ हो। तूने क्यों गालियां दीं मुझे। उस आदमी ने कहा, क्षमा करें! मैं शराब प
ीए हुए था, मैं अपने होश में नहीं था। तो जिसने आपको गालियां दीं, वह दूसरा ही
आदमी था। आप मुझसे त9ब0शील न करें, आप मुझसे पूछताछ न करें। जितने आप
को गालियां दीं, वह दूसरा ही आदमी था। वह बेहोश था, मैं होश में हूं, मैं आपके पै
र छूना चाहता हूं, आपको नमस्कार करना चाहता हूं। मैंने वह गालियां आपको नहीं
दीं, वह दूसरा ही आदमी रहा होगा, अब तो मेरा होश वापिस आ चुका है। जो मैंने
बेहोशी में किया, वह मैं होश में नहीं कर सकता हूं। कोई आदमी जो बेहोशी में कर
ता है, होश में नहीं कर सकता हैं। अगर भीतर चित्त पूरा होश से भर जाए, तो आ
पका सारा जीवन बदल जाएगा। आज तक कोई आदमी होशपूर्वक क्रोध नहीं कर सक
ा हैं। आप भी नहीं कर सकेंगे, यह असंभव है, यह इंपोसिबिलीटी है कि कोई आदमी
होशपूर्वक क्रोध कर सकें, कोशिश करके देखें। क्रोध आ रहा हो और आप होशपूर्वक
क्रोध करके देखें कि मैं पूरे बोध से भरा रहूं कि यह क्रोध आ रहा है और मैं क्रोध
कर रहा हूं। आप पाएंगे जिस मात्रा में यह बोध होगा, उसी मात्रा में क्रोध मंदा और
धीमा हो जाएगा।

मेरे एक मित्र को क्रोध की बीमारी थी और उन्होंने मुझसे पूछा, मैं क्या करूं? क्योंकि
वो बहुत उपाय कर चुके थे, कोई उपाय कारगर नहीं हुआ था। हो भी नहीं सकता,
किसी ने कहा, क्रोध आए तो राम-राम जपो। लेकिन जो आदमी होश में नहीं है, व
ह राम-राम कैसे जपेगा और राम-राम जपेगा तो वह भी क्रोध में जपेगा और क्रोध क
ा जप खतरनाक है। उससे कोई मतलब नहीं है, वह राम-राम वैसे ही जपेगा, जैसे ि
कसी को पत्थर मार रहा हो गुस्से में। उससे क्या फर्क पड़ने वाला है, उसके भीतर क्र
ोध उबल रहा है। मैंने उनको कहा, एक छोटा सा काम करें, एक कागज में लिख क
र अपने खीसे में रख दें बड़े-बड़े अक्षरों में कि अब मुझे क्रोध आ रहा है। उसे खीसे
में ही रखे रहे हमेशा और जब भी क्रोध आए, कृपा करके एक दफा पढ़ लें और वा
पस रख लें, फिर जो भी करना हो करें। और उन्होंने कहा, इससे क्या होगा। उन्होंने
कहा, मैंने उनसे कहा कि यह मुझसे मत पूछिए। मुझे महीने-दो-महीने बाद आकर बत
ाइए, क्या होगा। वे दो महीने बाद वापिस लौटे और मुझसे बोलें यह तो बड़ी हैरानी
की बात हैं। जैसे मैं खीसे की तरफ हाथ ले जाता है, भीतर मैं पाता हूं क्रोध गया,
वह नहीं हैं। जैसे मैं कागज पढ़ता हूं कि अब मुझे क्रोध आ रहा है। मैं पाता हूं कि म
ामला क्या हो गया है, वह क्रोध जैसे एकदम राख हो गया।

जीवन में एक अदभुत रहस्य की बात है। अगर हम चित्त के प्रति होश से भर जाए,
तो न तो क्रोध संभव है, न घृणा संभव है। अगर हम चित्त के प्रति होश से भर जाएं
तो क्षमा अनायास संभव हो जाती है, प्रेम अनायास प्रवाहित होता है। यह लक्षण है
: बेहोशी का लक्षण है; क्रोध, घृणा, मोह। होश का लक्षण है; प्रेम, सत्य, अमोह, क्ष
मा। ये होश के लक्षण हैं। आप क्रोध को क्षमा में नहीं बदल सकते। लेकिन बेहोशी अ
गर होश में बदल जाए तो क्रोध अपने आप क्षमा में बदल जाता है। क्रोध से क्षमा के
लिए सीधा कोई रास्ता नहीं है, लेकिन बेहोशी से होश की तरफ सीधा रास्ता है।

महावीर से किसी ने पूछा था, आप किस को मुनि कहते हैं, कौन है साधु। तो महावी र ने नहीं कहा कि मैं उसको मुनि कहता हूं जो सब कपड़े छोड़कर नग्न हो जाता है। महावीर ने नहीं कहा कि मैं उसको मुनि कहता हूं, जो जैन धर्म को मानता है। महा वीर ने नहीं कहा है कि मैं उसको मुनि कहता है, जो रोज मंदिर जाता है, प्रतिक्रमण करता है। महावीर ने नहीं कहा है कि मैं उसको मुनि कहता हूं, जो मांस नहीं खात ा, हिंसा नहीं करता, यह कोई भी बातें महावीर ने नहीं कही। महावीर ने कहा, मैं उ सको मुनि कहता हूं, जो जागा हुआ है, सोया हुआ नहीं है। असुता मुनि है, जो सोया हुआ नहीं है वह मुनि है। बड़ी अजीब बात कहीं, पर बड़ी अर्थपूर्ण है। जो सोया हुअ ा नहीं, जो बेहोश नहीं है, वह साधु है। जो सोया हुआ है, बेहोश है, चाहे मंदिर जाए , चाहे वे–ध ।यालय जाए, कोई फर्क नहीं है उसके सोने में। उसका सोना एक-सा है, वह दोनों जगह बेहोश जा रहा है, उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। कैसे हम जाग जाए, तो इस जागरण के लिए पहली तो बात यह जानना जरूरी है कि हम यंत्र है और सो ए हुए हैं। क्योंकि वही आदमी जाग सकता है, जो पहले पक्के रूप से यह समझ लें ि क मैं सोया हुआ हूं, क्योंकि जिसको यह भ्रम है कि मैं जागा ही हुआ हूं, वह जागेगा कैसे? इसलिए मैंने आज की सुबह में, इस चर्चा पर जोर दिया है कि आप साए हुए हैं, मनुष्य सोया हुआ है, बेहोश है।

यह पहले बहुत स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ जाना चाहिए कि हम बेहोश हैं। तो शायद इ स बेहोशी की पीड़ा से ही हमारे भीतर जागरण का क्रम शुरू हों और बड़े मजे की ब ात तो यह है, कभी आपने खयाल किया, रात आप सपना देखते हैं, तो आपको पता नहीं चलता है कि आप सपना देख रहे हैं। आपको लगता है जो देख रहे हैं वह सच हैं। सुबह जागने पर पता चलता है कि सपना देखा और सच नहीं था। लेकिन सपने में तो सपना सच मालूम होता है तो अभी हम जिस हालत में है, मालूम होता है वह सच है। और कोई पता नहीं चलता है कि वह झूठ है। और न पता चलने का एक कारण यह भी है कि हमारे आस-पास जितने लोग है वे भी सभी उसी हालत में हैं, तो ऐसा लगता है कि यह तो मनुष्य की सामान्य स्थिति है, यही जागरण है। सभी ल ोग हमें एक जैसे हैं और बल्कि अक्सर यह हो जाता है, अगर एक आदमी आपके भी तर ऐसा आ जाए जो जागा हुआ है, तो आप उसकी हत्या कर देंगे, यह आदमी गड़ बड़ है।

नहीं तो क्राइस्ट को कोई काहे के लिए सूली पर लटकाए और गांधी के लिए कोई का हे के लिए गोली मारें और सुकरात को जहर क्यों पिलाए, यह गड़बड़ आदमी हैं, ये बीच में आ जाते हैं सोए हुए लोगों के और ऐसी बातें कहने लगते हैं, जो सोए हुए ि कसी आदमी की समझ में नहीं आती, क्योंकि ये क्या कह रहे हैं, क्या गड़बड़ बात कर रहे हैं। क्राइस्ट कहते हैं जो तुम्हारे बाएं गाल पर चाटा मारें, तुम दायां उसके सा मने कर दो, यह बड़ी फिजूल की बात कह रहे हैं, यह आदमी पागल है। क्योंकि हम तो जानते हैं कि जो आदमी, इृध!ट मारें, उसको पत्थर से जवाब दो, यह तो हम जानते हैं और हम सब इसी बात को जानते हैं। जो आदमी एक आंख फोड़ दें, उसक

ी दोनों फोड़ दो और यह एक पागल आदमी है, क्राइस्ट यह कहता है, बाएं गाल पर कोई चांटा मारें, तो दायां सामने कर दो, खत्म करों इस आदमी को, यह कोई बीमार या कोई पागल या कोई गड़बड़ या कोई अजनबी, कोई स्ट्रेंजर, हमारे बीच पैदा हो गया। यह हमारे बीच का नहीं है, तो हम सारे लोग क्योंकि एक जैसे हैं, जब एक ही बीमारी सब लोगों को हो जाए, तो बीमारी का पता नहीं चल सकता है। इसलिए बीमारी का कोई पता नहीं चलता।

एक गांव में एक बार ऐसा हो गया था, एक जादूगर आया और उसने एक कुएं में एक पुड़िया डाल दीं और कहा, इस कुएं का पानी जो भी पीएगा, वह पागल हो जाएगा। उस गांव में दो ही कुएं थे : एक गांव का कुआं था और एक राजा का कुआं था। तो गांवों के लोगों को तो कितनी देर तक षयास सहते, षयास नहीं सही जा सकती, पागलपन सहा जा सकता है। तुम कितनी देर तक षयासे रहते, सांझ होते-होते पानी पीना ही पड़ा। सारा गांव सूरज ढलते-ढलते पागल हो गया। राजा उसका वजीर उसकी रानी, उन्होंने नहीं पिया, उनका अपना कुंआ था, वे उससे पानी पीए। वे बड़े प्रसन्न थे कि हम अच्छे बच गए, लेकिन सांझ को उन्हें पता चला कि प्रसन्नता बड़ी महंगी पड़ गई। सारे गांव के लोग विचार करने लगे कि मालूम होता है, राजा का दिमाग खराब हो गया है। सारे गांव को दिमाग तो खराब हो गया था। राजा अजनबी मालूम होने लगा कि ये बातें क्या कर रहा हैं। सारे गांव के लोग और ही ढंग के हो गए थे, राजा और ढंग का रह गया, अकेला पड़ गया। सारे गांव के लोगों ने सभा की और कहा कि राजा को बदलना होगा, नहीं तो रा य बर्बाद हो जाएगा। यह आदमी तो पागल हो गया मालूम होता है, राजा बहुत घबड़ाया, उसने अपने वजीर को पूछा, 'अब हम क्या करें, मामला तो उलटा है।' लेकिन इनकी भीड़ यादा हैं, इनकी संख्या यादा हैं और संख्या बल देती हैं कि संख्या जिसकी यादा हैं वह सच हैं। इसलिए तो सारे दुनिया के धर्म अपनी-अपनी संख्या बनाने में लगाते हैं—हिंदू को ईसाई बनाओ, मुसलमान बनाओ, ये बेवकूफी किसलिए चलती हैं। इसलिए चलती हैं जिसकी संख्या यादा है, वह सच हैं, संख्या सबूत हैं सच्चाई का। इनकी संख्या यादा हैं, क्या करें? वजीर ने कहा, एक ही रास्ता हैं, हम भी उसी कुएं का पानी पी लें नहीं तो जिंदा रहना मुि–ध।कल हो जाएगा। वे तीनों गए और उन्होंने बड़ी शांति से भगवान का नाम लेकर उस कुएं का पानी पी लिया। उस राज उस गांव में बड़ा जलसा मनाया गया, नृत्य हुए, गान हुए, स्वागत हुआ और गांव के लोगों ने कहा, धन्य है परमात्मा तेरी कृपा हमारे राजा का दिमाग तूने ठीक कर दिया। राजा ठीक हो गया था, बस्ती फिर चलने लगी।

यह जो सामूहिक रोग है जीवन का बेहोशी, इसलिए इसका पता नहीं चलता कि हम बेहोश की तरह जी रहे हैं। किसी चीज पर हमारा कोई वश, कोई जागरण नहीं है और ऐसी स्थिति में कोई भी परिवर्तन नहीं हो सकता। लाख उपाय करें, कोई फर्क नहीं होगा, फिर क्या करें, एक ही उपाय, एक ही मार्ग है और वह यह है—उस कुएं का पानी पी लें, जहां से जागरण आता है। उस कुएं का पानी न पीएं, जहां से बेहोशी

और पागलपन आता है। वह कुआं हमारे भीतर है, उसी कुएं को मैं ध्यान कहता हूं, जिससे जागरण आता है, जिससे होश आता है, जिससे अवेयरनेस पैदा होती है, जिस से आदमी जागता है और अपने जीवन को, चित्त को समझना शुरू करता है। इस हो श के कुएं का पानी पीएं, तो जरूर चित्त के प्रति एक होश आएगा और एक परिवर्त न होगा।

कैसे जागें, पहला सूत्र–जो मैं आज सुबह आपसे कह रहा हूं, वह यह है कि इस बात को ठीक से समझ लें कि सोएं हुए हैं, जागरण की शुरुआत समझ लीजिए हो गई। क योंकि नींद में अगर आपको यह पता चल जाए कि मैं सपना देख रहा हूं, तो आप स मझ लेना कि नींद टूटनी शुरू हो गई, नहीं तो यह पता नहीं चल सकता था। अगर नींद में यह पता चल जाए कि जो मैं देख रहा हूं, यह सपना है तो समझ लेना कि नींद टूट गई। नहीं तो यह पता नहीं चल सकता था कि यह सपना है। अगर आपको यह खयाल आ जाए, यह रिमेमबरिंग, ये स्मृति कि नि–ध्चित ही सारा जीवन तो सोया-सोया यांत्रिक-यांत्रिक है। इसमें मैं कहा हूं, इसमें होश कहा हैं, यह जो मैं कर रहा हूं, क्या मैं सच में जानकर कर रहा हूं, यह जो हो रहा है, क्या मैं इसका करने का मालिक हूं। अगर यह बोध आ जाए, तो आप समझ लेना पहली किरण टूट चुक ी है, आपका जागना शुरू हो गया है। इसलिए सुबह ये बातें कहीं, इनको आप सोचेंगे , मेरे कहने से कुछ होता नहीं। यहां से लौटकर आप विचार करेंगे कि आपकी जिंदग ी भी यांत्रिक तो नहीं है, मैकेनिकल तो नहीं है, होशपूर्वक जी रहे हैं, जो कर रहे हैं उसमें जागरण है, होश है, बोध है या कि यूं ही किए चले जा रहे हैं। इसको सोचन ा, इसको जांचना एक-एक काम को पकड़कर देखना कि कल जो मैंने क्रोध किया था, वह मैंने जानते हुए किया था या गैर जानते हुए किया था। जिसके प्रति मेरे मन में घृणा भर गई हैं, वह जानते हुए भर गई हैं या अनजाने भर गई हैं। जिस आदमी पर मैं शक करता हूं, संदेह करता हूं, वह मैं जानकर कर रहा हूं, अचानक कर रहा हूं, जिस आदमी को मैं बुरा समझ रहा हूं, वह मैं जानता हूं कि बुराई क्या है, मैं उस पूरे आदमी को जानता हूं कि बुरा होना क्या है। कौन किसको जानता है, कौन किस को पहचानता है, जिसके साथ हम जिंदगी भर रहते हैं, उसको भी पहचानना कठिन है, तो मैं जजमेंट लेने वाला कौन हूं। मैं निर्णय लेने वाला कौन हूं, कि मैं कहूं फलां आदमी बुरा है, फलां आदमी चोर है, फलां आदमी बेईमान हैं, यह कहीं सब मैं बेहो शी में तो नहीं कर रहा हूं और हम कर रहे हैं। अगर मैं आपके पास आऊं और कहूं कि फलां आदमी बहुत अच्छा आदमी है, बड़ा ईमानदार है, आप कहेंगे कहां ईमानदा री रखी हैं इस कलियुग में। ईमानदारी आसान है क्या? आपको पता नहीं होगा, वह भी आदमी जरूर बेईमान होगा, सब बेईमान है। अगर मैं आपसे कहूं कि फलां आदमी ईमानदार है, आप वि–ध्वास न करेंगे और आप पच्चीस दलीलें देंगे कि ईमानदार नहीं हो सकता, लेकिन अगर मैं आपसे कहूं फलां आदमी बेईमान है, आप कहेंगे नि –ध्चत होगा। आप एक भी विरोध में दलील नहीं देंगे, आपको पता है ऐसा क्यों हो रहा है, निंदा पर हम एकदम वि–ध्वास कर लेते हैं, प्रशंसा पर कभी भी नहीं, क्य

ों? अचेतन है यह बात, निंदा से हमें खुशी होती है, क्योंकि जब भी कोई आदमी नी
चा हो जाता है, हमको लगता है हम ऊंचे हो गए और जब भी किसी आदमी की प्र
शंसा होती है, हमको दुख होता है। कोई आदमी ऊपर होता है तो हम नीचे होते हैं।
इसका हमें पता ही नहीं कि हम यह क्या कर रहे हैं, जब कोई निंदा करता है एक
दम वि–ध।वास कर लेते हैं, निंदा पर कोई शक पैदा नहीं होता, कोई डाउट पैदा नह
ीं होता।

निंदा एकदम स्वीकृत हो जाती है, कोई किसी के बाबत कुछ भी कह दें, लेकिन किस
ी की प्रशंसा कभी स्वीकृत नहीं होती। हमारा चित्त बिलकुल अचेतन काम कर रहा है
, हम स्वीकार करने को राजी नहीं है, लेकिन क्या हम जानते हैं, हम क्या जानते हैं,
जिंदगी इतनी रहस्यपूर्ण है। कि निर्णय लेना कठिन है। तो हमारा एक-एक काम जां
चने की जरूरत है।

मैंने सुना है एक न्यूयार्क में, एक घर में, एक विवाह का जलसा हुआ। कोई दो सौ ि
मत्र मेहमान थे, आमंत्रित थे। मेहमान सब आ गए, भोजन शुरू होने को था कि एक
मेहमान ने अपने खीसे से एक बहुत खूबसूरत छोटी-सी पेटी निकाली और उसमें से ए
क सिक्का निकाला। सिक्का तीन हजार वर्ष पुराना इजिपत का सिक्का था, मिश्र का
सिक्का था। और उसने कहा कि मैंने इसे पच्चीस हजार रुपये देकर खरीदा हैं, एक रु
पये के सिक्के को, तीन हजार वर्ष पुराना है। यह सबसे यादा पुराना सिक्का हैं जो
उपलब्ध है। एक सिक्का और है इसी के समय का, बस ये दो ही सिक्के है एक सिक
का दुनिया में किसी और दूसरे आदमी के पास है। एक यह है मैंने खरीदा तो मैंने सो
चा कि शादी में ले चलूं मित्रों को दिखा दूंगा वे खुश होंगे। सिक्का हाथोंहाथ घूमने ल
गा, कुछ लोगों ने भीड़ लगा लीं और उससे पूछने लगे कितना पुराना है, किस राजा
के वक्त का है, किस धातु का बना है, सारी बातें इस पर क्या लिखा हुआ है और ि
सक्का घूमने लगा। आधा घंटे बाद सिक्का मिलना मु–ध।कल हो गया, वे ना मालूम
कहां खो गए। जिससे भी पूछा, उसने कहा मुझे मिला था, लेकिन मैंने पड़ोसी को देख
ने को दे दिया। मुझे कुछ पता नहीं, जिससे भी पूछा, उसने कहा मेरे हाथ में आया
था। मैंने देखा, फिर मैंने दूसरे को दे दिया, वहां भीड़ थी दो सौ लोगों की।

शादी का घर था, सिक्का कहां गया मु–ध।कल हो गया। सिक्का था कीमती, बड़ी
कठिनाई हो गई। शादी की रंग-रौनक उड़ गई, चोरी का मामला हो गया। सारे मेहम
ान इकट्ठे हो गए और उन्होंने कहा हमारे खीसे देख लिए जाएं, कपड़े देख लिए जाएं,
हमने तो लिया नहीं। यही तय हुआ कि सबके कपड़े देख लिए जाएं। लेकिन एक आ
दमी ने कहा कि मैं तो यहां मेहमान की तरह आया हूं, चोर की तरह नहीं। इतना
मैं कह सकता हूं, मैंने सिक्का नहीं लिया। लेकिन मेरे खीसे में कोई हाथ नहीं डाल स
कता। मैंने आपसे कहा भी नहीं था कि आप सिक्का दिखलाइए। इतना मैं कहता हूं,
मैंने सिक्का नहीं लिया। लेकिन मेरे खीसे में हाथ नहीं डालने दूंगा, मैं कोई चोर थोड़े
ही हूं।

सोच के डालना, यह पिस्तौल मेरे हाथ में है। तब तो बात और भी स्पष्ट हो गई। ह
म सब को भी स्पष्ट हो गई बात, साफ है। इस आदमी ने सिक्का ले लिया, पुलिया
को फोन करना पड़ा। लेकिन इसके पहले पुलिस आती एक और अदभुत घटना घट ग
ई। पुलिस को फोन किया गया, सारे घर के दरवाजे बंद कर दिए गए। झगड़ें की नौ
बत साफ थीं, उस आदमी को छूना ठीक नहीं था, वह गोली चला सकता था, अजीब
पागल था, लोग समझा भी रहे थे लेकिन वह राजी नहीं था और तभी एक नौकर
ने एक पानी के बर्तन को टेबल पर से उठाया और लोगों ने देखा कि उस बर्तन के न
ीचे वह सिक्का रखा हुआ है।

उस आदमी ने बेचारे ने सिक्का नहीं लिया था, सिक्का टेबल के ऊपर था। तो लोगों
ने कहा, तुम कैसे पागल हो, जब तुमने सिक्का नहीं लिया तो तुमने उपद्रव क्यों खड़ा
किया। और उसने अपने खीसे में हाथ डाला और उसी जैसा दूसरा सिक्का बाहर नि
काला, उसने कहा दूसरे सिक्के का मालिक हूं। यह जो आदमी कह रहा था कि दूसरे
सिक्का है वह मेरे पास है। मैंने भी सोचा कि चलो शादी में लेता चलूं और वहां दि
खा दूं। लेकिन इसने पहले दिखला दिया तो मैं चुप रह गया। अब कोई मतलब न था
दिखलाने का, लेकिन पांच मिनट पहले कौन मेरा वि–ध।वास कर सकता था कि यह
सिक्का चोरी का नहीं है। कौन वि–ध।वास कर सकता था, पांच मिनट पहले कौन
ऐसा आदमी होगा उन दो सौ लोगों में जिसने शक न किया हो कि इसने चोरी की।
लेकिन जिंदगी इतनी रहस्यपूर्ण है, जिंदगी इतनी मिस्टेरियस है। कि इस तरह के निर्ण
य लेने बिलकुल अचेतन, मैकेनिकल है। इनमें कोई होश नहीं है, ये निर्णय सजग और
जागरूक नहीं है तो जिंदगी में एक-एक चीज परखें जो हम विचार करते हैं। वह स
जग होकर विचार कर रहे हैं क्या उसके सारे पहलुओं को हम जानते हैं, क्या सारे र
हस्य से हम परिचित थे। जो हम काम कर रहे है, वह सजग होकर कर रहे हैं, जो
क्रोध, जो प्रेम, जो घृणा हमसे बह रही है, वह सजग है या बेहोश, जो हम सोच रहे
हैं, जो हम भाव कर रहे हैं, वह सजग है या बेहोश, इसकी खोज, इसकी पहचान,
इसकी परख, जितनी गहरी होगी उतना ही आपको दिखाई पड़ेगा कि आप बिलकुल
सोए हुए आदमी है। आप जागे हुए आदमी नहीं हैं और अगर यह दिखाई पड़ जाए,
तो बड़ी बात हो गई, क्योंकि यह दिखाई पड़ जाना, जागने का पहला सूत्र है। तो यह
निवेदन करता हूं आज की सुबह तो इस पर थोड़ा विचार करेंगे, खोजें। कल मैंने क
हा, ज्ञान से छुटकारा हो जाना चाहिए। आज मैं आपसे कहना चाहता हूं, यांत्रिकता से
छुटकारा हो जाना चाहिए। लेकिन यांत्रिकता से छुटकारा तभी हो सकता है, जब ह
म जान लें कि यह यांत्रिकता है। हमारा अहंकार इसको मानने नहीं देता, वह कहता
है, मैं और यांत्रिक, मैं हूं समझदार, मैं हूं होशियार, मैं हूं विचारशील, कौन कहता है
मैं यांत्रिक हूं। हमारा अहंकार मानने नहीं देता कि मैं यांत्रिक हूं। और जिसका अहंक
ार यह मानने नहीं देता, मैं यांत्रिक हूं, वह नि–ध।चत रहे, उसका अहंकार उसे सुल
ाए रखेगा और कभी जागने नहीं देगा। बहुत अपने प्रति, बहुत कठोर होने की जरूरत
है। दुनिया में हम दूसरों के प्रति तो बहुत कठोर हो जाते हैं, अपने प्रति बिलकुल न

हीं। अपने प्रति बहुत कठोरता से जांच करने की जरूरत है कि सच्चाई क्या है, क्या है सच्चाई मेरे चित्त की और अगर इसको देखेंगे तो कठिन नहीं है यह बात देख लेने की। जिंदगी में हमने जो कुछ किया है, वह हमसे हुआ हैं, हमने किया नहीं, हम उसके मालिक नहीं थे। हम बिलकुल बेहोश और अगर यह बात उठ जाए तो इससे बड़ी क्रांतिकारी कोई घटना नहीं होती मनुष्य के जीवन में। फिर इसके बाद कुछ हो सकता है, वह क्या हो सकता है इसकी बात मैं कल करूंगा। लेकिन आप यह देखेंगे तो ही वह हो सकता है। वह मेरे कहने से कुछ भी नहीं हो सकता। तो आखिरी सूत्र की बात मैं कल करूंगा। कल मैंने कहा, ज्ञान से छुटकारा चाहिए। आज मैं आपसे कहता हूं, यांत्रिकता से और कल मैं तीसरे सूत्र की बात करूंगा।

इस संबंध में जो भी प्र–ध्न होंगे, वह दोपहर और संध्या में बात करूंगा। अभी हम सुबह के ध्यान के लिए थोड़ी देर बैठेंगे, एक दस मिनट और उसके बाद सुबह की बैठक पूरी हो गई।

प्रिय आत्मन्,

कल और आज, मनुष्य के चित पर जो बंधन है, उनमें से दो बंधनों के तोड़ने के संबंध में हमने विचार किया; एक बंधन तो ज्ञान का बंधन है, हमेशा से यह कहा गया है कि मनुष्य अगर अपने अज्ञान को छोड़ सकें तो वह सत्य को पा सकेगा। लेकिन मैंने आपसे यह कहा, कि इसके पहले कि मनुष्य अपने अज्ञान को छोड़ें, जिस ज्ञान को उसने दूसरों से सीख लिया हैं, उस ज्ञान को छोड़ना और भी जरूरी है। उधार ज्ञान, अज्ञान से भी ज्यादा घातक है, जो ज्ञान स्वयं का नहीं है वह मुक्त नहीं करता, बल्कि बांट लेता है। ये संबंध में कल हमने चर्चा की—आज सुबह मनुष्य एक यंत्र है और उसे भ्रम है कि वह एक आत्मा जैसा व्यवहार कर रहा है। मनुष्य आत्मा हो सकता है, लेकिन है नहीं, मनुष्य एक सचेतन प्राणी हो सकता है, लेकिन है नहीं और जिसको यह भ्रम पैदा हो जाता है कि अभी ही वह आत्मा है, वह आत्मा की खोज में हमेशा के लिए पिछड़ जाएगा।

एक बीज है। बीज वृक्ष हो सकता है लेकिन वृक्ष है नहीं और किसी बीज को यह खयाल पैदा हो जाए, कि वह वृक्ष हो गया, तो फिर उस बीज के वृक्ष होने की सभी संभावना समाप्त हो गई। बीज को यह जानना ही होगा कि वह वृक्ष नहीं है, तभी उसके प्राणों में, वृक्ष बनने की अभिलाषा जागेगी, प्यास उठेगी और वह वृक्ष हो सकता है। बीज वृक्ष हो सकता है, है नहीं। मनुष्य एक जाग्रत आत्मा हो सकता है—लेकिन है नहीं। हमारा सामान्य जीवन अत्यंत यांत्रिक, मैकेनिकल है, उसका कांशसनेस है, उसका चेतना से अधिक कोई संबंध नहीं है। इस संबंध में सुबह हमने बात कीं।

इन दोनों चर्चाओं पर बहुत से प्रश्न यहां मेरे पास आए, उन पर थोड़ा सा विचार इस दोपहर हम करेंगे। सबसे पहले एक मित्र ने पूछा है, कि कहा जाता है, कि ध्यान से शांति मिलेगी, वह ठीक है। लेकिन यह भी कहा जाता है कि मरते समय अगर मन की दशा अच्छी हो तो भी आदमी मुक्त हो जाता है। अच्छी गति में पहुंच जाता है, शायद और भी एक मित्र ने पूछा है, अगर यह संभव है कि मरते समय चित्त की अच्छी दशा हो, तो फिर मरते समय के क्षणों को संभाल लेना उचित है, सारे जीवन क्या फायदा? या कि सारे जीवन चित को संभालना होगा। यह जो कहा जाता रहा है कि मरते समय चित की जैसी दशा होगी, अच्छी होगी, शुभ होगी, तो पर्याप्त है और इसलिए मरते वक्त गीता सुना दे, उपनिषद सुना दे, कुछ और सुना दे, तो जो मर रहा है उसकी आत्मा शुद्ध हो जाएगी और पवित्र हो जाएगी। ये बातें अत्यंत धोखे की हैं, अत्यंत झूठ और ये मनुष्य की अपने-आप को धोखा देने की जो प्रवृत्ति है, उसके सबूत है।

मृत्यु के क्षण में चित की दशा वही होती है, जो जीवन भर का सार संक्षिप्त होता है। जीवन भर चेतना में जिस भांति गति की है, उसका ही अत्यंत सारभूत मृत्यु के समय मनुष्य के समक्ष होता है। मृत्यु सारे जीवन का आंकलन है, मृत्यु है सारे जीवन का निचोड़, यह नहीं हो सकता है कि सारे जीवन हिंसा की है, मृत्यु के क्षण अहिंसा का विचार मन में आ जाए। यह असंभव है, मृत्यु तो है निष्कर्ष, पूरे जीवन का। यह नहीं हो सकता कि सारे जीवन घृणा की हों, क्रोध किया हों और मरते

क्षण चित्त प्रेम से भर जाए। इससे ज्यादा असंभव और कोई बात नहीं हो सकती। मृत्यु के क्षण में तो जीवन भर का जो जोड़ है, जीवन भर चित्त की जो दशा है, जो कनटीनयूटी है, जो क्रम है, वही अपने शिखर पर पहुंच जाएगा, जैसा मैंने कल आपको कहा, यह नहीं हो सकता कि बीज हम कड़वे बोए और फल मीठे आ जाए। बीज यात्रा की शुरुआत है, फल उसका अंत है, फल बीज की मृत्यु है, वहां जाकर बीज की यात्रा समाप्त होती है। तो बीज में जो छिपा था, वही फल में प्रकट होगा, जीवन भर चित में जो कुछ अर्जित किया है, मृत्यु के क्षण में चित्त उसी के साथ होगा। इसलिए इस धोखे में कोई भी न रहे कि मृत्यु के क्षण को हम सुधार लेंगे, पूरे जीवन को जो बदलता है, वही मृत्यु को भी बदलने में समर्थ होता है। लेकिन क्योंकि हम तरकीबें साथ तक निकालने के हमेशा उत्सुक होते हैं, जीवन भर कुछ भी करो, मरते वक्त गीता सुन लेंगे, कान में कोई मंत्र बोल देगा और सब ठीक हो जाएगा। इस तरह के धोखे बढ़िया, हो सकता है आदमी के दुनिया में चलते हों, लेकिन परमात्मा की दुनिया में नहीं चल सकता।

मैंने एक घटना सुनी, एक आदमी मरण-सैय्या पर था। उसकी सारा परिवार उसके साथ इकट्ठा था, उसकी पत्नी उसके पैरों के पास बैठी थी। चिकित्सकों ने कह दिया था कि बचना असंभव है, मरने की अंतिम घड़ी आ गई थी, उस आदमी ने आंख खोली और अपनी पत्नी को पूछा मेरा बड़ा लड़का कहा है। पत्नी के मन में हुआ, मृत्यु के क्षण में प्रेम का स्मरण आ रहा है, मृत्यु के क्षण में प्रेम का स्मरण आ रहा है, उसने कहा घबराएं न, आपके बिस्तर के पास ही बाइ तरफ बड़ा लड़का मौजूद है, उसने पूछा और मेरा छोटा लड़का, वह भी मौजूद था, पत्नी ने कहा, वह भी मौजूद है। उसने कहा और उससे छोटा, उसके पांचों लड़के मौजूद थे। पांचवें लड़के को पूछने के बाद वह एकदम से उठकर बैठ गया और उसने कहा इसका क्या मतलब, फिर दूकान पर कौन बैठेगा। पत्नी सोच रही थी कि मरते वक्त वह प्रेम के कारण स्मरण कर रहा है। वह बेचारा हिसाब लगा रहा था कि दूकान पर कोई बैठा है या सब लोग यही इकट्ठे है। जीवन भर जो दूकान सामने रही थी, वह मरते वक्त दूर नहीं हो सकती। जीवन भर जो, जीवन भर जो दूकान सामने थी, वह मरते क्षण में भी सामने होगी। वही होगी, वह जो गीता पढ़ी जा रही है, वह सामने नहीं हो सकती। क्योंकि चित कोई आकस्मिक घटना नहीं है, एक सतक क्रम है। पूरे जीवन हम चित को निर्मित करते है, वह जैसा निर्मित होता है वही उसके समक्ष होगा। इसलिए एक मरते आदमी के कान में गीता और मंत्र सुनाने से ज्यादा नासमझी की और बात नहीं हो सकती।

और यह ऐसे धोखे हैं, जिनके कारण हम लोगों को इस तरह की बातें सिखा कर अपने जीवन में भटकने का मौका दे देते हैं। मैं आपसे बहुत स्पष्ट यह कह दूं, धर्म का संबंध समग्र जीवन से है, समग्र जीवन से है, समग्र जीवन से, कोई मरने के क्षण में धार्मिक नहीं हो सकता। और यह भ्रांति, यह फैलेसी इसलिए पैदा होती है कि हम लोग धर्म के पूरे जीवन कभी भी संबंधित नहीं माना। कोई आदमी सुबह एक घंटे को बैठकर अपने कमरे में बंद होकर पूजा और प्रार्थना कर लेता है और सोचता है, मैं धार्मिक हो गया। तेईस घंटे क्या करता है वह आदमी, अगर तेईस घंटे विपरीत है जीवन में तो वह एक घंटा जो धर्म में बिताया है, बिलकुल झूठा और धोखे का है। क्योंकि तेईस घंटे चेतना जहां रहती है, एक घंटे में उससे अन्यथा नहीं रह सकती। तो गंगा हिमालय से बहती है, तो कोई यह कहे कि काशी में आकर पवित्र हो जाती है, काशी के पहले पवित्र नहीं थी और काशी के बाद फिर अपवित्र हो जाती है। तो कौन मानेगा इस बात को, गंगा तो एक सातत्य है, जो गंगा काशी के पहले है वही गंगा काशी के घाट पर है, वही गंगा काशी के आगे है। यह नहीं हो सकता है कि गंगा काशी के पहले अपवित्र है और काशी पर पवित्र हो जाए और फिर आगे अपवित्र हो जाए। चित्त की भी एक गंगा है, चित्त की भी एक सतत धारा है। यह नहीं हो सकता है कि एक घंटे के लिए मंदिर में जब बैठे तब वह पवित्र हो जाए और बाकी तेईस घंटे अपवित्र रहे, यह असंभव है या तो चित की धारा पवित्र होती है या अपवित्र होती है, दो के बीच तीसरा कोई विकल्प नहीं है। लेकिन हम धोखा देने में होशियार है और दूसरों को धोखा देने में तो है ही, खुद को भी धोखा देने में बहुत होशियार है। एक आदमी तेईस घंटे कुछ भी करे, एक घंटे मंदिर चला जाता है। तो क्या आप सोचते हैं उस मंदिर में ही दूसरा आदमी हो जाता होगा, यह कैसे हो जाएगा दूसरा आदमी उस मंदिर में। तेईस घंटे जो यह था, वही तो उस मंदिर में प्रवेश करेगा। तेईस घंटे जो यह था, वही तो उस मंदिर में पूजा करेगा। तेईस घंटे जो यह था, वही तो उस मंदिर में प्रार्थना करेगा। दूसरा आदमी कैसे हो जाएगा? चित्त कोई ऐसी बात तो नहीं है कपड़ों की भांति कि उतारकर रख दिया और जब हुआ तो पहन लिया और

जब चाहा तब उतारकर रख दिया। चित तो हमारी आंतरिक दशा है, इसलिए जो आदमी धार्मिक नहीं है, वह मंदिर में बैठकर भी धार्मिक नहीं हो सकता। और जो आदमी धार्मिक हो, उसके किसी मंदिर में जाने की कोई जरूरत नहीं है। वह जहां है, वहां धार्मिक है।

एक फकीर के बाबत मैंने सुना, वह कोई सत्तर वर्षों तक निरंतर नमाज के लिए मस्जिद में जाता रहा। पांचों नमाज उसने पूरी की और इस डर से वह कभी अपने गांव को छोड़कर दूसरे गांव में नहीं गया कि हो सकता है वहां मस्जिद न हो, हो सकता है नमाज चूक जाए। सत्तर वर्ष की उम्र तक यह क्रम चलता था, बीमार था तो भी गया। कोई दिन ऐसा न था कि वह अनुपस्थित रहा हो और उस गांव के लोग मस्जिद और उस फकीर को एक ही साथ सोचने लगे थे। कभी कल्पना में भी नहीं आता था कि मस्जिद बिना फकीर के भी हो सकेगी, लेकिन एक दिन सुबह लोगों ने पाया कि फकीर नहीं आया सिवाय इसके कि फकीर रात मर गया हो। दूसरा कोई खयाल किसी को नहीं आया, वो सारे लोग उस फकीर के घर की तरफ गए। लेकिन वो देख कर हैरान हो गए, वह अपनी खंजरी उठाए हुए अपने झाड़ के नीचे बैठा हुआ गीता गा रहा था। वह जिंदा था, न वह बीमार था और न वह मरा था। तो सारे लोगों ने कहा कि आप बुढ़ापे में नास्तिक हो गए हैं। यह क्या कर रहे हो, नमाज चूक गए। सत्तर वर्ष से जो बात नहीं चूकी थी, वह आज चूक गए। वह बूढ़ा फकीर बोला, मैं भूल में था। मैं सोचता था कि मस्जिद में जाने से धार्मिक हो जाऊंगा, लेकिन मैंने कभी यह खयाल नहीं किया कि मैं जो मस्जिद के बाहर हूं, वही तो मैं मस्जिद के भीतर रहूंगा। अगर मैं बाहर अधार्मिक हूं तो भीतर धार्मिक कैसे हो जाऊंगा। यह तो कल रात ही मुझे खयाल आया कि चौबीस घंटे की चेतना अगर परिवर्तित हो तो ही परिवर्तन हो सकता है, मस्जिद जाने से कुछ भी न होगा। और इसलिए आज से मैंने मस्जिद में जाना बंद कर दिया और आज से मैं इस कोशिश में लगा हूं कि मैं जहां भी रहूं वही मस्जिद में रहूं। अब मस्जिद में नहीं जाऊंगा।

दो तरह के लोग है; एक तो वे जो मंदिरों में जाएं और सोचें कि धार्मिक हो गए और एक वे चित को इस भांति बनाए कि वे जहां बैठे हो वही मंदिर हो। दूसरे तरह के व्यक्ति को ही मैं धार्मिक कहता हूं, वह जहां बैठा हो, वहां मंदिर हो, उसकी मौजूदगी मंदिर हो, उसकी चेतना की सतत पवित्रता, उसकी चेतना का सतत आनंद, उसकी चेतना का सतत सौंदर्य, उसकी चेतना की सतत शांति और संगीत उसे धार्मिक बनाएंगे। इसी भ्रम में तो हम थोड़ी देर को धार्मिक हो सकते हैं, यह भी भ्रम पैदा कर दिया कि मरते वक्त अगर हम धार्मिक हो गए तो बात सब ठीक हो जाएगी। धार्मिक जीवन में इस बात से जितनी हानि पहुंची है और किसी बात से नहीं पहुंची है। मनुष्य को समग्र आमूल्य चेतना बदलनी होती है, पूरी चेतना बदलनी होती है। खंड-खंड और टुकड़ों-टुकड़ों में बदलाहट का कोई उपाय नहीं है। चेतना है अखंड, इकट्ठी और उसकी धारा है सतत उसे पूरा ही बदलना होता है। तो जो व्यक्ति जीवन भर अपनी चेतना के जागरण में संलग्न होता है, उसकी शांति के लिए सतत प्रयासशील होता है। जहां भी है, जैसा भी है, वहीं अपनी चेतना को जागरूक प्रबुद्ध करने में संलग्न होता है, जैसी भी घड़ियों में है वही अपने मन को शांति और शून्य में ले जाने के लिए सतत ध्यानपूर्ण होता है, वही व्यक्ति धीरे-धीरे अपनी चेतना धारा को बदल लेता है। फिर वह चाहे सोता हो, चाहे जागता हो, चाहे मंदिर में बैठा हो और चाहे मधुशाला में बैठा हो। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है। उसकी चेतना, उसकी सतत चेतना एक क्रांति से परिवर्तित होती रहती है, गुजरती रहती है, वैसा व्यक्ति जीवन में आनंद को उपलब्ध होता है, जीवन में परमात्मा को उपलब्ध होता है, वैसा ही व्यक्ति मृत्यु के क्षण में भी परमात्मा को उपलब्ध होता है और पाता है, जो जीवन में नहीं पाया गया, वह मृत्यु के क्षण में नहीं पाया जा सकता। जो जीवन में पाया गया, उसे मृत्यु के क्षण में खोया नहीं जा सकता है। जो हम जीवन में पाते हैं, उपलब्ध करते हैं, अंतस्थ में, वही मृत्यु के क्षण में हमारा साथी होता है, बाकी धोखे की बातें है कि कोई आदमी ने मरते वक्त नारायण-नारायण का नाम ले लिया, तो वह स्वर्ग चला गया। यह पापियों की ईजादें हैं, पापी कोई सस्ते रास्ते खोजना चाहते हैं कि राम-राम कर लें और मामला हल हो जाए। पाप भी करें और राम-राम लेकर छुटकारा भी हो जाए, ऐसी होशियारी की बातें हमारे पापी चित्त की ईजाद है। यह कोई धार्मिक चित्त की ईजाद नहीं है कि एक आदमी मरते वक्त जीवन-भर हत्या करें, चोरी करें, बेईमानी करें, सोया रहे मरते वक्त, राम-राम कह दे। ये कथाएं जिन्होंने घड़ी होंगी, उनसे ज्यादा अधार्मिक लोग जमीन पर दूसरे नहीं रहे।

जिन्होंने ये कथाएं घड़ी—कि एक आदमी मर रहा है जीवन भर का हत्यारा, बेईमान चोर, उसके लड़के का नाम नारायण है। वह मरते वक्त अपने नारायण को बुलाता है, अपने लड़के को कि नारायण तू कहां है और भगवान ऊपर प्रसन्न हो जाते हैं कि देखो इसने मेरा नाम लिया उसको स्वर्ग भेज देते हैं। ऐसे भगवान और ऐसी कथाएं और ऐसी सारी की सारी बातें इतनी झूठ है, इनमें रत्ती भर की भी कोई सच्चाई नहीं। यह किन्होंने घड़ी होंगी, किन्होंने ईजाद की होंगी, किन्होंने यह कहानियां बनाई होंगी, यह हमारे पापी चित्त के अविष्कार है। हम पाप भी करना चाहते हैं और किसी सरल तरकीब से उससे छूट भी जाना चाहते हैं। तो हमने बहुत सी सरल तरकीबें निकाल ली हैं। कोई राम-राम जप लेता है और सोचता है कि मामला हल हो गया। लेकिन पाप करते वक्त वह पाप-पाप जपकर मामले को हल नहीं समझता, पाप तो करता है। उस वक्त पाप का जप नहीं करता कि जप कर लें मामला खत्म हो गया। एक आदमी की हत्या कर ली तो बैठकर हत्या-हत्या का जप कर लें बात खत्म हो गई, यह वह नहीं करता, वह भली-भांति जानता है कि हत्या के जप करने से हत्या नहीं होगी, हत्या तो करनी पड़ेगी, हत्या तो वह करता है, लेकिन छूटने के लिए राम-राम जपता है। बड़ी होशियारी, इसको कनिंगनेस, इसको चालाकी कहेंगे या क्या कहें। चित्त कितना बेईमान है, भगवान को जपने से निपट लेना चाहता है और पाप को पाप को करके निपटता है। भगवान भी जप से कुछ भी नहीं होगा, भगवान को भी करना ही होगा, जपना नहीं होगा। कोई आदमी भगवान होकर ही भगवान को पा सकता है, जप कर नहीं, क्योंकि पाप करके ही पाप को पाता है, वह परमात्मा को बिना किए कैसे पा सकता है। यह कितनी अजीब बात है कि हम दो-चार आने की माला खरीद लेते हैं, उसके गुरिये खिसकाते रहते हैं और सोचते हैं धर्म हो रहा है। क्योंकि हजारों साल से एक बात चलती है, इसलिए हमारी आंखें अंधी हो जाती है, देखने में असमर्थ हो जाती है कि यह क्या हो रहा है और तो सारे में उसको मान कर किए चले जाते हैं कि हम कोई स्मरण भी नहीं आता है कि हम क्या पागलपन कर रहे हैं। कोई बाजार से गुरिये खरीद कर इसको खिसकाने से कोई धार्मिक होता है, कोई गुरिए न खिसकाने से पापी हो गया क्या, जो गुरिए खिसकाने से धार्मिक हो जाएगा। क्या पाप यही है कि हम माला नहीं फेर रहे, पाप गहरा है, हमारे पूरे प्राण में घुसा हुआ है और निकालने की तरकीब बड़ी सस्ती है कि एक माला लेकर उसको हाथ से फेर रहे हैं। यह अपसरडिटी दिखाई भी नहीं पड़ती, यह नासमझी दिखाई भी नहीं पड़ती कि इसमें क्या संगति है, इसमें क्या तुक है, इसमें क्या अर्थ है। पाप तो हमारा प्राण बना हुआ है, लेकिन धर्म हमारा चार पैसे की कोई सस्ती तरकीब पर टिका हुआ है। इसलिए दुनिया में पाप बढ़ता गया और धर्म कम होता गया, इसमें कोई आश्चर्य नहीं है, क्योंकि धर्म हमारा धोखा है और पाप हमारी असलियत है। पाप जैसा ही असली धर्म होना चाहिए, तो जीवन में क्रांति होती है, नहीं तो क्रांति नहीं होती। पाप जैसा ही असली धर्म चाहिए, पाप बिलकुल असली है, ठोस यथार्थ और धर्म बिलकुल काल्पनिक हवाई है, इसलिए धर्म हार जाता है, पाप जीत जाता है और धर्म हारता चला गया रोज-रोज और आज भी हार रहा है।

और धर्म हारता है तो यह जो पागल इन सारी बातों का प्रचार करते हैं कि माला फेरो और राम-राम जपो, ऐसा करो, वैसा करो। वे और जोर-शोर मजा देते कि देखो माला कम फेरी जा रही है, इसलिए पाप बह रहा है। ये लड़के माला नहीं फेरते इसलिए पाप बढ़ता जा रहा हैं। दुनिया में अब लोग कम मंदिर जा रहे हैं, इसलिए पाप बढ़ रहा है, कम लोग राम-राम जप रहे हैं, इसलिए पाप बढ़ रहा है। वे ये गोहार मचाते हैं कि यह कम हो रहा है, असलियत यह है कि यह होता रहा है, इसलिए पाप बढ़ाओ। पाप टूटेगा उस दिन, जिस दिन हम पाप की तरह ठोस धर्म को समझेंगे, पाप तो हमारी चेतना को बदल जाता है और धर्म हमारे हाथ में गुरिए बन जाते हैं। पाप तो हमारे पूरे प्राणों को आंदोलित कर देता है, घुस जाता है हमारे अचेतन चित्त तक, उसकी जड़ें पहुंच जाती है हमारे भीतर और धर्म, धर्म हमारे टीके की भांति हमारे सिर पर लगा रहता है या जनेऊ की भांति गले में पड़ा रहता है। वह प्राणों तक नहीं पहुंचता है। जनेऊ पहुंच भी कैसे सकता है प्राणों तक, कैसे यह हो सकता है इसका क्या संबंध, इसका कोई भी संबंध नहीं है। लेकिन दिखाई नहीं पड़ती यह बात, अगर बहुत दिनों तक हजारों वर्षों तक कोई बात प्रचलित रहे, तो लोक-मानस उसके प्रति अंधा हो जाता है।

अरस्तू ने जो कि पश्चिम में तर्क का और विचार का पिता समझा जाता है। उसने अपनी किताबों में ऐसी बेवकूफियां लिखी है, जो कि उस समय प्रचलित थी और उसे खयाल भी नहीं आया कि यह नासमझियां हैं, लेकिन क्योंकि प्रचलित थी उसने लिख दीं। उसे खयाल भी नहीं आया कि यह बिलकुल गलत है, लेकिन हजारों साल से यूनान में चल रही थी, वह भी उन्हीं

के बीच पला था, वह भी उसके दिमाग में भर गई थी। उसको भी दिखाई नहीं पड़ा कि यह क्या हम कह रहे हैं। उसने लिखा है औरतों के दांत पुरुषों से कम होते हैं, क्योंकि यूनान में माना जाता था कि स्त्रियों के दांत पुरुषों से कम होते हैं। असल यह है कि पुरुष कभी मानने को राजी ही नहीं सकें हैं कि स्त्रियां किसी भी बात में उनके समान हो सकती है, दांत में भी कैसे समान हो सकती है। पुरुष का अहंकार यह मानने को राजी नहीं है कि स्त्रियां इसके समान हो सकती है किसी भी मामले में इसलिए पुरुषों ने जो शास्त्र लिखे है उनमें स्त्रियों को मोक्ष जाने का अधिकार नहीं दिया है। पहले उनको पुरुष जन्म लेना पड़ेगा फिर वे मोक्ष जा सकते हैं। पुरुषों ने जो शास्त्र लिखे हैं, उनमें लिखा है कि स्त्रियां नरक के द्वार है, बड़ी हैरानी की बात है, अगर स्त्रियां नरक के द्वार है तो फिर कोई स्त्री अब तक नरक न जा सकी होंगी क्योंकि उसके लिए द्वार कहां है। पुरुष तो नरक चले जाएंगे, स्त्री कहां गई होगी, अगर स्त्रियां शास्त्र लिखती तो वे लिखती पुरुष नरक के द्वार हैं। लेकिन उन्होंने कोई शास्त्र नहीं लिखे, झंझट में वे नहीं पड़ी।

अरस्तू ने यूनान में सुन रखा है कि स्त्रियों के दांत कम हैं और इसलिए लिख दिया और अजीब बात थी उसकी। एक औरत नहीं थी, दो औरतें थी उसके पास और वह किसी भी समय श्रीमती अरस्तू को कह सकता है था। कि देवी बैठो! जरा मैं तुम्हारे दांत गिन लूं, लेकिन नहीं गिनें। गिनने की कोई जरूरत नहीं समझी, लिख दी किताब में बात चलती थी सारी, दुनिया कहती थी कि इसमें शक क्या था और कोई शक करता तो नासमझ समझा जाता। एक हजार साल पहले अरस्तू के मरने के बाद भी यह माना जाता था कि स्त्रियों के दांत कम हैं। जिस आदमी ने पहली दफा स्त्रियों के दांत गिने, लोगों ने उसको पत्थर मारे। तुम हमारी परंपरा तोड़ रहे हैं यह कभी हुआ है, हजारों साल से अरस्तू जैसे महान विचारक ने भी लिखा हुआ है कि स्त्रियों के दांत कम होते हैं। तुम्हारी स्त्री के दांतों में कोई खराबी होगी, कोई ज्यादा उग आए होंगे, बराबर कभी हो नहीं सकते। ऐसी अंधी हो जाती है हमारी चित की दशा, देखने में असमर्थ हो जाते हैं, सोचने में असमर्थ हो जाते हैं, हजारों वर्ष का प्रचार हमारे प्राणों को बधिर और अंधा कर देता हैं। ऐसे अंधेपन में हम खड़े हैं, धर्म के नाम पर हजारों साल की नासमझियां हमारे ऊपर इकट्ठी हो गई हैं।

कल रात मैंने कहा कि मैंने एक साधु मुंहपट्टी अलग कर ली, मुझे क्या प्रयोजन है किसी की मुंहपट्टी अलग करने से, कोई सिर पर जूता भी रखे रहे तो मुझे क्या प्रयोजन है अलग करने का। अलग की, इसलिए था कि मैं देख सकूं कि यह आदमी कहीं मुंहपट्टी से बंधा हुआ तो नहीं है। तो एक मित्र को दुख हो गया होगा, वह मुंहपट्टी वाले होंगे, उन्होंने एक प्रश्न पूछा हुआ है। उन्होंने प्रश्न पूछा हुआ है कि यह तो बड़ा अन्याय कि आपने बड़ा अनुचित किया कि किसी की मुंहपट्टी छीन ली। मुंहपट्टी तो कोई अपनी प्रार्थना करने के लिए, मुंहपट्टी बांधता है। अब हद हो गई प्रार्थना से मुंहपट्टी का क्या संबंध। ध्यान से मुंहपट्टी का क्या संबंध है। ध्यान है आत्मा में जाना है और मुंहपट्टी यहां बंधी हुई है, ध्यान है भीतर प्रवेश, मुंहपट्टी बाहर है। बाहर की कोई भी चीज भीतर ले जाने में समर्थ नहीं है, कोई भी चीज न बाहर की प्रतिमा, न बाहर के शास्त्र, न बाहर का कोई और उपकरण, जो बाहर है, जो उसको पकड़ेगा, वह बाहर रुक जाएगा, उसके कारण। जिसे भीतर जाना है, उसे बाहर का हर तरह का मोह छोड़ देना पड़ेगा। लेकिन हम बड़े आश्चर्यजनक लोग है; एक आदमी घर-गृहस्थी छोड़कर संन्यासी हो जाता है, घर छोड़ देता है, गृहस्थी छोड़ देता है, पत्नी और बच्चे छोड़ देता है, लेकिन एक गेरुए वस्त्रधारी संन्यासी से कहो कि मित्र, तुम गेरुए वस्त्र छोड़ दो, उसके प्राण कंप जाते हैं कि यह कैसे छोड़ सकता हूं। घर छोड़ता है, गृहस्थी, बच्चे और पत्नी इन सबको छोड़ देता है, लेकिन गेरुए रंग के कपड़े नहीं छोड़ सकता। यह आदमी कैसा है, यह दिमाग कैसा है? क्या यह गेरुए वस्त्र और भी बहुमूल्य है उस संसार में जिसे यह छोड़ा है और अगर ये गेरुए वस्त्र छोड़ने में कमजोर है, इसके संसार के छोड़ने का कितना मूल्य है शायद कुछ बात और हो गई होगी, शायद यह पत्नी से नाराज रहा होगा, इसलिए छोड़कर भागा है। क्योंकि बाहर के इसकी बुद्धि में कोई फर्क नहीं पड़ा है, बाहर की चीज छोड़ने की इसकी कोई तैयारी नहीं है।

गांधी के पास एक संन्यासी आया और उन्होंने कहा कि मैं सेवा करना चाहता हूं। तो गांधी ने कहा कि मित्र! अगर सेवा करनी हो तो पहला काम यह करना होगा कि यह गैरिक वस्त्र छोड़ देने होंगे। ये गेरुए वस्त्र छोड़ देने होंगे क्योंकि इन वस्त्रों को लेकर लोग तुम्हारी सेवा करेंगे, तुम इन वस्त्रों के साथ कैसे लोगों की सेवा कर सकोगे। तो यह तुम छोड़ दो, उस

संन्यासी ने कहा, इनको मैं छोड़ दूं, तो फिर तो मैं संन्यासी ही न रह जाऊंगा। अब सोच लें एक संन्यासी की बुद्धि को, वस्त्र छोड़ दे या गेरुए तो संन्यासी न रह जाएगा, मतलब यह हुआ कि गेरुए वस्त्र संन्यास है, तब तो बड़ी आसान बात है, दुनिया कि हुकूमतें, कानून बना लें कि सारे लोग गेरुए वस्त्र पहनें। दुनिया बदल जाएगी, मोक्ष हो जाएगा, सारे लोग गेरुए वस्त्र पहनेंगे संन्यास हो जाएगा। इतनी आसान बात इतने दिन तक हम क्यों छोड़ें बैठे हैं, सारी दुनिया को गेरुआ रंग से पोता जा सकता है, क्या कठिनाई है, सारे लोगों के मुंह पर कानून मुंहपट्टियां बंधवाई जा सकती है, क्या कठिनाई है। सारे लोगों को तिलक लगवाया जा सकता है, क्या कठिनाई है। अगर दुनिया ऐसे धार्मिक होती है, तब तो बड़ा आसान रास्ता है। लेकिन जो यह सोचता हों कि इन बातों से हम धार्मिक हो रहे, उसकी बुद्धि पर दया आनी जरूरी है। धार्मिक होना बड़ी गहरी और आंतरिक क्रांति है, धार्मिक होना एकदम आत्यंतिक रूप से आंतरिक है, वायु से उसका कोई भी संबंध नहीं है। यह बोध होना चाहिए, फिर कोई मुंहपट्टी बांधे, गेरुआ वस्त्र पहने कुछ न कुछ तो पहनेगा, कुछ खाएगा, पीएगा, वह जाने। लेकिन उसके ऊपर पकड़ और आग्रह, उसको प्राणों की भांति चिपकाना। उसको समझना कि उसमें सब छिपा है रहस्य और उस पर लड़ाई लड़ना और ये सारे संन्यासी इन चीजों पर लड़ाई लड़ते रहते हैं कि कौन सी चीज ठीक है और कौन सी चीज गलत है और उतनी सी चीज बदल जाए तो वह आदमी संन्यासी नहीं रह जाता। यह कैसे छोटे मन से हमारा सारा का सारा विकास विकसित हुआ है और इसको हम समझते हैं कि यह धर्म है, यह धर्म नहीं है।

बाहर जिनकी श्रद्धा है, बाहर जिनकी निष्ठा है, उनके जीवन में धर्म का उदय नहीं हो सकता। पहली बात है बाहर की निष्ठा छूट जानी और आंतरिक निष्ठा का प्रवेश, भीतर क्या है, उसकी खोज का आग्रह और वह खोज कोई न कोई एक घंटा बैठकर कर सकता है किसी मंदिर में और न वह खोज कोई मरते वक्त कर सकता है। यह तो पूरे जीवन का समग्र उपकरण होगा, यह तो टोटल लाइफ वह जो पूरा हमारा जीवन है उसके कण-कण और रत्ती-रत्ती में और श्वास-श्वास में प्रविष्ट हो जानी होगी यह बात, तो ही यह परिवर्तन हो सकता है, नहीं तो यह नहीं हो सकता।

एक फकीर से यह जापान में एक राजा मिलने गया, सोचा होगा उसने वह जो फकीर बैठकर ध्यान कर रहा होगा, प्रार्थना कर रहा होगा, पूजा कर रहा होगा, पाठ पढ़ रहा होगा, भगवान की स्तुति कर रहा होगा, यह सोचा होगा।

पिछली चर्चाओं के संबंध में बहुत से प्रश्न मेरे पास आए हैं, सभी प्रश्न बहुत अर्थपूर्ण, बहुत महत्व के हैं। कुछ थोड़े से प्रश्नों पर अभी और कुछ पर रात में विचार करेंगे। प्रश्न चूंकि बहुत हैं, मैं बहुत थोड़े संक्षेप में एक-एक का उत्तर देने की कोशिश करूंगा।

सबसे पहले एक मित्र ने पूछा है और वैसी बात करीब-करीब पूरे मुल्क में जगह-जगह पूछी जाती है। आप सबके मन में भी वह प्रश्न उठता होगा। उन्होंने पूछा है आजकल की दुनिया खराब हो गई है। अभी यह जो गीत गाया उसमें भी यह बात है कि आजकल की दुनिया खराब हो गई है। इस खराब दुनिया को ठीक रास्ते पर कैसे लाया जाए।

इस प्रश्न में दो बातें समझ लेनी जरूरी हैं; एक तो यह कहना कि आजकल की दुनिया खराब हो गई है, इस बुनियादी भ्रम पर खड़ा हुआ है कि पहले की दुनिया अच्छी थी। यह बात इतनी बुनियादी रूप से गलत है जिसका कोई हिसाब नहीं। पहले की दुनिया भी आज से अच्छी नहीं थी, आज का आदमी खराब हो गया है, इससे ऐसा खयाल पैदा होता है कि पहले का आदमी बहुत अच्छा था। शायद आपको पता नहीं कि इस तरह के खयाल के पैदा हो जाने का कारण क्या है? जमीन पर जो पुरानी से पुरानी किताबें उपलब्ध हैं, सबसे पुरानी किताब चीन में उपलब्ध है, जो कोई छह हजार वर्ष पुरानी है। उस पुरानी किताब में भी यह लिखा हुआ है कि आज की दुनिया खराब हो गई है, पहले के लोग बहुत अच्छे थे। यह पहले के लोग कब थे, आज तक एक भी ऐसी किताब नहीं मिली है जिसने यह कहा हो, अभी के लोग अच्छे हैं। जो लोग मौजूद हैं, ये अच्छे हैं अब तक मनुष्य-जाति के पास ऐसा एक भी उल्लेख नहीं, जो यह कहता हो अभी के लोग अच्छे हैं। पहले के लोग अच्छे थे, ये पहले के लोग कब थे। बुद्ध और महावीर यह कहते हैं कि जमाना खराब हो गया, लोग बुरे हैं। पहले के लोग अच्छे थे। क्राइस्ट यह कहते हैं कि लोग बुरे हैं, पहले के लोग अच्छे थे, ये पहले के लोग कब थे और अगर अच्छे लोग जमीन पर थे तो अच्छे लोगों से बुरे लोग पैदा कैसे हो गए। तो वह अच्छी संस्कृति से बुरी संस्कृति पैदा कैसे हो गई, उस अच्छे से विकार कैसे पैदा हो गया। नहीं सच्चाई कुछ और है, सच्चाई बिलकुल उलटी है, अगर पहले के लोग अच्छे थे तो

युद्ध कौन करता था, हिंसा कौन करता था। पुराने से पुरानी युद्ध की कथा हमारी महाभारत की है, वे लोग अच्छे लोग थें। अपनी पत्नियों को दांव पर लगाने वाले लोग अच्छे थें। आज एक साधारण आदमी भी अपनी पत्नी को दांव पर लगाने में दो दफा विचार करेगा, सोचेगा, यह उचित है। लेकिन उस समय जिसको हम कहें कि जो धर्म का बहुत विचारशील आदमी था, वह भी विचार नहीं कर रहा है पत्नी को दांव पर लगाते वक्त।

जुआ खेलने में कोई संकोच नहीं हो रहा है उसे, अपने ही भाई की पत्नियों को नंगा करने में किसी को कोई संकोच नहीं हो रहा है, बीच सभा में और वहां जो लोग बैठे हैं, वे बड़े विचारशील है धर्म के ज्ञाता है, वे भी बैठे देख रहे हैं। ये लोग अच्छे थे, तो फिर महाभारत क्यों हो गया। इतना संघर्ष, इतना रक्तपात क्यों हो गया, अच्छे लोग थे तो। अच्छे लोग एक मिथ्या, एक कल्पना और कहानी है, नहीं तो बुद्ध ने किन लोगों को समझाया कि चोरी मत करो, महावीर ने किनको समझाया कि हिंसा मत करों, अगर लोग अहिंसक थे तो महावीर पागल थे, ढाई हजार साल पहले किसको समझा रहे थे कि चोरी मत करो, हिंसा मत करो, दूसरे की स्त्री पर बुरी नजर मत रखो, लोग रखते होंगे तभी तो समझा रहे थे, नहीं तो समझाएंगे कैसे। यह ब्रह्मचर्य का उपदेश किसको दे रहे थे, अगर सारे लोग ब्रह्मचर्य को मानते थे तो ब्रह्मचर्य का उपदेश किसके लिए था और अगर सारे लोग ईमानदार थे, तो ईमानदारी की शिक्षाएं हमारे ग्रंथों में क्यों लिखी हुई है, किसके लिए लिखी हुई हैं। लोग बेईमान रहे होंगे, तब तो ईमानदारी की शिक्षा की बात लिखी है ग्रंथों में, नहीं तो कौन लिखता, जरूरत रही होगी जिंदगी को कि ईमानदारी कोई सिखाए, लोग बेईमान रहे होंगे, लोग हत्यारे रहे होंगे, लोग चोर रहे होंगे, तब तो अचौर्य समझाया जा रहा है, अहिंसा समझायी जा रही है और लोग एक-दूसरे को घृणा करते रहे होंगे, तब तो प्रेम के इतने उपदेश दिए गए है, नहीं तो किसको दिए जाते।

लेकिन भ्रम कुछ और बातों से पैदा हो जाता है। हर युग में अच्छे लोग होते हैं, उन थोड़े से अच्छे लोगों की कथा बची रहती है, बाकी लोगों के जीवन का कोई हिसाब नहीं बचता। हमारे युग में गांधी थे, दो हजार साल बाद हम जो लोग बैठे हैं, हमारी कोई कथा बची रहेगी, लेकिन गांधी की बची रहेगी। और दो हजार साल बाद लोग गांधी को कहेंगे कि इतना अच्छा आदमी था उस युग के लोग कितने रहे होंगे, गांधी से वे सारे युग को तोल लेंगे, जोकि बिलकुल झूठी तोल होगी। गांधी अपवाद था, नियम नहीं था और दो हजार साल बाद जब हम सबकी कोई कथा शेष नहीं रह जाएगी और गांधी की कथा शेष होगी, तो गांधी के आधार पर हम सबके बाबत जो निर्णय लिया जाएगा वह बिलकुल झूठा होगा। हम तो गांधी के हत्यारे हैं, लेकिन दो हजार साल बाद लोग कहेंगे, गांधी इतना अच्छा आदमी था, उसके समाज के लोग कितने अच्छे नहीं रहे होंगे। तो राम और कृष्ण, बुद्ध और महावीर दो चार नामों के आधारों पर हम उस जमाने के लोगों के बाबत सोचते हैं, वह सोचना बिलकुल फैलिसी है, बिलकुल झूठ है। ये आदमी अपवाद थें, ये नियम नहीं थें, जहां तक सामान्य आदमी का संबंध है, आदमी विकसित हुआ है, उसका पतन नहीं हुआ है, उसका कोई ह्रास नहीं हुआ है। आदमी सामान्य आदमी विकसित हुआ है, उसके जीवन में पीछे के आदमी से गति हुई है, उसके विचर में गति हुई है, उसकी चेतना में विकास हुआ है। कई कारणों से यह बात कही जा सकती है, मैं कोई कारण नहीं देखता हूं कि लोग पहले से बुरे हो गए है, लोग पहले से भले हो गए हैं। मैं तीन दिन जो बातें कह रहा हूं, अगर यही बातें मैंने दो हजार साल पहले कही होती आप मेरी हत्या कर देते। आप ज्यादा बेहतर आदमी है, दो हजार साल पहले के आदमी से। क्राइस्ट ने ऐसी कौन सी बात कह दी थी जिसकी वजह से लोगों ने क्राइस्ट को सूली पर लटका दिया, जो क्राइस्ट ने कहा था तीन दिनों में। मैंने उससे बहुत ज्यादा तीखी और आपकी चोट पहुंचाने वाली बातें कहीं है, लेकिन आप में से किसी ने पत्थर भी नहीं मारा, फांसी लगाने की तो बात दूसरी है। क्राइस्ट के पास जो लोग थे उनसे आप बेहतर आदमी है, सुकरात को जिन लोगों ने जहर पिलाया था, उनसे आप बेहतर आदमी है। जितना पीछे हम लौटते हैं, आदमी विचारपूर्ण नहीं है, आदमी अत्यंत अंधा है, अत्यंत अविचारपूर्ण है। विचार विकसित हुआ है, विचार आगे गया है, मनुष्य की चेतना नई-नई बातें विचार की है, नए स्पर्श किए हैं, नए अनुभव किए हैं, नई दिशाएं खोली हैं, थोड़ा सोचें हमारी सदी पहली सदी है, जिसने युद्ध के विरोध में सामूहिक आवाज दी, आज तक युद्ध स्वीकृत था। पिछली किसी भी सदी ने यह नहीं कहा कि युद्ध पाप है, यह पहला मौका है कि इन दो महायुद्धों के बाद सारी दुनिया में जो भी विचारशील है वह कह रहा है कि युद्ध पाप है। आज युद्ध के विरोध में जितनी चेतना है उतनी दुनिया में

कभी भी नहीं थी। आज हिंसा के विरोध में जितनी चेतना है उतनी कभी भी नहीं थी। आज जितना भाईचारा, सारे जगत में मनुष्य-मनुष्य के बीच पैदा हुआ है, उतना कभी नहीं था। आज जितना उदार है मनुष्य, उतना कभी भी नहीं था। आज जितना उसके हृदय के द्वार दूसरों के लिए भी खुले हैं, उतने कभी भी नहीं खुले थे। जितना हम पीछे लौटते हैं, उतना नैरोमाइंडिड, उतना संकीर्ण आदमी उपलब्ध होता है। लेकिन आप कहेंगे कि नहीं, पहले का आदमी कम चीजों से तृप्त हो जाता था, उसे बहुत चीजों की जरूरत नहीं होती थी, वह अपरिग्रही था, आज बहुत चीजों की जरूरत है, यह बात भी एकदम गलत है। चीजें नहीं थी, यह बात दूसरी है लेकिन चीजों से तृप्ति कम चीजों में थी, यह बात झूठ है। चीजें नहीं थी, यह मैं मानता हूं, बुद्ध के समय में किसी आदमी को कार रखने का परिग्रह और वासना पैदा नहीं होती थी। इसका कारण यह मत समझ लेना कि कार के प्रति उसका त्याग था, कार नहीं थी, जो चीजें मौजूद थी उनके लिए वह दौड़ में खड़ा हुआ था हमेशा, उन चीजों के लिए कोई इंकार नहीं था उसके मन में। जो चीज नहीं थी उसकी तो कामना वह नहीं कर सकता था।

आज के आदमी का भोग बढ़ गया है, यह बिलकुल ठीक नहीं है, हां उसके पास भोग के साधन बढ़ गए हैं यह जरूर ठीक है, पिछले आदमी के पास भोग के साधन कम थे, जो थे उन्हीं में वह विचार करता था, उन्हीं में खोज करता था, उन्हीं को पाने की कोशिश करता था। आदमी वही है, उसके पास साधन बढ़ गए हैं, लेकिन इससे कोई आदमी पतन नहीं हो गया है बल्कि जिस आदमी ने यह साधन बढ़ाए है वह उसके उन्नत बुद्धिमत्ता के लक्षण हैं। उसके ज्यादा सोच-विचार और खोज के परिणाम है, प्रकृति के ऊपर उसके ज्यादा नियंत्रण की सूचना है, प्रकृति के रहस्यों को जानने में उसकी ज्यादा गति के प्रतीक है और हम सोचते हैं कि पहले के लोग ज्यादा ईमानदार थे, ज्यादा सच्चाई पसंद थे, यह किस हिसाब पर आप सोचते हैं, किस कारण से आप यह सोचते हैं, अगर पुरानी कथाएं उठा कर पढ़ें तो जितनी बेईमानी हो सकती है, उनमें मौजूद है, जितने धोखे-घड़ियां हो सकते हैं वह मौजूद है, जितना पाखंड हो सकता है वह मौजूद है, जितना असत्य हो सकता है वह मौजूद है, जितनी चालाकियां हो सकती है वह सब मौजूद है। कोई फर्क नहीं पड़ा हुआ है, हां एक बात में फर्क पड़ गया है। पहले कुछ लोग चालाकियां करते थे, बाकी लोग चूंकि उनकी बुद्धिमत्ता बहुत कम विकसित थी, चालाकियों के शिकार होते थे। अब चूंकि बड़े पैमाने पर अधिक लोगों की बुद्धिमत्ता विकसित हुई है। इसलिए थोड़े लोगों को चालाकी करने का मौका नहीं है।

यह थोड़ा विचारणीय है, बुद्धिमत्ता का कम होना ईमानदारी नहीं है, दुनिया में बुद्धिमत्ता विकसित हुई है, इसलिए चालाकी में भी अगर आप आगे हैं तो दूसरे लोग भी आगे हैं, वह आपसे पीछे खड़े होने को राजी नहीं है तो शायद आप सोचते हो कि सभी लोग, सभी लोग वही करने लगे है, जो लोग थोड़े से बुद्धिमान लोग पीछे करते रहे हैं, वह आज हर आदमी करने में समर्थ हुआ है, क्योंकि बुद्धिमत्ता बहुत बड़े पैमाने पर विकसित हुई है, विवेक और विचार विकसित हुआ है। जैसे उदाहरण के लिए आपसे कहो, पुरुषों ने नियम बना रखा था कि विधवाएं विवाह नहीं करेंगी, लेकिन पुरुषों ने अपने लिए नियम नहीं बनाया हुआ था कि विधुर विवाह नहीं करेंगे। पुरुष चालाक रहा होगा, बेईमान रहा होगा, होशियार रहा होगा, आज स्त्रियां भी शिक्षित हुई हैं, उनको यह चालाकी साफ समझ में आ गई है कि पुरुष अपना तो विवाह कर सकें विधुर होने के बाद और स्त्री न कर सके, यह कैसा हिसाब। तो स्त्री अगर आज विधवा होकर विवाह करना चाहती है तो हम कहते हैं देखो कितना पतन हो गया है विधवा विवाह कर रही है। यह सिर्फ स्त्रियों की बुद्धिमत्ता विकसित हुई है और आपकी चालाकी अकेली नहीं चल सकती, तो आज आपको लगता है कि यह स्त्री कैसी देखो पतित हो गई, कभी स्त्रियों ने सोचा था कि विधवा और विवाह करेगी और आप कैसे विवाह करते रहे थे। स्त्री भी पुरुष के समकक्ष खड़ी हो गई है विचार करने में तो आज कठिनाई हो रही है पुरुष को। तीन हजार वर्ष तक हिंदुस्तान में करोड़ों हरिजनों को हमने सताया, शूद्रों को सताया, जो बुद्धिमान थे, उन्होंने उनको जमीन पर लिटा रखा, उनकी छाती पर बैठे रहे, उनके साथ जो भी अनाचार किया जा सकता था किया गया। उन्हें जिस भांति हीन किया जा सकता था किया गया, उनके भीतर की मनुष्यता की जिस भांति हत्या की जा सकती थी, वह की गई। न उन्हें ज्ञान, न उन्हें विचार के विकास का कोई मौका दिया गया, आज वे भी बुद्धिमान हो गए हैं, वे इंकार कर रहे हैं कि अभी यह आगे नहीं चलेगा, तो हम कहते हैं कि जमाना कैसा बिगड़ गया, वर्ण-धर्म सब छूटा जा रहा है। यह शूद्र देखो यह हमारे साथ खड़े होने की हिम्मत कर रहा है, धक्का देकर हमारे साथ खड़ा होना चाहता है आपने तीन हजार वर्ष

तक क्या किया था उसके साथ, वह ईमानदारी थी, वह नैतिकता थी, वह धर्म था, तो आज उसके मन में विद्रोह खड़ा हो गया, आज उसकी बुद्धिमत्ता वह भी जाग गया, उसके बच्चे भी सोचने लगे हैं। तो आपको लग रहा है कि सारा वर्ण-धर्म नष्ट हो गया, हे भगवान! यह कलियुग आ गया।

यह कलियुग नहीं आ गया है। यह जितनी मूढ़ताएं और जितने शोषण हम चलाते रहे थे उनकी मृत्यु का वक्त आ गया है। इसलिए सारी परेशानी खड़ी हो गई है, हर जगह परेशानी खड़ी हो गई, एक ढांचा था हमारा, वह ढांचा टूट रहा था हम परेशान है हम कहते हैं कि दुनिया बड़ी बुरी हुई जा रही है। दुनिया बुरी नहीं हो रही, बल्कि दुनिया में बहुत सी बुराइयां चल रही थी, उनको तोड़ने का खयाल आदमी के सामने स्पष्ट हो गया है, अब वे बुराइयां नहीं चल सकेंगी, इसलिए उन बुराइयों से जो लोग फायदा उठा रहे थे, जिनका स्वार्थ उनसे तय हो रहा था, वे सब परेशान हो गए हैं और वे सारे जमाने को गाली दे रहे हैं, सारे बच्चों को गाली दे रहे हैं, नए युवकों को गाली दे रहे हैं, नई पीढ़ी को गाली दे रहे हैं। लेकिन मैं आपसे निवेदन करता हूं, हमने हजारों सालों में जो-जो किया है आदमी के साथ बड़ा बेहूदा था, उसको तोड़ने का खयाल आया क्योंकि सारे लोगों के पास विचार पहुंचे, खयाल पहुंचे, जागृति आई, चेतना आई। मनुष्य की चेतना निरंतर विकसित हो रही है और यह उचित भी है परमात्मा के जगत में कि चेतना निरंतर विकसित हो, विकास जीवन है, पतन का क्या कारण है वहां। कोई वजह नहीं है।

आपको पता है, आज बिहार में आपका आदमी भूखा मर रहा है, इंगलैंड, अमरीका और रूस के बच्चे अपने जेबों से पैसा काटकर बिहार के आदमी को भोजन भेज रहे हैं। यह आदमी का विकास है, कि पतन, यह कल्पना के बाहर का आज से हजार साल पहले कि एक कौम में कोई भूखा मरे और दूसरी कौम उसकी फिक्र करें। दूसरी कौम कहती बहुत अच्छा हुआ मर जाओ बिलकुल तो हम तुम्हारी पूरी जमीन पी जाएं, हड़प जाएं। आज सारी जमीन पर आदमी, आदमी के प्रति एक अभूतपूर्व संबंध पैदा हुआ है जो कभी नहीं था, पुराने दिन तो यह थे कि एक हिंदू मुसलमान को छूता तो स्नान करता। तो इस मुसलमान के मरने से हिंदू क्या फिक्र करने वाला था। मर जाए यह लेकिन आज बिहार में जो अंजान लोग मर रहे हैं क्या मतलब है किसी किसान को जो हालैंड में काम करता हो, क्या प्रयोजन है किसी बच्चे को, जो बेलजियम में पढ़ता हो, क्या मतलब है उसे कि बिहार में कोई मर रहा है, मर जाए। उदयपुर के आदमी को उतनी फिक्र नहीं है बिहार के आदमी की जितना अमरीका का किसान सोच-विचार में पड़ा हुआ है कि उसे कुछ भेजें। आज अमरीका में चार किसानों में से एक किसान जितना पैदा कर रहा है, वह हिंदुस्तान आ रहा है और यह बात जानते हुए कि हिंदुस्तान के नासमझ लोग गाली देते रहेंगे कि यह भौतिकवादी है, पापी है और हम अध्यात्मिक है, यह जानते हुए यह आ रहा है। हम गाली दिए जा रहे हैं सारी दुनिया को और वह सारी दुनिया हमारे लिए हर तरह की चिंता किए जा रही है यह कभी पिछले दिनों में संभव हुआ था, कभी संभव हो सकता था, यह संभव हुआ है।

लेकिन हमें यह पीछे का रोग क्यों पकड़ता है कि पीछे सब अच्छा था, इसके कुछ बुनियादी मनोवैज्ञानिक कारण है।

पहला कारण तो यह है, पहला बुनियादी कारण तो यह है, यह थोड़ा सोचने-समझने जैसा जरूरी है। हर आदमी का मन बचपन में आनंद का अनुभव करता है, बचपन में न तो चिंता होती है, न फिक्र होती है, मां-बाप फिक्र करते हैं, चिंता करते है, बच्चा सिर्फ जीता है। कोई दायित्व नहीं, कोई बोध नहीं, कोई भार नहीं, फिर बच्चा बड़ा होता है, जैसे-जैसे जवान होने लगता है दायित्व बढ़ता है, बोझ बढ़ता है। उसे दिखाई पड़ने लगता है कि बचपन बहुत अच्छा था, बड़ी मुसीबत शुरू हो गई। इस भांति उसका चित्त पीछे की तरफ सोचना शुरू कर देता है कि पीछे अच्छा था, अब सब गड़बड़ हो गया है। फिर जैसे-जैसे वह बड़ा होता है, जवान होता है, प्रौढ़ होता है, बूढ़ा होता है, कठिनाई बढ़ती जाती है। उसका चित्त सोचने लगता है, पीछे सब अच्छा था, अब सब गड़बड़ होता जा रहा है।

एक-एक व्यक्ति को यह अनुभव होता है उसके चित्त में कि पीछे सब अच्छा था, अब सब गड़बड़ होता जा रहा है, यह जो बुद्धि का निर्माण हो जाता है, पीछे सब अच्छा था, 'यह मूड आफ थींकिंग', यह सोचने का ढंग फिर सारी चीजों में काम करता है और वह कहता है कि पीछे सब अच्छा था और अब सब गड़बड़ हो गया है। इसका संबंध व्यक्तिगत मन की सोचने की विधि से है, हमारा व्यक्तिगत मन बचपन में आनंद अनुभव करता है, बाद में दुख अनुभव करता है। हर आदमी

इसलिए उसके सोचने का ढंग यह हो जाता है। पहले सब अच्छा था फिर इस बात को वह हर चीज पर लागू करता है, समाज पर, जीवन पर, संस्कृति पर, सभ्यता पर पीछे सब अच्छा था, यह उसके चित्त में बैठी हुई बचपन की याद है जो काम करती है और इसके आधार पर वह जो नतीजे लेता है, वह नतीजे एकदम भ्रांत और झूठ है, उनमें कोई अर्थ नहीं है।
मनुष्य विकसित हो रहा है, मनुष्य आगे जा रहा है, मनुष्य की चेतना निरंतर ऊर्ध्वगामी है और यही उचित है। परमात्मा के इस जगत में नीचे जाना कैसे संभव है। नीचे जाने की बात अधार्मिक है, मनुष्य तो ऊपर जा रहा है। रोज नए अनुभव उसे और ऊपर ले जा रहे है, लेकिन कुछ लोगों को लग रहा है कि नीचे जा रहा है, उनके निहित स्वार्थ टूट रहे हैं, जिन-जिनके स्वार्थ थे उनको लग रहा है कि मनुष्य नीचे जा रहा है। जो मंदिर में बैठकर पूजा करता था आज मंदिर में कम लोग जा रहे हैं कल की बजाय। जो पादरी चर्च में भाषण करता था उसके भाषण सुनने लोग नहीं जा रहे है, जो किताबें कल तक भगवान की किताबें समझी जाती थी लोग समझने लगे वह भी आदमियों की किताबें हैं। दुख पैदा हो रहा है, परेशानी पैदा हो रही है, पुरोहित का वर्ग सारी दुनिया में परेशान है क्योंकि उसका धंधा एकदम विलीन हो रहा है। लोग समझ रहे हैं, भगवान मंदिर में नहीं है। लोग समझ रहे है, भगवान जीवन में हैं। लोग समझ रहे हैं, गंडे, ताबीज, तंत्र-मंत्र नासमझियां हैं। लोग जीवन के सूत्र खोज रहे हैं, लोगों की आंखें खुल रही हैं कि तुम उनको अब समझाओ कि नरक में सड़ोगे तो वे विश्वास करने को राजी नहीं है। तुम उनको कहो कि स्वर्ग में आनंद मिलेगा, दान करो तो भी वे विश्वास करने को राजी नहीं हैं।
विश्वास की शक्ति कम हुई है...होगी, जब विचार विकसित होता है, तो विश्वास कम होता है, विश्वास अंधापन है, जब आंखें खुलती है तो कोई आदमी विश्वास नहीं करता है, विचार करता है। दुनिया में विचार जग रहा है, विश्वास शिथिल हो रहा है इसलिए जो लोग विश्वास को धंधा बनाए हुए थे और विश्वास के आधार पर जी रहे थे, वे सब परेशान हो गए।
थाईलैंड में चार करोड़ की आबादी है...चार करोड़ में बीस लाख भिक्षु हैं, साधु हैं, चार करोड़ की आबादी में बीस लाख साधु। थाईलैंड के युवकों ने कह दिया कि अब साधुओं थे लेकिन खेती-बाड़ी करो, अनाज पैदा करो, मुफ्त हम खाने नहीं देंगे। तो थाईलैंड का साधु कहता है, जमाना बिलकुल बिगड़ गया, यह क्या बात कर रहे हो। यह कोई बात करने की है, साधुओं ने कभी काम किया है, साधुओं ने कभी खेती-बाड़ी की है, जूते सीए हैं, कपड़े बुने हैं, साधु यह नहीं करता, तो थाईलैंड कहेगा कि फिर साधु मत रह जाओ लेकिन अब बीस लाख लोगों की पलटन को मुफ्त नहीं पोसा जा सकता। भारी पड़ गई है—चार करोड़ की आबादी में बीस लाख आदमी कितने भारी हो गए हैं, तो वे बीस लाख आदमी चिल्लाकर कह रहे हैं कि जमाने का पतन हो गया और बीस लाख आदमी जब चिल्लाकर कह रहे हो तो सबके दिमाग में यह बात पैदा हो जाती है कि पतन हो गया है, जरूर हो गया होगा, लेकिन यह बीस लाख लोग अब जी नहीं सकेंगे।
हिंदुस्तान में भी वही हालत है, सारी दुनिया में भी वही हालत है, कैथेलिक पादरियों की संख्या बारह लाख हैं, बारह लाख आदमी बिना कुछ किए जी रहे हैं। बारह लाख पादरी है सारी दुनिया में वे मुफ्त जी रहे हैं, उनके आप पैर भी छू रहे हैं, आदर भी दे रहे हैं, भगवान भी मान रहे हैं, वे मुफ्त जी रहे हैं, कुछ क्रिएट नहीं किया, कुछ पैदा नहीं कर रहे। एक ही काम करते हैं, वक्त आ जाए तो लड़वाने का काम करते हैं। प्रोटेस्टेंट से लड़ो तो कैथेलिक पादरी लड़वाना का काम करता है, मुसलमान से लड़ो तो लड़वाने का, एक धंधा है पादरी के पास के लड़वाने का वक्त आ जाए तो वह भाषण देता है कि लड़ो और समझाता है कि अगर धर्म के युद्ध में मर गए तो मोक्ष बिलकुल निश्चित है और पागल होते हैं जो इस मोक्ष की आशा में मर भी जाते हैं। अब यह बारह लाख पादरी परेशान है क्योंकि इंगलैंड और यूरोप और अमरीका में लड़के उनसे कह रहे हैं कि अब यह आगे नहीं चलेगा, यह आखिरी वक्त हैं, यह आखिरी पीढ़ी है जो तुमको चलने दे रही हैं। यह फौज-फांता हम नहीं पाल सकते, इसकी कोई जरूरत भी नहीं है। चर्च खाली होते जा रहे हैं इसलिए परेशानी, क्योंकि जब चर्च नहीं आते, चर्च में सुनने वाले, तो दान भी नहीं आता, दान नहीं आता तो पादरी भी मुश्किल में पड़ता है। अब नए युवक यज्ञ नहीं करवाएंगे, हवन नहीं करवाएंगे, तो यज्ञ और हवन पर जो जी रहे थे, वे क्या कहेंगे। वे कहेंगे कि अधर्म आ गया है, धर्म के दिन चले गए, न लोग यज्ञ करते हैं, न हवन करते हैं, सच्चाई यह है कि यज्ञ और हवन करने वाले लोग नासमझ थे। उनके पास विचार की शक्ति नहीं थी, कोई वैज्ञानिक बुद्धि नहीं थी, इसलिए उनको कोई भी शोषण कर रहा था, अब यह तो वक्त नहीं रहा, तो बीच में आने वाले पचास वर्षों में यह होगा कि सारी दुनिया में एक अव्यवस्था मालूम पड़ेगी जो व्यवस्था थी

वह टूट जाएगी और जब कोई पुरानी व्यवस्था टूटती है और नई व्यवस्था निर्मित होती है तो बीच में एक संक्रमण का वक्त होता है जो बड़ी पीड़ा का और तकलीफ का होता है। हम सारी दुनिया में उसी वक्त से गुजर रहे हैं, संक्रमण का एक समय है, जब हमने पुराना मकान तो गिरा दिया है और नया अभी बना रहे हैं, तो बीच में थोड़ी तकलीफें झेलने का वक्त हैं। लेकिन दुनिया किसी बुरे रास्ते पर नहीं है, विचार उसे भले रास्ते पर ले जा रहा है और अगर कहीं कोई दिखाई पड़ती हो बुराई तो मेरा कहना है कि वह पिछली ही पीढ़ियों से पैदा हुई, पिछली ही संस्कृतियों से पैदा हुई।

जैसे हम देख रहे हैं यह बात सच है—आप कहेंगे कि दिखाई, दिखाई पड़ता है। आदमी नैतिक नहीं रह गया, झूठ बोलता है, धोखा करता है, पाप करता है, यह पूछे है सारे प्रश्न की यह आदमी करता है। तो आप सोचते हैं आदमी बुरा हो गया है। मैं आपसे यह कहना चाहता हूं कि अब तक आपने आदमी को पाप से रोकने के लिए जो उपाय किए थे, वे उपाय गलत थे। अब तक फिअर सिर्फ एक उपाय था, धार्मिक लोगों में भय, भय के आधार पर दुनिया में पाप रोकने की कोशिश की थी, घबड़ाया था लोगों को कि नर्क में डलवा देंगे, कड़ाही में जलाये जाओगे, यह होगा, वह होगा, जन्म-जन्म तक कुत्ते हो जाओगे, बिल्ली हो जाओगे, योनियां बदल जाएंगी, कष्ट भोगोगे, चौरासी करोड़ योनियों में भटकोगे, फिर मनुष्य में पाओगे। ऐसी-ऐसी घबराहट और फिअर पैदा किया था और इस भय के आधार पर उसको अच्छा बनाया था कि चोरी मत करो, बेईमानी मत करो, भय के आधार पर नीति खड़ी की गई थी। जब तक लोग अंधे थे उस नीति में काम किया, अब लोग विचार करने लगे और विचार में उनको दिखाई पड़ने लगा कि यह नरक है भी या नहीं। भय के जो मुद्दे थे वे विचार के सामने टूट गए, तो अब उस आदमी को आप कहिए नरक चले जाओगे अगर चोरी की तो वह कहता है कि कोई हर्जा नहीं चले जाएंगे आप फिक्र मत करो। क्योंकि मेरा काम में कोई पक्का भरोसा नहीं कि है, तो अब वह चोरी कर रहा है, आपका पुराना ढंग जो था, वह व्यर्थ हो गया और आपको नया ढंग सूझ नहीं रहा कि वह चोरी से कैसे बचे।

पांच हजार साल तक केवल भय के आधार पर हमने आदमी को बेईमानी और चोरी करने से रोका, वह आधार नासमझ लोगों में चल सकता था, समझदार लोगों में नहीं चल सकता। तो फिर अब क्या हुआ। हमारा आधार गलत था इसलिए लोग अनैतिक दिखाई पड़ रहे हैं। नए आधार रखने होंगे, भय आधार नहीं हो सकता, फिअर के आधार पर कोई आदमी कभी नैतिक नहीं होता।

चौरस्ते पर एक पुलिस वाला खड़ा हुआ है और आप वहां से निकलते और चोरी नहीं करते। तो आप यह मत सोचना कि आप नैतिक है, लेकिन चौरस्ते पर कोई पुलिस वाला नहीं है और आप चोरी नहीं करते, तो ही आप समझना कि आप नैतिक है। अदालतें, कानून, पुलिस सब रोकते हो, तो आप चोरी नहीं करते, इससे कोई नैतिकता का संबंध नहीं है सिर्फ भय है। तो हमने बहुत भय खड़े किए चौरस्ते पर पुलिस वाला खड़ा है। फिर अदालत है, फिर नीचे नरक है और फिर ऊपर सुप्रीम कांस्टैबल है, भगवान! वह सबसे बड़ा पुलिस वाला, वह ऊपर से देख रहा है, नजर रखे हुए हैं हर एक को कि किसी ने चोरी की, तो उसको फिर सजा दिलवानी है, नरक में डालना है, वह यही धंधा कर रहा है बेचारा हजारों साल से, बहुत ऊब गया होगा, परेशान हो गया होगा। उसकी तो कोई गति नहीं है, उसकी कोई ट्रांसफर भी नहीं होता, उसकी कोई बदली नहीं होती, वह कोई रिटायर नहीं होता, वह भगवान ऊपर बैठा हुआ है और एक-एक आदमी का पाप देख रहा है—कितने आदमी, कितने आदमी मर चुके हैं और वह पाप देखते-देखते कितना नहीं घबड़ा गया होगा, पागल नहीं हो गया होगा, उसको ऊपर बिठाए हुए हैं। यह हमने आदमी को घबड़ाने के लिए सारा इंतजाम किया और इस घबड़ाहट में इस डर में आदमी अगर थोड़ा-सा नैतिक मालूम पड़ता था, वह नैतिकता झूठी थी। आज यह सारा भय छूट गया, मनुष्यों को उदय हुआ विचार, उसने चीजें देखी और सोची हो उसे लगा कि यह मामले सच्चाई के नहीं है, कल्पना के हैं और कल्पना के हैं।

आपको पता है कि तिब्बतियों का नरक कैसा होता है और हिंदुओं का नरक कैसा होता है। हिंदुस्तान में हम गर्मियों से परेशान है तो हमने नरक में गर्मी का इंतजाम किया हुआ है, आग जल रही है, कढ़ाहे जल रहे हैं, तेल खौल रहा है लेकिन तिब्बत, तिब्बत ठंड से परेशान है तो अपने पापियों के लिए अगर गर्म जगह भेज दें तो पापी बहुत प्रसन्न हो जाएंगे तो उन्होंने इंतजाम किया है कि वहां ऐसी बर्फ है जो कभी गलती ही नहीं, बर्फ ही बर्फ है तिब्बतियों के नरक में और उस नरक में डाल देंगे। बर्फ ही बर्फ में ठंडक-ठंडक में मरेगा आदमी। तिब्बतियों के लिए बर्फ का भय हो सकता है इसलिए तिब्बत में नरक

में बर्फ है। हिंदुओं के लिए, भारतीयों के लिए, गर्मी का भय है इसलिए गर्मी का। अगर हिंदू को, तिब्बतियों के नरक में भेज दिया जाए तो वह समझेगा किसी एअरकंडीशन दुनिया में भेज दिया गया। वह एकदम आनंदित होकर नाचने उठेगा कि लगेगा स्वर्ग आ गया। लेकिन सारी दुनिया के अगर नरकों का आप विचार करेंगे तो हैरान हो जाएंगे। हर कौम में जो तकलीफ है, वह तकलीफ नरक में पैदा कर दी है। वही तकलीफ नरक में पैदा कर दी, भय देने के लिए और स्वर्ग में, स्वर्ग में प्रलोभन दे दिया है, भय का उलटा प्रलोभन है जो लोग अच्छे काम करेंगे, उनको स्वर्ग भेज देंगे और स्वर्ग में क्या होगा। अरब के मुल्कों में, क्या वादा किया गया है मुसलमान मुल्कों में, वादा किया गया है कि स्वर्ग में, शराब के झरने बह रहे हैं। हद हो गई, यहां हम समझाते हैं लोगों को कि शराब मत पीओ, जो शराब नहीं पीएगा, उसको स्वर्ग में शराब की नदियां बह रही है। पीए, नहाए, डूबे जो करना हो करें, यह प्रलोभन है। जमीन पर स्त्रियों को हम कहते हैं, स्त्रियों से बचना, संयम रखना, लेकिन स्वर्ग में हमने अप्सराओं की व्यवस्था कर दी और अप्सराएं जो लोग स्त्रियों से यहां बचेंगे, उनको मिलेंगी और वह अप्सराएं बहुत अच्छी होंगी, यहां कि स्त्रियां तो आखिर बूढ़ी हो जाती है, अप्सराएं कभी बूढ़ी नहीं होती। उनकी उम्र सोलह ही वर्ष बनी रहती है, कोनसटेंट, उसमें फर्क नहीं पड़ता। उम्र बदलती नहीं बस सोलह पर टिकी रहती है, अप्सराओं की उम्र सोलह ही रहती है उसके ऊपर नहीं जाती। यह प्रलोभन है हमारे, हद, बेईमानी, हद नासमझी और मनुष्य के साथ खूब खिलवाड़ किया गया है। यह वहां उनको मिल जाएगा, यहां इच्छाओं से बचना, कामनाओं से बचना, वहां हमने कल्पवृक्ष निर्मित कर रखे हैं उनके नीचे बैठना और जो कामना करो, पूरी हो जाएगी। तो यहां नरक का भय है और स्वर्ग का प्रलोभन, इन दो के बीच हम आदमी की कोशिश किए कि तुम नैतिक हो जाओ, जो आदमी अंधा था, विचारहीन था, वह रुक गया होगा, लेकिन उसका रुकना नैतिकता नहीं है।

क्योंकि जिस चीज में भय के कारण हम रुकते हैं, प्रलोभन के कारण रुकते हैं, उसमें हम वस्तुतः नहीं रुकते, हमारा चित्त तो काम करता ही रहता है, करता ही रहता है...ऊपर से हम रुक जाते हैं। यह नीति खतम हो गई है और यह अच्छा हुआ है, यह शुभ है, यह नीति गलत आधारों पर खड़ी थी, अब एक नई नीति को जन्म देने का सवाल है और यह पुराने लोग जो पुरानी नीति के अतिरिक्त सोचने में जरा भी समर्थ नहीं है, उनको ऐसा लग रहा है कि आ गया यह तो महाकाल का समय, प्रलय आ जाएगी, अब क्या होगा। नहीं साहब, प्रलय नहीं आ जाएगी, नई नीति का जन्म होगा। मनुष्य के ऊपर जब संकट खड़े होते हैं तभी विचार पैदा होता है। अब एक बड़ा संकट, एक बड़ी क्राइसिस पैदा हो गई, सारी दुनिया में कि क्या करे नीति अब कैसे खड़ी हो, भय पर अब खड़ी नहीं हो सकती, प्रलोभन पर अब खड़ी नहीं हो सकती। वह पिटे-पिटाए रास्ते गए, अब बच्चे स्वर्ग-नरक नहीं मानेंगे, छोटा सा बच्चा मुझसे एक स्कूल का पूछता था कि कहां है यह नरक मुझे बताइए? मैंने तो पूरी भूगोल पढ़ डाली, उसमें कहीं है नहीं। यह बच्चा उन बूढ़ों से ज्यादा विकसित है जिन्होंने नरक मान लिया होगा चुपचाप। यह ज्यादा विकसित है, इसकी चेतना ज्यादा प्रबुद्ध है, इसकी प्रबुद्ध चेतना के लिए नई नीति चाहिए, उसी नई नीति की मैं आपसे बात कर रहा हूं। वह नीति शांत मन से निकलती है, भयभीत मन से नहीं।

जब कोई व्यक्ति चित को शांत करता है, तो शांत चित अनैतिक होने में असमर्थ हो जाता है। किसी भय के कारण नहीं, किसी प्रलोभन के कारण नहीं। एक आंतरिक बोझ के कारण शांत मनुष्य, विचार वहां मनुष्य जाग्रत मनुष्य अनैतिक होने में असमर्थ हो जाता है।

अनैतिकता सोए हुए मन का लक्षण हैः इसकी हम तीन दिन से बात कर रहे हैं।

सोया हुआ आदमी जो भी करेगा—वह अनैतिक होगा। जागा हुआ आदमी जो भी करेगा—वह नैतिक होगा। तो जागरण कैसे आ जाए, तो हम जगत में एक नई नीति के जन्म की शुरुआत कर सकेंगे, करनी पड़ेगी, सोचना पड़ेगा, खोजना पड़ेगा कि छोटे-छोटे बच्चे के चित को हम कैसे जाग्रत कर सकें। अभी तो हम भयभीत करते थे और भयभीत होने से चित विकसित नहीं होता, कृपल्ड होता है, ग्रंथि से भर जाता है, दब जाता है, यही तो वजह है जिन-जिन कौमों में बहुत ज्यादा इस तरह की बातें सिखाई, उन कौमों के बच्चे विकसित नहीं हो पाए, हमारी कौम के बच्चे सबसे कम विकसित हैं।

दुनिया में आज किसी भी कौम के बच्चों के सामने हमारे बच्चे कमजोर हैं, बौद्धिक रूप से, शारीरिक रूप से, मानसिक रूप से, सब तरह से कमजोर हैं। उसका कुल कारण इतना है कि हमने उनको दबाया, दबाया, कभी हमने उन्हें चित को

स्वतंत्रता से विकसित होने का मौका नहीं दिया। हमारे बच्चे वैसे हैं जैसे पौधा पैदा हो और जगह-जगह से हम उसको मोड़ दें, इधर जाओ, इधर जाओ, सब तरफ से शाखाएं उसकी दबाएं तो आखिरी में एक पौधा पैदा होगा पंगु, जिसमें पत्ते तो लगेंगे, लेकिन उनमें जान न होगी, जिसमें डाले तो निकलेंगी, लेकिन वे इतनी घुमाई-फिराई गई होंगी कि बेजान हो जाएंगी। वह कुरूप अगलीनेस का सबूत हो जाएगा और कुछ भी नहीं।

अक्षम तो सारी दुनिया में है कि मनुष्य का चित—ज्ञान, शांति, अभय इनके आधार पर कैसे नैतिक हो सकता है, हो सकता है। कोई कठिनाई नहीं है, बल्कि सच्चाई यह है कि तभी हो सकता है और कभी नहीं हो सकता और कभी नहीं हो सकता, भय के आधार पर कोई नैतिक नहीं हो सकता। भय खुद ही अनीति है, भय सबसे बड़ी अनीति है, लेकिन हम तो कहते रहे हैं, गॉड फिअरिंग, ईश्वर भीरु, ईश्वर से डरने वाला धार्मिक होता है और मैं आपसे यह कहता हूं जो किसी से भी डरता है, वह कभी धार्मिक नहीं होता। डरने वाला कभी धार्मिक होते ही नहीं, धार्मिक तो वह होता है जो डरता ही नहीं। अभय, फिअरलेसनेस, उसका पहला सूत्र है वही धार्मिक हो सकता है। वही नैतिक हो सकता है, जो अभय को उपलब्ध होता है। जो सारे भय से मुक्त हो जाता है, यह भय की मुक्ति की खोज बच्चों के लिए करनी है।

मनुष्य का ह्रास नहीं हुआ हैं। एक संस्कृति का, एक सभ्यता का ह्रास हो गया है, वह गलत थी इसलिए ह्रास हो गया और कोई कारण नहीं था। अब मनुष्य बिना संस्कृति के खड़ा है, उसकी नई संस्कृति की खोज का सवाल हैं और वे लोग जो पुरानी ही बातों को दोहराए चले जा रहे हैं, वे मनुष्य के संकट को मिटाने में सहयोगी नहीं होंगे। क्योंकि वे पुराने ढांचे गलत हो गए थे इसलिए छोड़ने पड़े हैं, उन्हीं ढांचों को हम वापिस आदमी के ऊपर थोपने की कोशिश करेंगे, जितनी देर तक, उतनी देर तक नई दिशाएं नहीं खुल सकेंगी। एक बात स्पष्ट रूप से जान लेना जरूरी है, एक जमाना मर गया, जो कल तक था। लेकिन उसकी मृत्यु से कोई अहित नहीं हो गया, एक नया जमाना पैदा हो सकता है जो कल होगा, इसलिए जो लोग भी थोड़ा सोच-विचार करते हैं, उन्हें खोज करनी चाहिए कि किन कारणों से पुराना ढांचा मर गया, किन कारणों से और नया ढांचा किन कारणों से खड़ा हो सकता है और विकसित हो सकता है। हमारी पुरानी पूरी नीति दमन, सप्रैशन की थी, दबाव-दबाव-दबाव, लेकिन मन मुक्त करों, खोलों, उसके द्वार खोलों, पहचानो, वह नहीं थी, वह गई, लेकिन यह कोई पतन नहीं है, यह विकास है।

मनुष्य ज्यादा सुदृढ़ भूमि पर ज्यादा आलोकित भूमि पर कदम रख रहा है। तो मुझे तो ऐसा नहीं दिखाई पड़ता कि आज का आदमी बुरा है कल के आदमी से। मैं तो आशान्वित हूं, आज का आदमी बहुत भला है और मैं यह भी कहना चाहता हूं, कल का आदमी और भला होगा। परसों का आदमी और भला होगा, विकास आगे की तरफ है, क्योंकि विकास परमात्मा की तरफ है। बीज विकसित हो रहा है आगे की तरफ, केवल वे ही लोग उस विकास में बाधा बनते हैं, जो ढांचों के ऊपर जोड़ पकड़ लेते हैं।

एक बच्चा घर में पैदा होता है, हम उसको कपड़े पहनाते हैं। फिर बच्चा बड़ा होने लगता है, अगर हमारा कपड़ों से बहुत मोह हो तो हम कहेंगे, यह बच्चा बिलकुल बिगड़ता जा रहा है, बच्चा बिलकुल बिगड़ रहा है। कल तक जो कपड़े ठीक आते थे, अब यह गड़बड़ कर रहा है और कपड़े ठीक नहीं आ रहे हैं। अगर हम कपड़ों की बहुत प्रेमी हो तो बच्चे की टांग काट देंगे, हाथ काट देंगे ताकि कपड़े के भीतर रहे, क्योंकि कपड़ा हमने इतनी मुश्किल से बनाया है, लेकिन अगर हम बच्चे को प्रेम करते हैं, तो हम कहेंगे यह कपड़ा फेंक दो, नए कपड़े बनाओ, बच्चा विकसित हो रहा है। मनुष्य जाति विकसित हो रही है तो जो कपड़े तीन हजार वर्ष पहले उसे पहनाए गए थे, वे तंग हो गए हैं, वे उसके प्राणों में फंदा बन गए हैं और हम कहते हैं यह आदमी गड़बड़ हुआ जा रहा है। हमारे सब कपड़े फिजूल हुआ जा रहा हैं, हमारी सारी नीति, हमारा धर्म, हमारे शास्त्र फिजूल हुए जा रहे हैं। तो उस आदमी को काटो, छांटो ताकि कपड़े के भीतर रहे। नहीं आदमी गड़बड़ नहीं हुआ है आपके ढांचे छोटे पड़ गए हैं। ढांचे बदल देने होंगे, आदमी तो विकसित हो रहा है और आदमी की सारी तकलीफ तभी पैदा होती हैं जब वह तो विकसित हो जाता है और ढांचा छोटा रह जाता है।

किसी के बड़े आदमी को छोटे बच्चे का कमीज पहना दें तो जैसी हालत हो जाएगी, वैसी हालत पूरी मनुष्य जाति की आज है, मनु महाराज को हुए हो गए होंगे ढाई हजार, तीन हजार साल और तीन हजार साल पहले, मनु महाराज जो लिख गए,

वह आज के आदमी को पहनाया जा रहा है। हद नासमझी की बात है, तीन हजार साल में क्या हम भाड़ झोंकते रहे, तीन हजार साल में कोई विचार नहीं किया, आदमी के बाबत मेरी खोज नहीं की। तीन हजार साल में उन्होंने कुछ भी नहीं जाना, कोई नया अनुभव नहीं कि मनु के आगे हम विकसित हो सकें, लेकिन नहीं मनु जो ढांचा दे गया, उस पर हम खड़े हैं और तकलीफ इसलिए हो रही है कि ढांचा बदलने को हम राजी नहीं है, हम इसी के लिए राजी है कि चाहे आदमी को बदलना पड़े, ढांचा हम न बदलेंगे। तो फिर तकलीफ खड़ी हो गई है, उससे आदमी के ऊपर हम क्रोधित हो रहे हैं, निंदा कर रहे हैं उसकी और वही बातें दोहराए जा रहे हैं, जिनसे आदमी विकृत हो रहा है। छोटे-छोटे बच्चों को हम क्या सिखा रहे हैं, वे ही गलत बातें जिनकी वजह से आदमी परेशान है, हम उसे सिखाए जा रहे हैं।

इस संबंध में एक प्रश्न पूछा है, उसकी भी इसी संबंध में बात कर लूं। एक मित्र ने पूछा है, कि अगर हम बच्चों को कोई भी शिक्षा न दें, तब तो बच्चे बिगड़ जाएंगे। अगर हम उनको आदर्श न सिखाएं, अगर हम उनको सिद्धांत न सिखाएं तो वे बिगड़ जाएंगे। बड़े मजे की बात है, कि आप तीन हजार साल से सिखा रहे हैं, फिर भी वे बिगड़ क्यों गए है। आदर्श भी सिखा रहे हैं, शिक्षा भी दे रहे हैं, सिद्धांत भी, गीता भी पिला रहे हैं, रामायण, कुरान, बाइबिल भी पिला रहे हैं और फिर भी वे बिगड़ गए। तीन हजार साल से आप क्या कर रहे हैं और। तो मैं यह नहीं कहता हूं कि कुछ भी न सिखाएं, मैं यह कहता हूं कि उनके ऊपर थोपे नहीं, उनके भीतर जो छिपा है, उसे सहारे बनें, उसे विकसित करें।

दो बातें हैंः एक बच्चे पर हम थोप दें कोई बात, तो बच्चे की आत्मा हमेशा के लिए परतंत्र हो जाती है और बच्चे के भीतर जो छिपी हुई शक्तियां हैं उनको सहारा दें, उनको विकसित होने का मौका दें, समझे उस बच्चे को और उन ताकतों को उसके भीतर सोई हैं, जगाएं, तो बच्चा विकसित होगा। बच्चे के ऊपर ढांचे नहीं देने होते, उसकी चेतना को दिशा देनी होती है और हम ढांचे देते रहे, हम छोटे-छोटे बच्चों को क्या कहते हैं। हम उनसे कहते हैं, महावीर जैसे बनो, बुद्ध जैसे बनो, गांधी जैसे बनो, यह बात एकदम गलत है। कोई बच्चा क्यों महावीर जैसा बने? वह खुद बनने को पैदा हुआ है, कोई महावीर की ट्रू कॉपी बनने को पैदा हुआ है। उसकी जिंदगी अपनी है, वह अपनी आत्मा लेकर आया है, क्यों बने महावीर जैसा, क्यों बुद्ध जैसा बने, क्यों गांधी जैसा बने, वह खुद अपने जैसा बनेगा। लेकिन हम उसे सिखा रहे हैं कि फलां जैसे बनो, उस जैसे बनो और सिखाने का परिणाम यह होगा कि अगर बच्चा बुद्ध, महावीर और राम जैसा बनने की कोशिश में पड़ गया तो एक बात तय है वह जो होने को पैदा हुआ था, वह नहीं बन पाएगा।

और वही होता है उसका विकास, वही होती है उसकी आत्मा वह नहीं हो पाएगा और जब उसका विकास नहीं हो पाएगा, उसकी आत्मा पूर्णतः को नहीं पा पाएगी, तो वह होगा दुखी, पीड़ित, परेशान, चिंतित, हैरान उसकी समझ में नहीं आएगा, यह क्या हो रहा है और क्या आपको पता है—कि आज तक जमीन पर कोई एक आदमी दूसरे आदमी जैसा हुआ है।

बुद्ध को हुए ढाई हजार साल हो गए, फिर दूसरा बुद्ध क्यों नहीं पैदा हुआ अब तक। ढाई हजार साल कोई कम वक्त राम को हुए और भी वक्त हो गया, अब तक दूसरा राम क्यों पैदा नहीं हुआ। कोई कम समय मिला है राम को होने में फिर दुबारा, लेकिन सच्चाई यह है और हमारी आंखें इतनी अंधी है कि हम देखते नहीं, फिर भी हम दोहराए चले जा रहे हैं, राम जैसे बनो, कृष्ण जैसे बनो, क्राइस्ट जैसे बनो। सच्चाई यह है कि कोई आदमी कभी किसी दूसरे जैसा न बन सकता है, न बनने की जरूरत है। हर आदमी यूनीक है, हर आदमी बेजोड़ है, हर आदमी अद्वितीय है, परमात्मा अदभुत कलाकार मालूम होता है। वह एक ही चीज को दुबारा पैदा ही नहीं करता। इतना इनवैंटिव मालूम होता है, इतना अविष्कारक, उसकी अविष्कार की बुद्धि चूकती ही नहीं। वह एक ढांचे को बनाता है और तोड़ देता है फिर नए आदमी बनाता है, वह कोई फैक्ट्री नहीं खोली हुई उसने कि जहां ढांचे लगे हुए हैं, सांचे लगे हुए हैं, एक-सी मॉडल की फॉर्ट गाड़ियां निकलती जा रही हैं हजारों, एक-एक आदमी अद्वितीय और बेजोड़ है, सृष्टि की अदभुत से अदभुत लीलाओं में यह एक लीला है कि हर आदमी बेजोड़ और अलग, हर आदमी अपने जैसा है और किसी जैसा भी नहीं है, लेकिन हम बच्चों को सिखाते हैं दूसरों जैसे हो जाओ। यह शिक्षा बुनियादी रूप से गलत है, इसका फल क्या होगा, उस बच्चे का व्यक्तित्व मर जाएगा। उधार होगा उसका व्यक्तित्व और अगर वह बन भी गया किसी जैसा, तो वह नकल होगी, सच्चाई नहीं है।

राम तो नहीं बन पाएगा, रामलीला का राम जरूर बन सकता है और रामलीला के राम की कोई भी जरूरत दुनिया में नहीं है। क्योंकि रामलीला का राम एकदम झूठा आदमी है, एकदम झूठा, उसमें कोई भी मतलब नहीं है। पाखंड इसी से पैदा हुआ दुनिया में, दूसरे जैसे बनने की कोशिश। अगर किसी फूलों की बगिया में कोई उपदेशक पहुंच जाए और फूलों को समझाने लगे, गुलाब से कहे कि जूही जैसे हो जाओ, चंपा से कहे चमेली जैसे हो जाओ, तो क्या होगा उस बगिया में। पहली बात तो यह है कि फूल उसकी बात ही न सुनेंगे। फूल इतने नासमझ नहीं है जितना आदमी कि हर किसी की बात सुनने लगे, उसकी फिक्र ही नहीं करेंगे, उस उपदेशक बकता रहेगा, न वे ताली बजाएंगे, न संघटन बनाएंगे। लेकिन हो सकता है कुछ फूल आदमियों के साथ रहते-रहते बिगड़ गए हो, साथ रहने से बुरा परिणाम तो होता ही है। जंगल में जो जानवर रहते हैं, उनको वे बीमारियां नहीं होती। आदमी के पास जो जानवर रहते हैं, उनको आदमी की बीमारियां हो जाती हैं, तो आदमी के बगीचों में रहते-रहते कुछ फूल बिगड़ गए हो और उपदेशकों की बातें सुनने लगे हो, तो शायद कुछ फूल सुन ले और मान लें और चमेली, चंपा जैसे होने की कोशिश में लग जाए और गुलाब जूही जैसा होने लगे तो फिर उस बगिया में क्या होगा, वह बगिया उजड़ जाएगी, उसमें फूल फिर पैदा नहीं हो सकेंगे। इसलिए नहीं हो सकेंगे फूल पैदा कि गुलाब सिर्फ गुलाब ही हो सकता है, वही उसकी नियति, वही उसकी डैस्टनी, वही उसका आनंद, वही परमात्मा के द्वारा दिया गया उसका दायित्व है, वह जूही नहीं हो सकता। लेकिन जूही होने की कोशिश में उसकी सारी ताकत तो लग जाएगी जूही होने की कोशिश में और तब वह गुलाब भी नहीं हो पाएगा, क्योंकि ताकत खर्च हो जाएगी जूही होने में। जूही तो हो नहीं सकेगा और इस जूही होने की कोशिश में गुलाब भी नहीं हो पाएगा। उस पौधे पर फिर फूल नहीं आएंगे, वह बगिया उजड़ जाएगी और बगिया उजड़ जाएगी तो उपदेशक कहेगा देखो कैसा कलियुग आ गया है, फूल नहीं लग रहे पौधों में। यह जमाना ही खराब है, यह उपदेशक की करतूत है यह कलियुग। यह जमाना खराब नहीं है, यह फूल में बगिया में फूल आते। यह उपदेशक की करतूत है कि फूल बगिया में नहीं आ रहे।

आदमी की जिंदगी पर जो सबसे बड़ा पाप और दुर्भाग्य हो गया है, वह उपदेशकों की अदभुत शिक्षाएं हैं। उन्होंने हर एक को सिखा दिया, किसी और जैसे हो जाओ। फिर कोई आदमी अपने जैसा नहीं हो पा रहा है। आदमी की जिंदगी में फूल आने बंद हो गए। नई शिक्षा, नई नीति, नया धर्म मनुष्य से कहेगा, तुम भूल कर भी किसी और जैसे होने की कोशिश मत करना, तुम तो खोजना अपने भीतर कि तुम क्या हो सकते हो, क्या तुम्हारे भीतर बीज छिपा है, कौन सी पोटेनशियलिटी है, तुम उसी को विकसित करना, उसी को फैलाना, तुम वही हो जाना, तुम्हारे ऊपर यही दायित्व है परमात्मा का कि तुम वही हो जाना जिसको लेकर तुम पैदा हुए हैं। तुम नकल में मत पड़ना, क्योंकि नकल करने वाला आदमी अपनी आत्मा खो देता है और हम सब नकल में पड़े हुए हैं। अजीब-अजीब नकलें हैं और हममें जो जितना नकल करने में कुशल होता है, वह उतना बड़ा नेता हो जाता है, उतना बड़ा ज्ञानी हो जाता है। हममें जो सबसे ज्यादा ईडियट होता है, हममें जो सबसे ज्यादा मूढ़ होता है, वह सबसे ज्यादा नकल कर पाता है, नकल करने के लिए बुद्धिमत्ता की जरूरत नहीं है, नकल करने के लिए बुद्धिहीनता की जरूरत है।

जितना बुद्धिहीन आदमी हो, उतनी नकल कर सकता है, क्योंकि उसे कोई सोच-विचार ही पैदा नहीं होता, अगर महावीर नग्न खड़े हैं तो वह भी नग्न खड़ा हो सकता है, लेकिन महावीर की नग्नता उनका अपना फूल है, वह उनके अपने भीतर की जिंदगी है, वह उनकी अपनी इनोसेंस, अपने निर्दोष चित्त से आई हुई बात है। वह उनका अपना व्यक्तित्व है, वह नग्नता उनके फूल की अपनी सुगंध है, दूसरा आदमी नंगा खड़ा हो जाए तो महावीर की नग्नता इसकी नग्नता एक हो जाएगी। महावीर की नग्नता निकल रही है उनकी इनोसेंस से, उनकी अपनी निर्दोषता से और यह आदमी नग्नता का अभ्यास करके खड़ा हो गया। यह सर्कस का आदमी है, इसकी नग्नता बिलकुल झूठी है और यह झूठा, नंगा आदमी सब तरह की कोशिश करके बिलकुल महावीर जैसा बन सकता है बल्कि यह भी हो सकता है कि अगर महावीर और इसको परीक्षा में बिठाया जाए तो यह पास हो जाए, महावीर फेल हो जाए। यह इसलिए हो सकता है कि महावीर के लिए जो सहज है, उसमें भूल-चूक भी हो सकती है, इससे भूल-चूक हो ही नहीं सकती, इसका तो गणित का हिसाब है। इसका तो एक-एक रत्ती-रत्ती हिसाब है, ऐसा एक दफे हो गया, इसलिए मैं कह रहा हूं, ऐसी एक परीक्षा हो चुकी।

यूरोप में हंसोड़ अभिनेता है चार्ली चैपलिन, ख्याति नाम है, हजारों-लाखों उसको प्रेम करने वाले है सारी दुनिया में। चैपलिन का जन्मदिन था और उसके मित्रों ने एक जन्मदिन पर एक समारोह आयोजित किया और सारे यूरोप और अमरीका से आमंत्रित किए उन्होंने अभिनेता जो चार्ली चैपलिन का पार्ट करें। चार्ली चैपलिन का पार्ट करने के लिए एक कांपिटीशन रखा, दुनिया भर के अभिनेताओं को आमंत्रित किया कि चार्ली चैपलिन का पार्ट करो। जगह-जगह प्रतियोगिताएं हुई, आखिर में सौ अभिनेता चुने गए और वे लंदन में इकट्ठे हुए। वे सौ अभिनेता चार्ली चैपलिन का पार्ट करेंगे और उनमें जो सबसे अच्छा पार्ट कर सकेगा चार्ली चैपलिन को ऐसे तीन अभिनेताओं को तीन बड़े पुरस्कार इंगलैंड की महारानी देगी। चैपलिन ने अपने में सोचा कि मैं भी दूसरे नाम से भर्ती क्यों न हो जाऊं, मैं भी दर्खवाश्त लगा दूं दूसरे नाम से और प्रतियोगिता में दूसरी नकल से चला जाऊं। कौन पता लगा सकेगा, वहां तो एक से सौ आदमी है, मैं उसमें खो जाऊंगा और पहला पुरस्कार तो मुझे मिल ही जाएगा क्योंकि मैं असली चार्ली चैपलिन हूं। उसने झूठे नाम से दर्खवाश्त भर दी है और प्रतियोगिता में सम्मिलित हो गया। लेकिन जब प्रतियोगिता का फल निकला, तो बड़ी मुश्किल हो गई, उसको नंबर दो स्थान मिला, नंबर एक दूसरा आदमी ले गया। वह असली चार्ली-चैपलिन को नंबर दो का पुरस्कार मिला, यह तो बाद में पता चला कि चार्ली चैपलिन खुद भी थे और नंबर दो आए। इसलिए मैंने कहा कि महावीर का नकल करने वाला साधु, क्राइस्ट की नकल करने वाला पादरी, शंकराचार्य की नकल करने वाला संन्यासी, जीत सकते हैं अगर प्रतियोगिता हो तो उनसे जो कि मूल थे। क्योंकि ये नकल करना एक कुशलता की बात है। यह नकल सारी दुनिया में पैदा हुई और इस नकल की वजह से जो असली आदमी का जन्म होना चाहिए वह नहीं हो पा रहा है।

मेरा कहना है नकल पर खड़ी हुई नीति खतरनाक आत्मघाती, सूसाईडल है। अब एक ऐसी नीति को विकसित करना है कि प्रत्येक बच्चे को खुद होने का मौका मिल सके, बच्चों से कहना है कि तुम अपने जैसे होना। उस मां को, उस पिता को, मैं सच्चा मां और पिता कहता हूं। उस गुरु को मैं सच्चा गुरु कहता हूं, जो अपने बच्चों से कहे कि तुम खुद जैसे बनने की कोशिश करना और कभी भूल कर भी किसी और जैसे मत बनना। तो तुम्हारे भीतर एक सुगंध, एक सौरभ, एक गरिमा पैदा होगी, जिसके लिए तुम जमीन पर आए हो और जिस दिन वह सुगंध तुम्हारे भीतर पैदा होगी, उसी दिन तुम्हारे जीवन में आनंद की घड़ी होगी। उसी सुगंध के आधार पर तुम जान सकोगे उसको जो परमात्मा है, उसके बिना कोई उसे जानता नहीं। खुद को पूरी तरह से विकसित करने पर ही खुद के जीवन की सारी कलियां जब खिल जाती है तभी खुद का व्यक्तित्व जब पूरी तरह प्रफुल्लित होता है तभी, तभी जीवन में आनंद का, कृतज्ञता का, धन्यता का भाव पैदा होता है।

वही धर्म है और वैसा व्यक्ति अनजाने, अनचाहे, बिना प्रयास के शुभ होता है मंगलदायी होता है। क्योंकि जो खुद आनंद से भर जाता है, वह दूसरे को दुख देने में असमर्थ हो जाता है, यह मैं अंतिम बात इस चर्चा में आपसे कहना चाहता हूं। जो खुद आनंद से भर जाता है, वह दूसरे को दुख देने में असमर्थ हो जाता है।

और अनीति क्या है? दूसरे को दुख देना और नीति क्या है? दूसरे को दुख न दे पाना। जो आदमी खुद दुखी है, वह बच नहीं सकता, दूसरे को दुख देने से दुख देगा ही। क्योंकि जो हमारे पास है, वही हम दूसरे को दे सकते हैं। जो हमारे पास नहीं है, वह हम कैसे देंगे। अगर मैं दुखी हूं तो मैं आपको दुख ही दे सकता हूं। मैं आपको आनंद कैसे दूंगा, कहां से दूंगा, वह मेरे पास नहीं है। वह चाहे मैं कितना ही कहूं कि मैं आपको आनंद देना चाहता हूं, प्रेम देना चाहता हूं, लेकिन अगर मैं दुखी हूं तो मैं दूंगा दुख। और अगर मैं आनंदित हूं तो मैं चाहूं भी कि आपको दुख दूं तो दुख न दे सकूंगा। क्योंकि जो मेरे पास है

इधर तीन दिनों में सत्य की खोज में और उस रास्ते पर किन बाधाओं को मनुष्य दूर करे। कि न सीढ़ियों को चढ़ें और किन बंद द्वारों को खोलें, उस संबंध में बहुत सी बातें हुई। बहुत से प्र–ध।न भी उस संबंध में पूछे गए है, आज की रात उन सारे महत्वपूर्ण प्र–ध।नों पर में चर्चा करूं गा, जो शेष रह गए हैं। सबसे पहले अनेक प्र–ध।न पूछे गए हैं कि हजारों वर्षो से हजारों लोग जिन बातों को मान रहे हैं, मैं उन बातों को गलत क्या कहता हूं और जिन बातों को इतने लो ग सही मानते हो, क्या वे बातें गलत हो सकती है। क्या इतनी पुरानी परंपराएं, रूढ़ियां, जिन्हें हम सदा से मानते रहे हैं, भूल भरी हो सकती है।

एक छोटी सी कहानी, इस प्र–ध।न के उत्तर में कहूंगा, उस कहानी से कुछ बात खयाल में आ सकेगी और कुछ इसके पीछे। एक राजा के दरबार में, एक अजनबी अपरिचित आदमी आया औ र उस आदमी ने आकर राजा को कहा, तुमसे बड़ा सम्राट पृथ्वी पर दूसरा नहीं और न इतिहास को ज्ञात है कि कभी तुमसे बड़ा कोई सम्राट हुआ हो। राजा प्रसन्न हुआ, जैसे कि कोई भी प्रस न्न न होता, और उस आदमी ने कहा, लेकिन तुम जैसे महान सम्राट के लिए आदमियों जैसे कप. डे पहनना शोभादायक नहीं। मैं तुम्हारे लिए देवताओं के वस्त्र ला सकता हूं। राजा ने कहा, कुछ भी खर्च हो जाए, कितनी भी संपदा लगे, लाओ तुम देवताओं के वस्त्र, उस आदमी ने कहा, प हली बार ही पृथ्वी पर देवताओं के ये वस्त्र उतरेंगे तुम्हारे लिए। लेकिन बहुत खर्च करना होगा, राजा के पास कोई कमी न थी, उसने खर्च का वचन दिया। राजा के सभी दरबारी चिंतित हुए , वे समझ गए कि कोई चालाक आदमी राजा को धोखा दे रहा है। देवताओं के वस्त्र, आज त क न देखे गए और न सुने गए। छः महीने का वचन दिया, उस आदमी ने और छः महीने हर द ो चार दिन में आकर दस-पांच हजार रुपये वह ले जाता रहा। देवताओं को रि–ध।वत खिलानी थी और कई द9ब0तर के काम निपटाने थे। तब देवताओं तक पहुंचना हो सकता था, अंतिम ि तथि आ गई, जब उसने वचन दिया था कि वह वस्त्र लेकर आ जाएगा। राजा के दरबारी प्रती क्षा में थे कि आखिर में तो फंस ही जाएगा। उस दिन उसके घर पर सिपाहियों का पहरा लगा ि दया गया कि कहीं वह भाग न जाए। लेकिन वह भागने को नहीं था, ठीक समय एक बहुत खूब सूरत पेटी में बंद ताला डालकर वह बाहर निकला। लोग नि–ध।चत हुए, जरूर वह वस्त्र ले अ ाया था, राज-दरबार में वे वस्त्र पहुंचे। सैकड़ों लोग राजा के द्वार पर इकट्ठे हो गए थे। देवताओं के वस्त्र कभी देखे न गए थे, दरबारी हैरान थे, लेकिन अब शक करने की कोई बात भी न थी । वह आदमी पेटी लेकर आ ही गया था, उसने राज-दरबार में जाकर पेटी रखी, उस दिन दरब ार सजा था और महल योतियों से दीपायमान किए गए थे। राजा बैठा था अपने सिंहासन पर इस खुशी में कि पहला मनुष्य होगा वह, जो देवताओं के वस्त्र पृथ्वी पर पहनेगा। उस आदमी ने पेटी का ताला खोला, ताला खोलकर वह खड़ा हुआ और उसने कहा, मित्रों! एक बार सूचना कर दो, जो देवताओं ने मुझसे कही, उन्होंने कहा है कि यह वस्त्र केवल उन्हीं को दिखाई पड़ेंगे, जो ठीक अपने ही पिता से पैदा हुए हो। यह वस्त्र सभी को दिखाई पड़ने वाले नहीं है, यह देव ताओं के वस्त्र है। यह कोई सामान्य आदमियों के वस्त्र नहीं है, उसने पेटी खोली, उसने कुछ उ सके भीतर से निकाला, हाथ तो उसका खाली आया और उसने राजा से कहा, अलग कर दीजि ए अपना कोट और पहनिए यह कोट देवताओं का। राजा को भी हाथ खाली दिखाई पड़ा, दरबा रियों को भी हाथ दिखाई पड़ा, लेकिन बड़ी मु–ध।कल खड़ी हो गई थी। सारे दरबारी ताली पी टने लगे और कहने लगे, इतना सुंदर कोट हमने कभी देखा नहीं।

राजा ने सोचा, अगर मैं यह कहूं कि कोट दिखाई नहीं पड़ता तो व्यर्थ ही पिता के ऊपर संदेह हो जाएगा। खुद तो उसे संदेह हो ही आया, क्योंकि पूरे दरबारी कह रहे थे, ओफ, अदभुत! औ र एक-दूसरे से आगे बढ़े जा रहे थे प्रशंसा में कोट की। राजा ने सोचा, पिता तो मेरा संदिग्ध ह ो गया, अब व्यर्थ इस बात को खोलने से क्या फायदा, इस कोट को पहन ही लो, जो कि था ही नहीं। उसने अपना कोट निकाल दिया, जो कि था और वह कोट पहना जो कि नहीं था। धीरे-धीरे एक-एक वस्त्र निकाले जाने लगे, राजा नंगा होने लगा। एक-एक वस्त्र पेटी से वह निकालने लगा, उसने कहा, यह पहने पजामा, यह पहने टोपी, यह फलां, यह ढिकां, कुछ भी न था, हा थ खाली था। राजा के अपने वस्त्र छिनने लगे, राजा धीरे-धीरे नंगा खड़ा हो गया, केवल अधोव स्त्र रह गया, अंडरवियर रह गया, अंत में उस आदमी ने निकाला अंडरवियर, हाथ में कुछ भी न था। उसने कहा, यह ले और पहने, अब बड़ी मु–ध।कल आ गई। लेकिन मजबूरी थी, दरबा री ताली बजा रहे थे और कह रहे थे, ऐसे वस्त्र तो कभी देखे नहीं और सब एक-दूसरे से आगे

थे ताली बजाने में, क्योंकि कोई भी अपने पिता पर संदेह करवाने के लिए तैयार न था। प्रत्येक को दिख रहा था, हाथ खाली है, पेटी खाली है, लेकिन जब शेष सारे लोग कह रहे हो, तो कौन मु9ब0त अपनी मुसीबत मोल ले, जब सब कहते हैं, तो ठीक ही कहते होंगे। जब इतने लोग कहते हैं तो ठीक ही कहते होंगे, यह तर्क तो स्पष्ट था। राजा का अंडरवियर भी छिन गया, वह पूरी तरह नग्न खड़ा हो गया।

और सारे लोगों ने तालियां बजाई और कहें, धन्य है महाराज! ऐसे वस्त्र पृथ्वी पर कभी नहीं देखे गए, राजा भी बोला मैं भी हैरान हूं, इतने आनंदपूर्ण मालूम हो रहा है, इन्हें पहन कर, ऐसा कभी भी मालूम न हुआ था, उस आदमी ने जो इन वस्त्रों को लाया था, उसने कहा, महाराज! यह वस्त्र पहली दफा उतरे हैं, देवताओं ने कहा था, राजा का जलूस निकाल देना। उस राजधानी में उस दिन उस नंगे राजा का जलूस निकला। गांव भर में खबर पहुंच गई, कि वस्त्र उसी को दिखाई पड़ेंगे, जिसका पिता संदिग्ध न हो, और गांव भर में सभी को वस्त्र दिखाई पड़े। रास्तों पर लोगों ने तालियां बजाई, फूल फेंके और कहा, धन्य, धन्य है। ऐसे वस्त्र, ऐसे वस्त्र कभी नहीं देखे। उस गांव में उस दिन दूसरे गांव से एक अजनबी युवक भी आया था, उसे इस घोषणा की कोई खबर न ही, वह भी भीड़ में खड़ा हुआ था। वह हैरान हो गया, वह चिल्लाया क्या तुम सब पागल हो गए हो। यह राजा नंगा है, लेकिन लोगों ने कहा, पागल है तू, देखता नहीं। इतने लोग जिस बात को कहते हैं वह सच होती है। तेरे अकेले को कौन मानेगा, पागल है तू। और तुझे पता नहीं कि अनजाने कि तूने यह भी बता दिया कि तेरे पिता संदिग्ध है। हम सब अपने पिताओं के पुत्र है, हमें वस्त्र दिखाई दे रहे हैं।

उस राजधानी में जो हुआ था, पूरी मनुष्य-जाति के साथ इधर पांच-छह हजार वर्षों में हुआ है। जिन बातों की कोई सच्चाई नहीं है, वे केवल भीड़ की मान्यता के आधार पर सच होकर खड़ी है। और हर आदमी जानता है कि वे झूठ हैं, लेकिन कौन आदमी अपने ऊपर संदेह करवाए। जब सारे लोग कह रहे हैं कि सच है, तो उसे भी मान लेना होता है, कि सच होंगी।

एक आदमी, एक-एक आदमी जानता है, बहुत गहरे में असत्य क्या है? लेकिन भीड़, भीड़ कहती है यही सत्य है। और भीड़, भीड़ की संख्या, भीड़ का बल और हजारों साल से पैदा हो जाने से भीड़ की ताकत, वह एक-एक आदमी को डरा देती है कि मैं अकेला इस सागर के सामने क्या कहूं, कौन सुनेगा और वह कहेगा भी तो कोई सुनने को नहीं है। यद्यपि प्रत्येक दूसरे आदमी की स्थिति भी यही है, वह भी जानता है कि सरासर झूठ, लेकिन झूठ बहुत दिन दोहराए जाने से और बहुत लोगों के दोहराए जाने से सच जैसे प्रतीत होने लगते हैं।

अडोल्फ हिटलर ने अपनी आत्मकथा ने लिखा है, ऐसा कोई झूठ नहीं है। जिसे निरंतर दोहराया जाए तो जनता के लिए वह सच न हो जाए। और उसने लिखा है कि यह मैं कोई बातचीत और सिद्धांत नहीं कह रहा हूं, यह मैं अपने अनुभव से कह रहा हूं। मैंने निरंतर न मालूम कितने प्रकार के झूठ बोले, लेकिन ठीक से प्रचार किया, लोगों को समझाया और वह सच हो गए। मैं खुद ही बाद में हैरान हो गया, इतने लोग जब मानते हैं, तो ठीक ही होगा। मुझको तो ऐसा लगने लगा, जो कि मैंने ही झूठ बोले थे। जिनकी शुरुआत मुझसे हुई थी और मैं जानता हूं कि वह निरंतर असत्य बातें थी, लेकिन जब सारा मुल्क मानने लगा, तो मुझको तो शक हुआ कि कहीं मैं भूल में तो नहीं है। जब इतने लोग मानते हैं तो ठीक ही मानते होंगे। कोई भी असत्य प्रचार के माध्यम से सत्य हो सकता है। तो जिनको आप कहते हैं, हजारों वर्षों से हम मानते हैं, आपके हजारों वर्षों से मानने से कोई चीज सच नहीं हो जाती। इससे केवल इतना पता चलता है, कि हजारों वर्ष तक प्रचारित होने से कोई भी चीज सच मालूम होने लगती है। और आप कहते हैं हम इतने लोग मानते हैं हमारी भीड़ इतनी है, इतनी संख्या है। संख्या से सत्य का क्या

संबंध, सत्य कोई डेमोक्रेटिक, कोई लोकतांत्रिक पार्लियामेंट थोड़ी है कि वहां आपने हाथ उठा दिए तो सत्य का निर्णय हो जाएगा। कि जिनके पक्ष में यादा हाथ हैं, वे जीत जाएंगे।
कोई लोकतंत्र नहीं है सत्य, सत्य कोई भीड़ की आवाज और हाथों का उठाया जाना नहीं है। उसका निर्णय कोई मत से नहीं होता, पुराने होने से कोई चीज सच नहीं हो जाती और न नए होने से कोई चीज झूठ हो जाती। यह कोई कसौटियां नहीं है, फिर मैंने आपसे यह नहीं कहा है कि जो कुछ भी आप मानते हैं, वह असत्य है। मैंने यह कहा है, मानना असत्य है और इन दोनों बातों में भेद है। मैंने आपसे यह नहीं कहा है कि जो कुछ आप मानते हैं असत्य है। मैं क्यों कहूं, मुझे क्या प्रयोजन है। मैंने आपसे यह कहा है, मानने वाली बुद्धि असत्य है, विचार करने वाली बुद्धि सत्य है। जो मान लेता है और विचार नहीं करता, उसकी बुद्धि असत्य है, उसकी चित्त की दशा असत्य है। वह फिर जो भी मान ले, वह भी असत्य होगा। जिन चीजों पर आपने कभी सोचा नहीं, खोजा नहीं, उन्हें किस भांति मान लिया है, क्यों मान लिया है। सिर्फ इसलिए कि बहुत लोग मानते हैं, सिर्फ इसलिए कि बहुत लोग स्वीकार करते हैं।
यह जो स्वीकृति है, बहुत लोगों के आधार पर खड़ी हुई है। यही मनुष्य के चित्त पर सबसे बड़ा बंधन है और जिस व्यक्ति को सत्य की खोज में निकलना हो, उसे मान्यता के बिलीफ के वि–ध।वास के सारे बंधन तोड़ देने पड़ते हैं, उसे अपने चित्त को मुक्त करना होता है, मान्यता से, ताकि वह जान सके। जो मानता है, वह जानने से वंचित रह जाता है, जो दूसरे पर वि–ध।वास कर लेता है, उसकी खुद की खोज समाषत हो जाती है। और जो इस भांति स्वीकार करता है, वह अंधा है और अंधे के लिए सत्य का दर्शन असंभव है। आंख चाहिए विचार करने वाली, खोजने वाली, सोचने वाली, चिंतन करने वाली, स्वतंत्र, निष्पक्ष बुद्धि चाहिए, वि–ध।वासी की बुद्धि निष्पक्ष नहीं होती। वि–ध।वासी की बुद्धि पक्षपातग्रस्त होती है, प्रजुडिस्ड होती है और जो पक्षपात से भरा है, वह कभी निष्पक्ष होकर सोच नहीं पाता और जो निष्पक्ष होकर नहीं सोच पाता, वह कैसे उपलब्ध हो पाएगा, उसे जो कि सत्य है। यह सवाल नहीं है कि कितने वर्षों से कोई बात दोहराई जा रही है, हजारों ऐसी मूढ़ताएं है, जिनका इतिहास हजारों वर्ष पुराना है। जमीन को हजारों वर्षों तक गोल माना जाता था, नहीं माना जाता था, चपटी माना जाता था। फिर एक दिन जिस आदमी ने कहा, जमीन गोल है, लोगों ने कहा, माफी मांग लो, ऐसी बात कभी मत कहो। हजारों वर्षों से जो बात मानी जाती रही है, वह सच है, उस आदमी को मजबूर किया अदालत में ले जाकर कि तुम माफी मांग लो, नहीं तो फांसी लगा देंगे। वह बेचारा बूढ़ा आदमी था, जिसने यह बात कही थी। सत्तर साल से ऊपर उसकी उम्र हो गई थी, उसे एक गांव से घसीट कर राजधानी तक ले जाया गया था। उसे घुटने के बल जबरदस्ती खड़ा कर दिया गया और कहा, मांग लो माफी और कहो परमात्मा से कि मैंने एक झूठी बात कही है, क्योंकि जो सब लोग मानते हैं और जो बाइबिल तक ने लिखा हुआ है कि जमीन चपटी है। तो तुम कौन हो गोल बताने वाले और बाइबिल तो भगवान के पुत्र की किताब है। तो उसमें कहीं झूठ हो सकता है, असत्य हो सकता है, उस बेचारे में क्षमा मांग ली। लेकिन क्षमा मांगते वक्त, उसके मुंह से एक सच्ची बात निकल ही गई। उसने कहा, हे परमात्मा! मैं माफी मांगे लेता हूं और मैं कहे देता हूं कि जमीन चपटी है, गोल नहीं है लेकिन मेरे कहने से क्या होता है। उसने पीछे से एक बात जोड़ी है कि मेरे कहने से क्या होता है कि जमीन चपटी है, गोल नहीं है लेकिन मेरे कहने से क्या होता है। उसने पीछे एक बात जोड़ी है कि मेरे कहने से क्या होता है, जो है वह है, जमीन तो गोल ही है।
हजारों वर्षों तक हम समझते थे कि सूरज जमीन का चक्कर लगाता है। जिस आदमी ने पहली दफा कहा कि नहीं, सूरज जमीन का चक्कर नहीं लगाता है। जमीन ही सूरज का चक्कर लगाती है, तो बहुत-बहुत परेशानी हो गई है। हमने कहा, यह नहीं हो सकता, यह कभी नहीं हो सक

ता। हजारों साल तक लोग नासमझी की बात मान सकते थे क्या। हम रोज आंखों से देखते हैं ि क सूरज डूबता है, ऊगता है। लेकिन जैसे-जैसे हमारी समझ बढ़ी, हमने जाना कि नहीं। जमीन ही चक्कर लगाती है सूरज के, सूरज नहीं लगाता और कितने ही हजारों वर्षों से यह बात कही गई है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है। सूरज तब भी चक्कर नहीं लगाता था, जब हम मानते थे कि चक्कर लगाता था, अब भी नहीं लगाता है, हमारी मान्यता से सत्य प्रभावित नहीं होता। सत्य अपनी जगह है, हमारी मान्यता गलत होगी, तो हम गलत और अंधेरे में भटकते रहेंगे, हमारा बोध स्पष्ट होगा तो हम सत्य के निकट पहुंच जाएंगे। सत्य हमारी मान्यता से प्रभावित न हीं होता, लेकिन हमारी मान्यता, हमको प्रभावित कर देती है और अंधेरे में ढकेल देती है, क्या करें।

इन तीन दिनों में मैंने आपसे यह कहा है, अपने विचार को निष्पक्ष मान्यता से मुक्त, परंपरा, रू ढ़ियों से ऊपर उठाना जरूरी है, अगर कोई जानना चाहता हो, उसे जो कि है। अगर परमात्मा को खोजना हो, तो परमात्मा के नाम से जो-जो बताया गया, उसे पकड़ कर बैठ रहना खतरना क है, उसे छोड़ देना होगा, उसे छोड़ देना होगा इसलिए कि उसका अभी पकड़ना, अंधेरे में पक. डना है और जो उसे पकड़ कर तृपत हो जाता है, फिर वह सच्चे परमात्मा की खोज ही नहीं करता, उसे कोई जरूरत नहीं रह जाती। इसलिए मैंने जोर दिया है, कि आपका चित्त निष्पक्ष ह ो, विचारपूर्ण हो, जागरूक हो, अंधा न हो, वि–ध्‌वासी न हो, विवेकयुक्त हो अब तक कहा जा ता रहा है–वि–ध्‌वास धर्म है, मैं आपसे कहता हूं, वि–ध्‌वास अधर्म है। वि–ध्‌वास धर्म नहीं है, धर्म है विवेक, धर्म है विचार और चूंकि यह कहा जाता रहा है कि वि–ध्‌वास धर्म है, इ सी वजह से धर्म पीछा पड़ गया, विज्ञान के मुकाबले हारता चला गया। क्योंकि विज्ञान है विचार , विज्ञान वि–ध्‌वास नहीं है, इसलिए विज्ञान तो रोज-रोज गति करता गया और धर्म सिकुड़ता गया, सिकुड़ता गया और सिकुड़ कर वह छोटे-छोटे डबरों में परिणित हो गया। हिंदू का डबरा, मुसलमान का डबरा, ईसाई का डबरा, जैनी का डबरा, वह सागर नहीं रह गया, वह छोटे-छोटे डबरे बन गए और डबरे आप जानते हैं बहुत जल्दी सड़ जाते हैं। क्योंकि वे विराट नहीं होते, छोटे-छोटे होते हैं। तो हिंदू-मुसलमान के डबरे सब सड़ गए, उन सबसे सड़ांध उठ रही है, झगड़े खड़े हो रहे हैं, हिंसा और हत्या हो रही है। सागर चाहिए धर्म का, डबरे नहीं चाहिए, धर्म चा हिए हिंदू और मुसलमान और ईसाई नहीं चाहिए। एक ऐसी दुनिया चाहिए जहां धर्म तो हो लेि कन हिंदू और मुसलमान न रह जाए। क्योंकि हिंदू-मुसलमान की वजह से धर्म के आने में बाधा पड़ रही है और हिंदू-मुसलमान तब तक रहेंगे, जब तक वि–ध्‌वास है। जिस दिन वि–ध्‌वास की जगह, विचार होगा, विवेक होगा उस दिन दुनिया में बहुत धर्मों की कोई गुंजाइश नहीं रह जा सकती। क्यों? नहीं रह सकती इसलिए कहीं हिंदू की केमिस्ट्री अलग होती है, मुसलमान की केमिस्ट्री अलग, हिंदू की एलोपैथी अलग, जैन की एलोपैथी अलग, मुसलमान का गणित अलग, ईसाई का गणित अलग, ऐसा होता है, हो सकता है, कि हम कहें कि हम तो मुसलमान है, ह मारा गणित अलग होगा, हम हिंदुओं जैसा गणित नहीं बना सकते। हिंदू अपना गणित अलग बन ाए, दो और दो पांच करें, हम तो दो और दो चार करेंगे या दो और दो तीन करेंगे। हम हिंदू, तुम मुसलमान हैं, हमारा तुम्हारा गणित एक जैसा कैसे हो सकता है, नहीं, लेकिन गणित एक है सारी दुनिया का। लेकिन मैं आपको यह बता दूं, आज से पांच सौ साल पहले गणित भी अ लग-अलग थे।

हिंदुस्तान में जैनियों का गणित अलग था, हिंदुओं का गणित अलग था, कैसे पागलपन की बातें है, गणित और अलग-अलग हो सकते हैं। लेकिन विचार ने खोज की, विवेक ने खोज की, हम युनिवर्सल है, सार्वलौकिक नियमों पर पहुंच गए। गणित एक है दुनिया का, चाहे कोई कम्युनिस्ट मुल्क में रहता है, चाहे कोई अमरीका में रहता है, चाहे कोई चीन में रहे, चाहे पाकिस्तान में,

चाहे हिंदुस्तान में, गणित एक है, गणित विज्ञान बन गया। गणित विचार के द्वारा उपलब्ध हुआ, इसलिए एक हो सका। धर्म अनेक क्यों है, जब जमीन के कानून एक है और जब पदार्थ के नियम एक है तो आत्मा के नियम अनेक कैसे हो सकते हैं। जब सामान्य पदार्थ के नियम सार्वलौकिक है, युनिवर्सल है, तो परमात्मा के नियम भी अलग-अलग कैसे हो सकते हैं। वे भी युनिवर्सल है, लेकिन हमारे वि–ध।वास के कारण, हम उन सार्वलोक नियमों को खोजने में असमर्थ है। हमारा वि–ध।वास हमें रोकता है, वह कहता है यही सत्य है, तो फिर सत्य की खोज नहीं हो पाती। जब तक जमीन पर हिंदू-मुसलमानों में बंटे हुए होंगे लोग, तब तक धर्म नहीं उतर सकता। और यही सारे लोग चिल्लाते है कि धर्म नष्ट हो रहा है और यही उसके हत्यारे हैं। यही सारे लोग चिल्लाते हैं कि दुनिया से धर्म समापत हो रहा है, धर्म समापत होगा। क्योंकि वि–ध।वास पर खड़ा हुआ धर्म, धर्म ही नहीं, लेकिन क्या विचार पर धर्म खड़ा हो सकता है। मैं कहता हूं, हां। विचार पर धर्म खड़ा हो सकता है और जिन लोगों ने भी धर्म को जाना है, महावीर ने, बुद्ध ने, क्राइस्ट ने, मोहम्मद ने, राम ने, कृष्ण ने, उन्होंने वि–ध।वास के आधार पर नहीं जाना है। अपनी खोज, अपना विवेक, अपनी चेतना के जागरण से जाना है, दुनिया में आज तक जब भी धर्म जाना गया है, तब वह एक अत्यंत वैचारिक खोज की तरह जाना गया, अंधे वि–ध।वास की तरह नहीं। इसलिए मैं कहता हूं, चाहे कितने ही लोग मानते हो और चाहे कितने ही हजारों साल से मानते हो, इस बात को अथारिटी मत बना लेना कि हजार साल से कोई मानता है, इसलिए वह सच्ची बात होनी चाहिए। मैं यह नहीं कह रहा हूं कि वह जरूरी रूप से झूठ है। मैं यह कह रहा हूं, आपका यह मानने का ढंग और तर्क गलत है, आप खोजें–निजी खोज करें, थोड़ा सोचें विचार करें और फिर जो आपको सच मालूम पड़े वह आपके जीवन को बदल देगा। लेकिन जब तक हम खोज ही नहीं करते, सोचते ही नहीं, तब तक हम अंधों की भांति चलते हैं। और अंधों की भांति चलना मनुष्य के भीतर छिपे हुए परमात्मा का सबसे बड़ा अपमान है। मनुष्य होने की पहली शर्त है, स्वयं की चेतना और विवेक के प्रति दायित्व, स्वयं की स्वतंत्रता, सामर्थ्य और शक्ति के प्रति समर्पण। स्वयं के भीतर जो छिपा है, उसकी अथक खोज, स्वयं में जो बीज रूप से बैठा है, उसे पूर्णता तक पहुंचने का साहसपूर्ण प्रयत्न, मनुष्य होने की, मनुष्य होने में यह सब कुछ अंतरगर्भित है, लेकिन जो लोग वि–ध।वास से जीते हैं, वे मनुष्य नहीं भेड़ों की भांति हो जाते हैं।

मैंने एक घटना सुनी है, एक छोटे से स्कूल में, एक अध्यापक अपने बच्चों को गणित के पाठ पढ़ा रहा था और उसने कहा, वह गांव गड़रियों का गांव था, जहां बहुत भेड़ें थी। तो उसने गांव के उन बच्चों को समझाने के लिए कहा, एक छोटी सी बगिया में बारह भेड़ें बंद है, अगर उनमें से छः भेड़ें छलांग लगाकर बाहर निकल जाए, तो भीतर कितनी बचेगी। एक बच्चे हाथ उठाया, वह बच्चा बहुत छोटा था। शिक्षक ने कहा, हां बोलो, आज तुमने पहली बार ही हाथ उठाया, उसने कभी हाथ नहीं उठाया था। वह बहुत छोटा था और नया-नया स्कूल में आया था। उसने कहा और बाबत और प्र–ध।नों के बाबत मैं जानता नहीं था, इसलिए चुप रहा, लेकिन इस बाबत जानता हूं। आपने क्या कहा, उसने अपना प्र–ध।न दोहराया, बारह भेड़ें बंद है, छः भेड़ें छलांग लगाकर बाहर निकल गई। भीतर कितनी बचेंगी, उस लड़के ने कहा, एक भी नहीं। उस शिक्षक ने कहा, क्या कहते हो, तुम्हें इतना भी समझ में नहीं आता कि मैं कह रहा हूं बारह भेड़ें बंद है, छः बाहर निकल गई उसने कहा, वह मैं नहीं समझता, गणित मुझे मालूम नहीं है लेकिन भेड़ों को मैं जानता हूं। मेरे घर में भेड़े हैं, छः भेड़ें अगर निकल गई तो भीतर एक भी नहीं बचेगी। उसने कहा, गणित तो मैं नहीं जानता लेकिन भेड़ों को मैं जानता हूं, मेरे घर में भेड़ें हैं। भेड़ निकल जाएंगी सभी, क्योंकि भेड़ होने में अंतर गर्भित है, अनुगमन है, फालोइंग। दूसरे के पीछे जाना और जो आदमी दूसरे के पीछे जाता है, वह अपने भीतर भेड़ की आत्मा को विकसित

कर रहा है, आदमी की आत्मा को नहीं, जो फालो करता है, जो किसी का अनुयायी है, वह मनुष्य नहीं रहा। उसने अपनी खो दी गरिमा, खो दिया गौरव, खो दी आत्मा, अनुगमन नहीं, ि कसी के पीछे जाना नहीं। बल्कि खुद के भीतर जाना धर्म है, किसी के पीछे जाना धर्म नहीं है। खुद के भीतर जाना धर्म है और खुद के भीतर जाने के लिए किसके पीछे जाइएगा, क्योंकि कोई आपके भीतर नहीं जा सकता, सिर्फ आप जा सकते हैं।

धर्म का संबंध अनुगमन, फालोइंग से नहीं है, लेकिन हम तो धर्मों के नाम से यही देखते हैं। यह जो इतने फालोवर सारी दुनिया में हैं, हिंदू, मुसलमान, ईसाई, जैन और नए-नए खड़े होते जा ते हैं। यह फालोवरस तो मनुष्य होने के स्वत्व के भी खो देते हैं। जो आदमी दूसरे के पीछे जात ा है, उसने अपनी आत्महत्या कर ली, नहीं जाना है किसी के पीछे, खोजना है उसे जो मेरे भी तर है। और बड़े आ–ध।चर्य की बात यह है कि जो अपने भीतर है उसे खोज लेता है, वह उसे पा लेता है, जिसकी बात राम करते हैं, कृष्ण करते हैं, महावीर करते हैं, वह उसे पालता है। वह उस परमात्मा पर पहुंच जाता है, जिसकी सारी चर्चा है और जो दूसरे के पीछे चलता है, वह तो खुद पर ही नहीं पहुंच पाता, परमात्मा पर पहुंचना तो बहुत दूर है। वह दूसरे के पीछे भटकता है, भटकता है, भटकता है, भटकता है, खुद तक भी नहीं पहुंच पाता और खुद तक प हुंचना, खुदा तक पहुंचने की पहली शर्त है। कौन पहुंचेगा स्वयं तक, वह जो अंधा होकर अनुगम न नहीं करता, आंख खोलकर जीता है। इस आंख खोलने के नियम के बाबत हमने इधर तीन ि दनों में बात की। कुछ और प्र–ध।न पूछें हैं, उनकी मैं चर्चा करूं, तो इस प्र–ध।न के संबंध में आपसे कह दूं। सत्य मान्यता नहीं है, सत्य वि–ध।वास नहीं है, सत्य अनुगमन नहीं है, सत्य है स्वयं की खोज, सत्य है विवेक और विचार, सत्य है अनुसंधान, मुक्त और स्वतंत्र। इसलिए इस से डरने की कोई जरूरत नहीं कि कितने लोग मानते हैं, रूस में बीस करोड़ लोग हैं और उनमें से करोड़ों में से करोड़ों लोग मानते हैं कि ई–ध।वर नहीं है। वहां एक बच्चा पैदा होता है, वह देखता है, बीस करोड़ लोग मानते हैं ई–ध।वर नहीं है, वह भी मानने लगता है कि ई–ध।वर नहीं है। वह कहेगा कि बीस करोड़ लोग मानते हैं तो क्या गलत मानते होंगे, बीस करोड़ लोग मानते हैं, तो क्या झूठ मानते होंगे। हमारे महापुरुष लैलिन, मार्क्स, स्टैलिन, खश(यों मानते हैं ि क ई–ध।वर नहीं है, तो क्या गलत मानते होंगे। इतने-इतने बड़े महापुरुष, इतना बड़ा देश, इत नी बड़ी ताकत, बीस करोड़ लोग तो क्या झूठ मानते होंगे। तो वह बच्चा क्या कह रहा है, क्या वह बच्चा ठीक कह रहा है, अगर वह बच्चा ठीक नहीं कह रहा, तो आप जो कह रहे हैं, वह कैसे ठीक है। आप भी गलत कह रहे हैं, वह भी गलत कह रहा है, यह सवाल ही नहीं है कि क्या मानते हैं आप, सवाल यह है कि दूसरों को देख कर मानना गलत है। उसमें आप अपने को खो देते हैं और मैं तो चूंकि स्वयं की खोज की बात कर रहा हूं, इसलिए खुद को खो देने की किसी भी शर्त को मानने को राजी नहीं हूं। इसलिए मैंने कहा, कि मुक्त हो जाना जरूरी है। इस ी संबंध में पूछा है, कि मैंने कहा, ज्ञान से मुक्त हो जाना जरूरी है, यह तो बड़ी अजीब बात है । नि–ध।चत ही ज्ञान से भी मुक्त हो जाना जरूरी है, किस ज्ञान से, जो केवल शब्दों, विचारों, सिद्धांतों और किताबों से उपलब्ध होता है। उसमें कोई प्राण नहीं होते, वह एकदम निष्प्राण थो था, बासा, उधार, बारोद होता है। उसमें कोई प्राण नहीं होते, वह जीवन को कोई गति नहीं दे ता, वह वैसा ही होता है, जैसे एक आदमी तैरने के संबंध में किताबें पढ़ लें, बहुत किताबें पढ़ लें। दुनिया में जितनी किताबें लिखी है, पढ़ लें, दस-पांच भाषाएं सीख लें, दस-पांच भाषाओं में जितनी किताबें है, वह पढ़ लें। पचास साल जिंदगी के खतम कर दें और तैरने के बाबत दुनिया का सबसे बड़ा विचारक हो जाए और भाषण उससे करवाने हो, तो तैरने के बाबत घंटों भाषण कर सकें, किताबें लिख सकें, यूनिवर्सिटीज में व्याख्यान दे सकें, तर्क कर सकें, विवाद कर सकें । लेकिन उस आदमी को जरा सी नदी में पानी में धक्का दे दें, तो पता चल जाए कि वह पचा

स वर्ष में जो जाना था, किस अर्थ का है, किस कीमत का है, किस प्रयोजन का है, वह ज्ञान था। लेकिन तैरना ज्ञान से नहीं आता, तैरना तैरने से आता है। और तैरना और ही बात हैं। एक फकीर था, मुल्ला नसरुद्दीन। वह एक नदी पर कुछ दिनों तक मांझी का काम करता था। छोटी सी नाव थी, उसमें लोगों को पार ले जाता था। उस गांव का एक बहुत बड़ा विद्वान, गणितज्ञ, बहुत पुरानी भाषाओं का जानने वाला पंडित वह एक दिन उसकी नाव पर बैठा, और नदी के पार गया। बीच में सहज ही उसने नसरुद्दीन को कहा, तुम गणित-शास्त्र जानते हो। वह गणित-शास्त्र का पंडित था, नसरुद्दीन ने कहा, नहीं महाराज। उस पंडित ने कहा, तेरा चार आना जीवन व्यर्थ हो गया। फिर थोड़ी बात आगे चली, उसने कहा, तू धर्म-शास्त्र जानता है। उसने कहा, नहीं महाराज! उस पंडित ने कहा, तेरा और चार आना जीवन नष्ट हो गया, आठ आना बेकार हो गया, और थोड़ी बात चली। उसने कहा तू दर्शनशास्त्र जाना है, मल्लाह ने कहा, नहीं महाराज। वह पंडित हंसने लगा, उसने कहा, तू जीवन बेकार ही करने को उतारू है क्या? अब बाहर आना जीवन नष्ट हो गया और तभी उठ आया जोर का तूफान, नाव डगमगाने लगी। मुल्ला नसरुद्दीन ने पूछा, पंडित जी तैरना आता है, उन्होंने कहा, नहीं। मुल्ला ने कहा, आपका सोलहा आना जीवन नष्ट होता है। मैं चला, मुझे तैरना आता है, बारह आना नष्ट हुआ, कोई फिक्र नहीं, चार आना बचा रहेगा। लेकिन आपका सोलह आना नष्ट होता है, हुआ नहीं। मैं जा रहा हूं, जिंदगी में भी किताबें तैरना नहीं सिखाती और न परमात्मा में तैरना सिखाती। परमात्मा की नदी में भी केवल वे ही लोग पार होते हैं, जो परमात्मा को जीने की कोशिश करते हैं, जानने की नहीं। जीने से जानना निकल आता है, लेकिन जानने से जीना नहीं निकलता। जो आदमी जो जी लेता है, वह जान लेता है, लेकिन जो जानने में लगा रहता है, वह जी तो पाता ही नहीं, जान भी नहीं पता है। शब्द इकट्ठे कर लेता है, उपनिषद, गीता, कुरान, बाइबिल, सब उसे कंठस्थ हो जाते हैं। लेकिन शब्द तैराते नहीं, शब्द नाव नहीं बन सकते, शब्द प्राण नहीं बन सकते, शब्द बोझ बन जाते हैं उलटे, हलका नहीं करते आदमी को और भारी कर देते हैं, जितना सिर पर किताबों का बोझ होता है। आदमी उतना और छोटा हो जाता है, बड़ा नहीं, बोझ दबा देता है। इसलिए मैंने कहां, शब्दों से आने वाला ज्ञान साथी नहीं है, संगी नहीं, उस ज्ञान को छोड़ देना जरूरी है और जो उस ज्ञान को खोजकर छोड़कर जीवन सत्य के प्रति शांत होकर, जीवन सत्य को जीने की दिशा में गतिमान होता है। वह जान पाता है एक दिन उस सबको, उस सबको, जो शब्दों में कहा गया, लेकिन कहा नहीं जा सका है। उस सबको जो शास्त्रों में बांधा गया है, लेकिन बंध नहीं पाया, उस सब सौंदर्य को, उस सब प्रेम को, उस सब आनंद को, उस परमात्मा को, जो सब तरफ मौजूद है, वह जान पाता है, जो धर्म में तैरना सीखता है, उस तैरने के कला पर ही हम इधर तीन दिन तक बात करते थे। कि वह कैसे तैरना सीख जाए, लेकिन उस सीखने के लिए जरूरी है, कि यह सारी बातें जो हमारे चित्त को बांधती है, छोड़ती जाएं। ज्ञान बांधता है, ज्ञान से मेरा अर्थ वह ज्ञान जो हम दूसरों से सीख लेते हैं।

बंगाल में एक फकीर हुआ, छोटा उसका एक आश्रम था। उस आश्रम में नए-नए लोग आते, ठहरते, ज्ञान लेते हैं। एक नया संन्यासी भी आया, पंद्रह दिन तक वहां रुका, उसने उस वृद्ध संन्यासी की बातें सुनी। लेकिन उसे लगा कि उस वृद्ध संन्यासी के पास बहुत बातें नहीं है, थोड़ी सी ही बातें हैं। रोज-रोज उन्हीं को दोहरा देता है, पंद्रह दिन में ऊब जाना, युवक का स्वाभाविक था। वह ऊब उठा और उसने सोचा, छोड़ दूं इस आश्रम को, कहीं और खोजूं। यह जगह मेरे लिए नहीं, यह गुरु मेरे लिए नहीं, यह तो बंधी हुई कुछ थोड़ी सी बातें दोहराता है और बात समापत। इनको कब तक सुनूंगा, और क्या सीखूंगा। लेकिन जिस संध्या वह छोड़ने को था, उसी संध्या कोई बात घट गई और फिर उस युवक ने वह आश्रम कभी नहीं छोड़ा। क्या घट गई उस रात बात।

एक और संन्यासी आ गया कहीं से, और रात उस आश्रम के अंर्तवासी इकट्ठे हुए, वह जो नया संन्यासी आया था, उसने दो घंटे तक तत्व की बड़ी गहरी बातें की। बड़े सूक्ष्म, बड़े बारीक सि द्धांत समझाए, जो युवक संन्यासी छोड़ना चाहता था, वह बैठकर सुनता था, उसके मन में हुआ, ओह! गुरु हो तो ऐसा, कितनी गहरी इसकी बातें है, कितने सूक्ष्म इसके विचार, कितनी पैनी इसकी दृष्टि, कैसा कुशल इसका तर्क, धन्य हुआ ऐसा गुरु हो, इसी के साथ चला जाऊं कल सु बह। ठीक मिल गया वह आदमी जिसकी तलाश थी, एक यह बूढ़ा है, जो कुछ पिटी-पिटाई बातें रोज दोहरा देता है, जिनमें न कोई बहुत सार है, न अर्थ, सोचा उस युवक ने कि आज इस वृ द्ध संन्यासी के मन में कितना ग्लानि अनुभव होती होगी, अपमान, कितना इसकी प्रतिभा हीन ह ो गई होगी, मन ही मन में। कितनी हीनता लगती होगी, इस संन्यासी की बातें सुनकर, कैसा म न ही मन पछताता और दुखी होता होगा। बात पूरी हुई, वह नया संन्यासी रुका। रुक कर उसने सबकी तरफ देखा कि, क्या प्रभाव पड़ा है। उसने उस बूढ़े संन्यासी से पूछा, महानुभाव! मैंने जो बातें कहीं, क्या सोचते हैं उस संबंध में, वह बूढ़ा इतनी देर तक आंख बंद किए बैठा सुनता थ ा, उसने आंख खोली। और उसने कहा मेरे मित्र, पहली बात तो यही कहनी है कि मैं दो घंटे से सुनता हूं, तुम तो कुछ बोलते ही नहीं। बोला मैं नहीं बोलता तो इतनी देर से कौन बोलता था । उस वृद्ध ने कहा, शास्त्र बोलते थे, किताबें बोलती थी। तुम नहीं बोलते थे, तुम्हारा बोला हु आ एक भी शब्द नहीं है। तो तुम कहते हो, कि मैंने जो कहा उसका क्या परिणाम हुआ, तो प हले तो मैं यही निवेदन कर दूं कि तुमने कुछ कहा ही नहीं, परिणाम का सवाल कहां है। वह ज ो संन्यासी छोड़कर जाना चाहता था, रुक गया, फिर कभी उस आश्रम को नहीं छोड़ा उसने। यह बूढ़ा क्या बोला, यह बोला कि तुम्हारे भीतर से किताबें बोलती है, तुम नहीं बोलते। ऐसा ज्ञान जो कहीं और से आकर हमारे भीतर बोलने लगता है किसी भी अर्थ का नहीं, उसे छोड़ देना जरूरी है। और तब जागेगा वह, जो हमारे भीतर छिपा है।

दो तरह के ज्ञान है : एक तो ज्ञान होता है कुएं की भांति, और एक ज्ञान होता है हौज की भांति। हौज में हम क्या करते हैं, मिट्टी लाते, इ्रध!ट लाते, पत्थर इकट्ठे करते, दीवाल बनाते, हौज का घेरा बनाते हैं। फिर कहीं से पानी लाकर हौज में भर देते, हौज में अपना कोई पानी नहीं होता। हौज में सिर्फ अपनी इ्रध!टें, पत्थर की दीवाल होती हैं। हौज में कोई पानी नहीं होता, हौ ज केवल दीवाल होती है इ्रध!ट, पत्थर की घेरा होता है। लेकिन कुएं में, कुएं में काम उलटा करना पड़ता है। कुएं में सबसे पहले इ्रध!ट, पत्थर, मिट्टी जो कुछ हो, उसे निकालकर अलग क रना पड़ता, लाना नहीं पड़ता, अलग करना पड़ता है। हौज में लाना पड़ता है, कुएं में अलग क रना पड़ता है। और जब सारी मिट्टी, पत्थर, इ्रध!ट अलग हो जाते, तो नीचे से वह निकल आत ा है, जो जल का स्रोत हैं। कुएं में जल है, इ्रध!ट-पत्थर ऊपर पड़े हैं, उन्हें अलग कर देना होत ा है। हौज में जल नहीं है, जल लाना पड़ता है, रोकने के लिए इ्रध!ट-पत्थर की दीवाला बनानी पड़ती है।

ज्ञान भी ठीक ऐसे ही दो तरह का होता है; एक हौज वाला ज्ञान होता है, जिससे पंडित पैदा हो ते हैं। पंडित इ्रध!ट-पत्थर इकट्ठा करके दीवाला बना लेता है अपने दीवाल में, हिंदू होने की दीव ाल, मुसलमान होने की दीवाल, वेदांती होने की दीवाल, फलांवादी होने की दीवाल, सब तैयार कर लेता है दीवाल। फिर जगह-जगह से पानी ले आता है और अपनी हौज में भर लेता है। फि र जिसकी हौज जितनी बड़ी, वह उतना बड़ा पंडित हो जाता है। हालांकि सच्चाई यह है कि हौ ज जितनी बड़ी हो, उतनी जल्दी सड़ जाती है और उसका पानी बदबू फेंकने लगता है। इसलिए पंडितों के मस्तिष्क से जितनी दुगृध!ध जीवन में फैलती है और कहीं से फैलती नहीं। लेकिन कु एं की बात और है, जो आदमी अपने मस्तिष्क से सारी इ्रध!ट-पत्थर को बाहर निकालकर फेंक देता, जो अपने मस्तिष्क की सारी दीवालें गिरा देता, जिसके मस्तिष्क पर कोई सीमा नहीं रह

जाती। मिट्टी-पत्थर की सारी पर्त अलग हो जाती, उसके भीतर से आ जाता है वह स्रोत जीवन का, जल का, ज्ञान का। यह है ज्ञानी, जो कुएं की भांति अपने भीतर से ज्ञान को ले आता। व ह है पंडित, जो हौज की भांति सब तरफ से ज्ञान को इकट्ठा कर लेता है। धर्म का पंडित से को ई संबंध नहीं है, यद्यपि पंडित सब तरफ से धर्म से संबंधित होने की घोषणा करते रहे हैं। धर्म से पंडित का कोई भी संबंध नहीं है, ज्ञानी का संबंध हो सकता है, पांडित्य एक कुशलता है, ज्ञा न एक क्रांति है, तो जिस ज्ञान को छोड़ने के लिए मैंने कहा, वह हौज वाला ज्ञान है और इसलि ए छोड़ने को कहा, ताकि कुएं वाला ज्ञान उपलब्ध हो सकें। जो कुंआ बनना चाहते हैं, उन्हें हौज अपनी मिटा ही देनी होगी, और जो कुंआ बनने से रुकना चाहते हैं, उनकी मज(, वह अपने ह ौज को और मजबूत बना सकते हैं और ग्रंथ लाकर अपनी दीवाल खड़ी कर सकते हैं। और शब्द सूत्र इकट्ठे करके इतना मजबूत किला बना सकते हैं कि उसके भीतर सूरज की कोई किरण क भी प्रवेश न कर सकें।

यह चित्त की दशा है, इस चित्त के बंधे हुए दशा को मैंने कहा, ज्ञान कोई छोड़े तो उसके जीव न में क्रांति आनी शुरू होती है। एक मित्र ने और एक प्र–ध।न पूछा है, उन्होंने पूछा है, जैसा मैं ने सुबह कहा, मैंने सुबह कहा कि अहंकार छूट जाना चाहिए। उन्होंने पूछा है, यह अहंकार कैसे पैदा हो जाता है, यद्यपि मैंने सुबह इस संबंध में कुछ बातें कहीं है, शायद वह ठीक से सुन न प ाए हो, समझ न पाए हो, तो दो बातें उनसे कहे देता हूं। एक छोटी सी कहानी कहूं उससे उनक ी बात समझ में आ जाए।

एक बहुत बड़े राजमहल के निकट पत्थरों का एक ढेर लगा हुआ था, कुछ बच्चे वहां खेलते हुए निकले। एक बच्चे ने पत्थर उठा लिया और महल की खिड़की की तरफ फेंका। वह पत्थर ऊप र उठने लगा, पत्थरों की जिंदगी में यह नया अनुभव था, पत्थर नीचे की तरफ जाते हैं, ऊपर की तरफ नहीं। ढलान पर लुढ़कते हैं, चढ़ाई पर चढ़ते नहीं। तो यह अभूतपूर्व घटना थी, पत्थर का ऊपर उठना, नया अनुभव था। पत्थर फूल कर दुगुना हो गया, जैसे कोई आदमी उदयपुर से फेंक दिया जाए और दिल्ली की तरफ उड़ने लगे तो फूल कर दुगुना हो जाए। वैसा वह पत्थ र जमीन से पड़ा हुआ, जब उठने लगा राजमहल की तरफ तो फूल कर दुगुना...आखिर पत्थर ही ठहरा, अकल कितनी है, समझ कितनी है, फूल कर दुगुनी वजन हो गया, ऊपर उठने लगा, नीचे पढ़े हुए पत्थर आंखें फाड़कर देखने लगे, अदभुत घटना घट गई थी। उनके अनुभव में ऐस ी कोई घटना न थी कि कोई पत्थर ऊपर उठा हो, वे सब जय-जयकार करने लगे, धन्य-धन्य क रने लगे, हद हो गई, उनके कुल में, उनके वंश में ऐसा अदभुत पत्थर पैदा हो गया, जो ऊपर उठ रहा है। और जब नीचे होने लगा, जय-जयकार और तालियां बजने लगी। और हो सकता है , पत्थरों में कोई अखबार नवीस हो, जर्नलिस्ट हो, उन्होंने खबर छापी हों, कोई फोटोग्राफर हो, उन्होंने फोटो निकाली हों, कोई चुनाव लड़ने वाला पत्थर हो, उसने कहा हो, यह मेरा छोटा भ ाई है, जो ऊपर जा रहा है। कुछ हुआ होगा नीचे वह यादा तो मुझे पता नहीं, विस्तार में लेि कन नीचे के पत्थर बहुत हैरान होकर देखने लगे। जय-जयकार चिल्लाने लगे, नीचे की जय-जय कार उसी पक्के पत्थर को भी सुनाई पड़ी, जय-जयकार किसको सुनाई नहीं पड़ जाती। बड़ा म जा है, जो जय-जयकार कभी नहीं होती, वह भी सुनाई पड़ जाती है, तो जो होती है, वह तो सुनाई पड़ ही जाएगी। उसे सुनाई पड़ गई है वह और फूलने लगा, उसने चिल्लाकर कहा कि मि त्रों! घबड़ाओ मत, मैं थोड़ी आकाश की यात्रा को जा रहा हूं। उसने कहा, मैं जा रहा हूं, आका श की यात्रा को, ताकि जान सकूं क्या है रहस्य इस आकाश का? और लौटकर तुम्हें बता सकूं, गया महल के कांच की खिड़की से टकराया तो पत्थर टकराएगा कांच की खिड़की से तो स्वाभ ाविक कि कांच चूर-चूर हो जाए। इसमें पत्थर की कोई बहादुरी नहीं है, इसमें केवल कांच का कांच होना और पत्थर का पत्थर होना है, इसमें कोई कांच की कमजोरी नहीं है और पत्थर की

बहादुरी नहीं है। कांच का कांच होना, पत्थर का पत्थर होना है, पत्थर टकराया कांच टूट चक नाचूर हो गया। लेकिन पत्थर खिलखिलाया और हंसा, जैसे कि नेता अकसर खिलखिलाते और हं सते हैं। और उस पत्थर ने कहा, कितनी बार मैंने नहीं कहा, कि मेरे रास्ते में कोई न आए, न हीं तो चकनाचूर हो जाएगा। वह वही भाषा बोला, जो राजनीति की भाषा है, जो मेरे रास्ते में आएगा, चकनाचूर हो जाएगा। देखा अब अपना भाग्य, चकनाचूर होकर पड़े हो। और वह पत्थ र गिरा, महल की कालीन पर, बहुमूल्य कालीन बिछा था। थक गया था पत्थर, लंबी उसने या त्रा की थी। सड़क की गली से महल तक की यात्रा कोई छोटी यात्रा है। बड़ी थी यात्रा जीवन-जीवन लग जाते हैं, गली से उठते महल तक पहुंचते, थक गया था, पसीना माथे पर आ गया ह ोगा, गिर पड़ा, कालीन पर गिरकर उसने ठंडी सांस ली और कहा, धन्य-धन्य है ये लोग, क्या मेरे पहुंचने की खबर पहले ही पहुंच गई। कि उन्होंने कालीन बिछा रखा है, और कितने अतिथि प्रेमी और कैसे स्वागत-सत्कार के प्रेमी, महल बनाकर रखा है मेरे लिए। क्या पता था कि मैं आ रहा हूं, ठीक जगह खिड़की बनाई, जहां से मैं आने को था, ठीक-ठीक सब किया, कोई भेद न पड़ा। एक इंच मैं चूका नहीं, जो मेरा मार्ग था आने का, वहां खिड़की बनाई, जो मेरा मार्ग था विश्राम का, वहां कालीन बिछाए। बड़े अच्छे लोग हैं, और वह यह सोचता ही था कि राजम हल के नौकर को सुन पड़ी होगी आवाज टूट जाने की कांच की वह भागा हुआ आया। उसने उ ठाया पत्थर को हाथ में, पत्थर तो, पत्थर तो, हृदय गद्-गद् हो उठा।

उसने कहा, आ गया मालूम होता है मकान का मालिक स्वागत में हाथ में उठाता है। प्रेम दिख लाता है, कितने भले लोग, और फिर उस नौकर ने पत्थर को वापिस फेंका। तो उस पत्थर ने मन में कहा, वापिस लौट चलें। घर की बहुत याद आती है, होम सीकनेस मालूम होती है। वह वापिस गिरने लगा अपनी ढेरी पर तो नीचे तो आंखें फाड़े हुए लोग बैठे थे, उनका मित्र, उनका साथी गया था आकाश की यात्रा को चंद्रलोक गया था, वह लौटकर आया था। वह गिरा नीचे, फूलमालाएं पहनाई गई। कई दिन तक जलसे चले, कई जगह उदघाटन हुआ और न मालूम क्य ा-क्या हुआ। और उन पत्थरों ने पूछा, कि क्या-क्या उसने अपनी लंबी कथा कहीं, मैंने यह किय ा, मैंने यह किया, मेरा ऐसा स्वागत हुआ, ऐसी-ऐसी जगह मेरा सत्कार हुआ, इतने-इतने शत्रु मरें, कई चीजों का गुणनफल किया उसने, एक कांच मारा था, कई कांच बताए। एक महल में ठहरा था, कई महलों में ठहरा हुआ बतलाया। एक हाथ में गया था, अनेक हाथों में पहुंचने की खबर दीं, जो बिलकुल स्वाभाविक है, आदमी का मन, आदमी की मन जैसा करता तो पत्थर क ा मन तो और कभी करेगा। और तब उसके पत्थरों ने कहा, मित्र तुम अपनी आत्मकथा जरूर ि लख दो, हमारे बच्चों के काम आएगी।

आटोबायोग्राफी लिखो, क्योंकि सभी महापुरुष लिखते हैं। तुम भी लिखो, वह लिख रहा है, जल्दी लिख लेगा, तो आपको पता चलेगी खबर हो जाएगी, क्योंकि उसके पहले भी और पत्थरों ने ि लखी हैं और उनको आप अच्छी तरह पढ़ते रहे हैं। वह भी लिखेगा, उसकी भी पढ़ेंगे, इस पत्थ र पर आपको हंसी क्यों आती है, इस बेचारे में कौन सी खराबी है। यह आदमी से कौन-सा भि न्न है, और इस पत्थर पर आप हंसते हैं, तो कभी अपने पर हंसे हैं। इस पत्थर की, इस बात को सुनकर आप हंसते हैं कि मैं जा रहा हूं यात्रा को, लेकिन हम खुद क्या है। क्या हम भी किन् हीं अनजान हाथों के द्वार फेंके गए पत्थर नहीं। हमें पता है, हम क्यों जन्म लेते हैं। हमें पता है हम कैसे पैदा हो जाते हैं, हमें पता है कि कौन हमें भेजता और कौन अनजान ताकत , कौन अनजान हाथ, कौन अपरिचित फेंक देता है जीवन में। लेकिन हम कहते हैं मेरा जन्म, मेरा जन्म दिन है। आपसे पूछा था किसी ने कि आप किस जन्मदिन पैदा होना चाहते हैं। आपसे कोई तारी ख, तिथि, कोई पूछी थी कि आप कब पैदा होना चाहते हैं, जो आप कहते हैं, मेरा जन्मदिन है। आपका कोई निर्णय है इसमें, आपकी कोई चॉयस, आपसे किसी ने पूछा था, आप पैदा भी होन

ा चाहते हैं कि नहीं होना चाहते। न आपसे किसी ने पूछा, कि आप पैदा होना चाहते हैं, न पूछा दिन, न कोई तारीख, लेकिन कहते हैं मेरा जन्मदिन। यह मेरा बड़ा अजीब है, कहते हैं मेरी जवानी, आप ले आए इस जवानी को, यह आपके हाथ का कोई काम है। यह आपका प्रयत्न है कोई कि आप जवान हो गए, क्या आप चाहते हैं कि जवान न हो तो आप रुक जाते, जवान होने से, नहीं लेकिन कहते, मेरी जवानी, यह मैं कहां आ गया इस जवानी में। कहते हैं मेरी जिंदगी, क्या है जिंदगी आपकी, कौन-सी चीज आपकी है इस जिंदगी में, कहते हैं मेरा शरीर, क्या है आपका इसमें, इस शरीर में मेरे जो-जो कण है, ना-मालूम कितने शरीरों में रह चुके हैं। मुझसे पहले ना-मालूम इन कणों में, ना-मालूम कितने शरीरों में की है यात्राएं।

पशुओं में, पक्षियों में, पौधों में, रोज अन्न खा रहे हैं, वह आपके शरीर में जाकर आपका हिस्सा बन रहा है, लेकिन कल तक किसी पौधे का हिस्सा था, किसी पौधे का शरीर था, जो —ध।वास मैं ले रहा हूं, कहता हूं मेरी —ध।वास, यहां हम इतने लोग बैठे है, जो आप —ध।वास अभी ले रहे हैं, वह आपके पड़ोसी बहुत थोड़ी देर पहले ले चुके हैं। वह अब आपको मिल गई, थोड़ी देर बाद दूसरे को मिल जाएगी। आपका क्या है? आप कहां आते हैं, कहते हैं मैं लेता हूं, —ध।वास। लेकिन आपको पता है, अगर —ध।वास न आएगी तो आप ले सकेंगे। आप मालिक है —ध।वास के, नहीं जिंदगी फेंके हुए पत्थर की कथा है। लेकिन हम हर काम से अपने मैं को जोड़ लेते हैं, जो बिलकुल झूठा है, जिसकी कोई जगह नहीं, जो बिलकुल सबसटैनशियल नहीं है, जिसका कोई पदार्थगत कुछ भी सकता नहीं है। जो है बिलकुल शैडो, है छाया की भांति झूठा, उस पत्थर की कथा पर हंस गए थे, अपनी जिंदगी को थोड़ा उसकी जगह रख कर सोच लेना, तो पता चल जाएगा अहंकार कैसे पैदा हो गया। तो मैं इसमें क्या कहूं कि कैसे पैदा हो गया है, थोड़ा खोज लेना तो पता चल जाएगा कि नासमझी है, भूल है, खयाल है, छाया है, सत्य कुछ भी नहीं है उस अहंकार में। और यह दिख जाए, तो अहंकार छोड़ना नहीं पड़ता। यह दिख जाए तो अहंकार गया, अगर उस पत्थर को यह दिख जाए कि वह कैसी नासमझी की बातें कह रहा है, तो बात खतम हो गई। फिर और कौन सी कथा रह गई। तो जिस आदमी को अपने जीवन पर थोड़ी भी दृष्टि है, और जो अपने जीवन की कथा को थोड़ा आंकता है, देखता है, खोजता है, वह अनुभव कर लेता है, अहंकार से यादा असत्य और कुछ भी नहीं। और जो यह जान लेता है, कि अहंकार असत्य, इसके साथ ही, इसके साथ ही तत्क्षण वह यह भी जान लेता है कि परमात्मा सत्य है। परमात्मा का सत्य होना, अहंकार के असत्य होने के सिक्के का दूसरा पहलू है। जिसने यह जान लिया, अहंकार असत्य है, उसने यह भी जान लिया कि परमात्मा सत्य है और जो यह समझता है अहंकार सत्य है, वह अनिवार्य रूप से यह भी जानता है, परमात्मा असत्य है। तो जब तक अहंकार है भीतर, तब तक करो पूजा, करो प्रार्थना, पढ़ो मंत्र-तंत्र और जो भी उलटा-सीधा करना हो करो, कोई फर्क नहीं पड़ेगा। परमात्मा से कोई संबंध नहीं हो सकता, वह अहंकार बाधा है, वह अहंकार पूजा को भी पी जाएगा, अपना भोजन बना लेगा कि मैं पूजा करने वाला हूं। वह प्रार्थना को भी पी जाएगा, और अपना भोजन बना लेगा और कहेगा, मैं प्रार्थना करने वाला हूं, तुम प्रार्थना करने वाले हो, मैं हूं असली प्रार्थना करने वाला इस गांव में, वह अहंकार सब पी जाएगा और हर चीज को अपने आस-पास जोड़ लेगा और कहेगा कि मैं इससे मजबूत हो रहा हूं। इसलिए धर्म की सबसे बुनियादी और आधारभूत क्रांति अहंकार के विसर्जन से प्रारंभ होती है और परमात्मा की उपलब्धि पर समाषत होती है। इस अहंकार के विसर्जन के लिए बहुत कुछ मैंने आपसे सुबह बातें की, लेकिन यह कैसे पैदा होता है, यह आप अपनी जिंदगी को खोजना, तो आपको दिख जाएगा और मेरे कहने से तो दिखने का कोई संबंध नहीं है, इसलिए मैंने एक कहानी कह दी और इस संबंध में कुछ भी नहीं कहूंगा। मेरे कहने से कुछ भी नहीं होगा, आप देखेंगे तो दिख सकता है, जो असत्य है, उसकी असत्यता को देखने में कोई कि

ठनाई है। हम देखना ही न चाहे, तो बात दूसरी है और हम देखना नहीं चाहते हैं और देखना ह
म इसलिए नहीं चाहते हैं कि गहरे मन में हम अच्छी तरह जानते हैं कि देखा कि यह गया। इस
लिए देखो ही मत, आंखें मुंदे रहो और चलते जाओ, इसलिए पूछो सबसे ऐसा एक दफा हुआ।
रवींद्रनाथ ने एक गीत लिखा, गीत लिखा कि हे परमात्मा, मैं तुझे खोज रहा हूं, बहुत-बहुत वष
ों, जन्मों से मेरी खोज चलती तेरे लिए अनेक बार थोड़ी बहुत तेरी झलक मिली और फिर तू
खो गया। लेकिन एक बार मैंने तय कर लिया, कि तुझे अब खोऊंगा नहीं, और मैं तेरा पीछा ह
ी करने लगा। आखिर एक सुबह मैं तेरे दरवाजे पर पहुंच गया, मैं तेरी सीढ़ियां चढ़ गया। मैंने
तेरे द्वार की कुंडी अपने हाथ में ले ली और मैं बजाने को ही था, कि मुझे खयाल आया कि कुंड
ी बज जाएगी, और तू निकल आएगा, तो फिर मैं क्या करूंगा। तू मिल जाएगा फिर मैं क्या क
रूंगा। मैं बहुत डर गया, फिर मैं क्या करूंगा, अब तक तो तुझे खोजता था, यह काम था, अब
तक तो तुझे खोजता था, यह व्यस्तता थी, अब तक तो तुझे खोजता था, रोता था, प्रार्थना कर
ता, गीत लिखता था, इसमें उलझा था, लेकिन तू मिल जाएगा तो फिर क्या करूंगा, फिर अनंत
-अनंत काल तक करूंगा क्या। तो मैं डर गया, मैंने कुंडी वापिस छोड़ दी और मैं धीरे-धीरे जूते
खोलकर सीढ़ियों से नीचे उतर आया कि कहीं तू आवाज सुनकर निकल ही न आए। और तब
से मैं तुझे फिर खोज रहा हूं, हालांकि मुझे अच्छी तरह पता है, कि तेरा घर कहां है, लेकिन
मैं खोजता हूं और बड़ा मजा है, खोजता भी मैं हूं, और जानता भी मैं हूं कि तू कहां मिल जाए
गा। लेकिन उस जगह से बचकर निकल जाता हूं, क्योंकि डर है अगर तू मिल गया, तो फिर क
या होगा।

जिंदगी बड़ी अद्‌भुत है, मैं आपसे यह निवेदन करता हूं, जिन चीजों को आप खोजना चाहते हैं,
उन्हीं चीजों से किसी गहरे तल पर आप बचना भी चाहते हैं। अगर बचना न चाहे, तो खोज
तो आज और यहीं पूरी हो सकती है। लेकिन आप बचना भी चाहते हैं, खोजना भी चाहते हैं, इ
ससे सारी कठिनाई खड़ी हो जाती है। अहंकार पूछते जरूर है आप यह क्या है और इसको मैं कै
से समाषत कर दूं। लेकिन हो सकता है, यह आपका अहंकार ही पूछ रहा हो कि बड़ा मजा आ
जाए, अगर मैं ऐसा आदमी बन जाऊं, जिसका कोई अहंकार नहीं है। यह अहंकार ही हो सकत
ा है, पूछ रहा हो, कि बहुत मजा आ जाए कि अगर मैं ऐसा आदमी बन जाऊं, जिसका कोई अ
हंकार नहीं है तो तरकीब पता लगा लें कि अहंकार खोने की तरकीब क्या है। यह हो सकता है
अहंकार ही पूछ रहा हो और तब बड़ी मु–ध्िकल हो जाएगी। तब अहंकार से छूटने का कोई
रास्ता नहीं रह जाएगा। हमारा मन बड़े अजीब और अनूठे रास्तों पर काम करता है, लेकिन अ
गर मन सीधा और साफ काम करें, जो कि वह कर सकता है। तो जिंदगी बड़ी सरल है और स
त्य बहुत निकट है।

एक छोटी सी बात, जो पूछी है, और फिर मैं अपनी चर्चा पूरी करूंगा। एक मित्र ने पूछा है, कि
आप बार-बार कहते हैं कि परमात्मा को पाना सरल है, तो फिर सारे लोग पा क्यों नहीं लेते।
कितने थोड़े से लोगों को तो शायद परमात्मा मिलता हो और उसका भी कोई पक्का तो नहीं
है कि उनको मिलता है कि नहीं मिलता। क्योंकि कौन तय करें, तो उन्होंने पूछा है कि आप क
हते हैं, बार-बार सरल है सरल है, फिर मिलता क्यों नहीं। जरूर जब मिलता नहीं है, तो खया
ल आता है कठिन होना चाहिए, लेकिन न मिलने के पीछे हमेशा कठिनाई ही नहीं होती बल्कि
बड़ा मजा है। अगर परमात्मा का पाना कठिन होता, तो बहुत से लोग कभी का परमात्मा को प
ा लेते, क्योंकि जो चीज कठिन होती है उसको पाने में अहंकार को बड़ी तृपित मिलती है। हिमा
लय पर एवरेस्ट की चोटी है, और छोटी-छोटी हजारों चोटियां हैं। एवरेस्ट पर हजारों लोग चढ़ने
जाते हैं, छोटी-छोटी चोटियों की कोई फिक्र नहीं करता, उनको चढ़ना बहुत सरल है, उनको
कोई देखता ही नहीं, लेकिन दुनिया भर से पहाड़ों पर चढ़ने वाले पर्वतारोही गौरीशंकर पर, एव

रेस्ट पर चढ़ना चाहते हैं। पचास सालों में न मालूम कितने लोग मर गए उसको चढ़ने में, मैं ब
हुत हैरान हुआ, मैं सोचने लगा, छोटी-छोटी पहाड़ियां है, इन पर क्यों नहीं चढ़ते, इन पर चढ़न
ा तो बड़ा सरल है। इस पर क्यों चढ़ते हैं, जिस पर चढ़ना कठिन है। और तब मुझे दिखाई पड़ा
, कि कठिन पर चढ़ने में अहंकार को रस आता है, इतनी कठिन चीज और मैंने जीत ली। तो
जो कठिन है, आदमी का अहंकार उस तरफ जाता है और जो सरल है, उस तरफ नहीं। दुनिया
को जीतना बहुत कठिन है, इसलिए हर आदमी दुनिया को जीतना चाहता है। परमात्मा को जी
तना बहुत सरल है, अहंकार के लिए कोई चैलेंज वहां नहीं है, कोई चुनौती वहां नहीं है, इसलि
ए कोई आदमी उस तरफ आंख नहीं उठाता।
कुछ लोग कभी-कभी आंख उठाते भी हैं, वे तभी उठाते हैं, जब कोई परमात्मा की कठिनाई बत
ाने वाला मिल जाए और वह कहे कि जन्म-जन्म कोशिश करनी पड़ेगी, सिर-शासन करना पड़ेगा
, भूखे मरना पड़ेगा, घर छोड़ना पड़ेगा, कोड़े मारना पड़ेंगे अपने को, आंखें फोड़ना पड़ेंगी, कांटे
छिदाने पड़ेंगे, धूप में पड़े रहना पड़ेगा, तब कहीं जन्म-जन्म कोशिश से मिलेगा परमात्मा, तो फि
र कुछ लोगों को बात जच जाती है कि फिर खोजना चाहिए। क्योंकि अहंकार को रस आना शु
रू हो जाता है, अगर बात कठिन है, तो चलो देख लें एक मौका इसको भी जीत कर देख लें।
इसीलिए दुनिया में धर्म के नाम पर कठिन से कठिन से तरकीबों की ईजाद हुई, यह मनुष्य के
मन का शोषण है, अहंकार का शोषण और कुछ भी नहीं। मैं तो कहता हूं, परमात्मा को पाना
बहुत सरल है, अगर अहंकार न हो तो आप इसी वक्त पा सकते हैं, लेकिन अहंकार कोई सरल
बात जचती ही नहीं, उसको जचती है कठिन बात, दुरूह, दुर्गम, अगम हो तो फिर चलो, तल
वार की धार पर चलना हो तो अभी अहंकारी को जचता है कि चलो आ जाए चलकर देख लें।
लेकिन कोई कहें घर में सोने जैसा सरल है, तो फिर तो बात जचती नहीं, लेकिन मैं कहता हूं
सरल है और न पाने का कारण यह है कि हम कठिन की खोज करते हैं, इसलिए परमात्मा क
ो नहीं उपलब्ध हो पाते। एक छोटी सी कहानी अपनी चर्चा में रात की बात पूरी करूं।
एक बार बहुत पुराने जमानों में, एक बड़े साम्रा य में, उस रा य का बड़ा वजीर मर गया। जो
बड़ा महामंत्री था, उसकी मृत्यु हो गई। उस रा य का नियम था, कि देश भर में सबसे बुद्धिमा
न आदमी को खोज कर वे मंत्री बनाते थे, तो तीन महीने लग गए, सारे मुल्क में अनेक तरह
के प्रतियोगिताएं हुई, बुद्धिमान आदमी को खोजने के लिए। एक वाइस मैन खोजना था। फिर प
रीक्षाएं होते-होते चुनाव होते-होते छंटनी होते-होते अंत में तीन आदमी बच रहे, जो पूरे देश में
सर्वाधिक समझे गए। अब अंतिम फैसला होने को रह गया, इन तीन में से एक चुना जाना था।
अंतिम परीक्षा का दिन आ गया, सारा देश उत्सुक था, वे तीनों लोग भी उत्सुक थे कि क्या ह
ोगा, जीवन-मरण का सवाल था। वे सब भांति के लिए तैयार होकर आए थे कि कोई भी परीक्ष
ा हो, परीक्षा का दिन आ गया, कल सुबह परीक्षा होगी, आज सांझ से वे उत्सुक थे कि किसी
भांति कल का पर्चा पता चल जाए, जैसा कि सभी परीक्षाथ(उत्सुक होते हैं। और ऐसा नहीं था
, कि परीक्षाथ(आज ही पर्चा चलाने के लिए उत्सुक हो गए, हमेशा से उत्सुक है, वे भी उत्सु
क हो गए, लेकिन वे हैरान हुए, पर्चा पता चलाने की जरूरत ही न आई। गांव में दीवाल-दीवा
ल पर पर्चा लगा हुआ था, दूकान-दूकान पर उसकी चर्चा थी कि कल यह परीक्षा होने को है।
वे बाजार में गए तो पता चला कि यह होने को है परीक्षा, हर आदमी को पता था, पूरे गांव में
...
उस ताले को लगाकर, तीनों व्यक्तियों को कमरे के भीतर बंद कर दिया जाएगा और उनको क
हा जाएगा कि जो सबसे पहले इस ताले को खोलकर आता है, वही वजीर है। तीनों को पता च
ल गया, उनमें से दो तो फौरन भागे हुए बाजार गए, पुस्तकालयों में गए और उन्होंने किताबें ख
ोजी, शास्त्र खोजें तालों के संबंध में, गणित-पहेलियों के संबंध में, न मालूम क्या होगा। किताबें

ले आए, रात भर पढ़ते रहे, रात भर घोटते रहे, याद करते रहे, हिसाब लगाते रहे, जिंदगी म
रन का सवाल था, सोने का कोई सवाल ही नहीं था। लेकिन एक आदमी उनमें बड़ा अजीब था,
वह सांझ से ही चादर तान कर सो गया, उन दो लोगों ने समझा, इसने मालूम होता है ड्राप
ले लिया, यह परीक्षा में बैठेगा नहीं, डर गया, घबड़ा गया, क्या हो गया, तैयारी नहीं कर रहा
है कोई। रात भर वे तो तैयारी करते रहे, वह आदमी सोता रहा, दो चार दफा उन्होंने उसे उठ
ाया भी तो उसने कहा, आज तो मुझसे बात ही मत करो, तुम अपनी तैयारी करो, मुझे अपनी
करने दो। वे बहुत हैरान हुए कि कौन सी तैयारी हो रही है, सुबह हो गई, वह आदमी तो रोज
पांख बजे उठ आता था, आज तो वह सात बजे उठा। वे लोग समझे कि या तो इसका मस्तिष
क घबराहट से, शॉक से, कुछ गड़बड़ हो गया। उन्होंने रात-भर इतनी तैयारी की, रात भर सो
ए नहीं, एक क्षण सब भांति से याद किया, याद किया, सुबह वे इस हालत में पहुंच गए कि अ
गर कोई उनसे पूछता--दो और दो कितने होते हैं तो वे नहीं बता सकते थे। क्योंकि रात भर ि
जन्होंने इतनी तैयारी की हो, उनका दो और दो का खयाल भी भूल जाता है, मस्तिष्क बहुत बे
चैन, अशांत, तनाव से भर गया था, जैसे सभी परीक्षाथ(यों का हो जाता है। सब उन्हें याद होत
ा है, लेकिन परीक्षा-भवन में कुछ भी याद नहीं रह जाता। वहीं हालत उनकी हो गई थी, वे ती
नों चले, वे दो तो डगमगाते पैर बेचैन परेशान, उनके मन में तो गणित चल रहे हैं और वह ए
क गीत गुनगुनाता हुआ, उन दोनों को बहुत गुस्सा भी आया कि तुम यह क्या गीत गा रहा है।
यह कोई वक्त है, गीत गाने का उसने कहा, तुम अपनी तैयारी करो, मुझे अपनी करने दो। मैं
तुम्हें बाधा नहीं देता, तुम कृपा करके मुझे बाधा न दो।

वे तीनों पहुंचे, अफवाहें सच थी। राजा ने उन्हें एक कक्ष में बंद कर दिया, द्वार पर एक अजीव
से ताला लटका हुआ है, जिस पर गणित के चिन्ह और अंक बने है, और राजा ने कहा, मित्रों
! यह ताला है, गणित की एक पहेली। पहेली ऊपर बनी है, इसे अगर तुम हल कर पाओ, तो
ताला हल करते ही खुल जाएगा। जो आदमी हल करके बाहर निकल आएगा, वह वजीर जो जा
एगा, वह चुन लिया जाएगा। तो अब तुम हल करो, मैं जाता हूं। तीनों को छोड़कर द्वार को बं
द करके वह बाहर चला गया। वे दो व्यक्ति जिन्होंने रात भर तैयारी की थी, उन्होंने जल्दी से
अपने कपड़ों के भीतर हाथ डाले और छिपी हुई किताबें बाहर निकाली, कोई यह न सोचे कि अ
ाजकल के विद्याथ(ऐसा करते हैं, पहले के विद्याथ(भी ऐसा ही करते थे। जो भी समझदार है,
वह यह करेगा ही, समझदारी चालाकी ले ही आएगी। वे दो समझदार थे, एक नासमझ था, न
वह कोई किताबें लाया था, न कुछ। वह एक कोने में आंख बंदकर बैठ गया, उन्होंने अपनी कि
ताबें खोल लीं, ताले पर अंक देखें और अपना हिसाब लगाने में लग गए, बड़ा अजीब सा उलझ
न भरा सवाल था, जल्दी हल करना था, एक सेकेंड की फुरसत न थी। तो जितनी तेजी से लग
गए वे हल करने में, उतना ही मामला और उलझता चला गया, क्योंकि आसान तो आदमी क
हीं कोई सुलझा पाता है। पहेली और बड़ी पहेली होती गई, किताबों में और सहारा दे दिया, प
हेली को बड़ा करने में, किताब खोलते थे, दूसरी किताब खोलते थे, अंक देखते थे, उसके अंक
उतारते थे मन में सब काम चल रहा था, वजीर होने की जल्दी चल रही थी। कहीं कोई दूसरा
न निकल जाए, यह घबराहट चल रही थी, ऐसा विक्षिपत हाल थी, कि कहीं कोई पहेली हल
होनी थी। वह तीसरा आदमी एक कोने में आंख बंद करके बैठ गया, उन्होंने एक दो बार उससे
भी गया, महानुभाव! कुछ तैयार करो, क्या कर रहे हो? उसने कहा, तुम अपनी करो, मुझे अ
पनी करने दो। वे तो अपने गणित सुलझाने में लग गए, वह जो आदमी चुपचाप बैठा था मौन,
वह क्या कर रहा था रात भर से, वह मौन होने की कोशिश कर रहा था, क्योंकि जिंदगी में क
ोई भी सवाल हल करना हो तो मौन हो जाना जरूरी है, साइलेंट हो जाना जरूरी है। क्योंकि जि
तना होगा चित्त शांत, उतनी सामर्थ्य होगी चित्त की देखने की, पहचानने की, प्रवेश की, विचार

की, खोज की तो पूरी रात से कोशिश से कर रहा था कि सब भांति शांत हो जाए। मन में क
ोई उलझन न रह जाए, कोई विचार न रह जाए, अब भी वह यही कर रहा था। फिर आखिर
उसका मन हो गया शांत और वह उठा और दरवाजे पर गया उसने दरवाजा धकाया, बड़ी हैरा
नी की बात थी, दरवाजा लगा हुआ नहीं था, अटका था, वह बाहर निकल गया। दो व्यक्ति अप
ने काम में लगे थे, उन्हें पता भी नहीं चला कि एक हममें से बाहर निकल गया। वह तो राजा
जब उसे भीतर लेकर आया, तब उनकी आंखें खुली, उन्होंने कहा, अरे तुम बाहर कैसे पहुंचे। क
योंकि उनको तो कल्पना भी नहीं हो सकती थी कि यह आदमी और बाहर पहुंच सकता है, इत
ना कठिन सवाल और ऐसा सुस्त आदमी। राजा ने कहा, यह आदमी अदभुत है, इसने समझदारी
का पहला सबूत दे दिया। अरे पागलों, पहले यह तो देख लेना था, कि ताला लगा भी है या न
हीं लगा, तुम उसे खोलने की कोशिश में लग गए। पहली बात जाननी जरूरी थी, समझदारी का
पहला नियम था कि जिस सवाल को हम हल करना चाहते हैं, देख तो ले वह सवाल है भी य
ा नहीं। जो इस बात को सोचे बिना सवाल को हल करने में लग जाता है, वह क्या कभी सवाल
को हल कर पाएगा, क्योंकि सवाल होता तो हल भी हो जाता। सवाल तो है ही नहीं, तो हल
होगा कैसे। इसलिए कठिन होता चला जाता है, कठिन होता चला जाता है। परमात्मा इसलिए
सवाल बना हुआ है कि वह सवाल नहीं है, और जो सिद्धांतों और शास्त्रों में खोजते हैं, वे उल
झते चले जाते हैं और बात कठिन होती चली जाती है। परमात्मा का द्वार बंद नहीं है, इसलिए
कौन उसे खोलने की कोशिश कर रहा है, परमात्मा का द्वार खुला हुआ है, लेकिन इस खुले द्वा
र को देखने के लिए एक शर्त जरूरी है, साइलेंट माइंड चाहिए, शांत मन चाहिए, वह शांत मन
फौरन कह देगा, दरवाजा बंद नहीं है उठो, देखो। तुम धक्का भी नहीं दोगे कि दरवाजा खुला
जाएगा, परमात्मा तो बहुत सरल है आदमी के शास्त्र बहुत कठिन है। परमात्मा तो बहुत सरल
है आदमी की बुद्धिमत्ता बहुत जटिल है। परमात्मा तो बहुत सरल है, लेकिन उस सरलता को प
हचानने वाला शांत और सरल मन हमारे पास नहीं, एक जटिल और उलझा हुआ मन लिए हम
बैठे है और इस उलझे मन से हम हल करने चलते हैं, हल नहीं होगा और उलझ जाएगा, इसि
लए मैं बार-बार कह रहा हूं कि तथाकथित ज्ञान परमात्मा तक पहुंचने नहीं देता।

शांत मन है उसके लिए द्वार, शून्य मन है उसके लिए द्वार और जो शांत और शून्य हो जाता है
, वह जान लेता है सब। सब जो जीवन में अर्थपूर्ण है, सब जो जीवन में आनंदपूर्ण है, सब जो
जीवन को आलोक से भर देता है और अमृत से, सब जहां मृत्यु समाषत है और अनंत का उद
घाटन है, सरल है बहुत। बहुत है सरल, अत्यंत है सरल, एकदम है सरल, क्योंकि है स्वरूप, क
योंकि वही है जो मेरा है कठिन कैसे हो सकता है और परमात्मा कठोर नहीं कि उसके द्वार हो
बंद, द्वार है खुले, लेकिन कोई जाए उन द्वारों के निकट, जाने की ही बात हम इधर तीन दिन
की है। यह अंतिम दिन है, अंतिम दिन अब हम अंतिम बार उस शून्य में बैठने की कोशिश करें
गे, जो वह उस आदमी ने की थी, उस कमरे में, अकेले में बैठ गया था चुपचाप मौन। पहेली न
हीं पकड़ी थी, उसने हल करने को अपने मन को पकड़ा था शांत करने को, यह दो अलग बातें
है। पहेली को पकड़ने हल करने को मन हो जाएगा अशांत और अशांत मन कोई पहेली को सुल
झाना पाएगा, उसने पकड़ा मन को, पहेली को नहीं, उसने पकड़ा मन को कि कर लूं इसे शांत।
फिर देख लूंगा पहेली को शांत मन के सामने कोई पहेली कभी नहीं है। पूछते है बार-बार प्र–
ध।न आप ई–ध।वर क्या है, कहां है, स्वर्ग क्या है, नरक क्या है, पहेलियों को पकड़ रहे हैं, मन
को नहीं पकड़ रहे हैं, पूछते हैं कि पुनर्जन्म है या नहीं। पूछते है कर्मों का कोई संबंध है या नह
ीं। जमाने भर के ना मालूम कहां-कहां के प्र–ध।न पूछते हैं, पहेलियों को पकड़ते हैं, लेकिन उस
मन को नहीं पकड़ते, जो शांत हो जाए तो जिसके समक्ष कोई पहेली नहीं रह जाती। पहेलियों
को पकड़िये पंडित हो जाइएगा, शास्त्र पढ़िये गुरुओं के पास जाइए, सेवा करिए उनकी, वे खूब

ज्ञान देंगे आपको और उनका ज्ञान आपकी मृत्यु बन जाएगा। आपका बंधन, आपका बोझ और आपका चित्त, भूल जाएगा इस बात को, जो कि बेसिक थी, जो कि आधारभूत थी, वह यह कि पहेली को पकड़ना है या मन का, मैं जमाने भर की पहेलियां सुलझाने जाऊं या इस मन को सु लझा लूं। मेरा कहना है जो मन को सुलझा लेता है, उसकी सब पहेलियां सुलझ जाती है। सुलझा हुआ मन, सुलझा हुआ जगत, सुलझा हुआ मन, सुलझा हुआ जीवन, सुलझा हुआ मन, तो फिर कोई बाधा नहीं रह जाती परमात्मा तक उठने की और सुलझा हुआ मन यात्रा कर लेता है। उस आदमी की तरह थोड़ी देर हम भी एक कोने में चुप होकर बैठेंगे, ताले के संबंध में बिलकु ल मत सोचना। सोचना ही मत और मत सोचना यह कि गीता क्या कहती है उस ताले को खो लने के बाबत तो कुरान क्या कहता है और महावीर क्या कहते हैं, बुद्ध क्या कहते हैं, कृपा क रो इनको छोड़ दो, ताले को छोड़ दो उसके साथ, इन सबके दिए उत्तर भी छोड़ दो, क्योंकि जो ताले को खोजता है, वह इनके उत्तर खोजता है, खोजो उस मन को जो भीतर है, करो उसे शांत होने दो उसे मौन। हो जाने दो उसे शून्य और फिर देखो, तो फिर दिखाई पड़ेगा कि सिवा य परमात्मा के और कुछ भी नहीं है। इतनी ही बात और चूंकि अंतिम दिन है और इधर तीन दिनों में न मालूम क्या-क्या बातें मैंने आपसे कहीं, तो विदा के इस क्षण में जरूरी है कि ये दो-तीन बातें आखिर में और आपसे कह दूं। एक तो मैंने, ऐसी बहुत सी बातें कहीं जिससे आपके मन को चोट पहुंची होगी, लेकिन मैं क्षमा नहीं मांगूगा क्योंकि मैंने जानकर ही वह चोट पहुंचाई है कोई अनजाने में नहीं। दुख तो इतना ही रह जाता है कि चोट थोड़ी ही पहुंचा पाता हूं, पूर ी नहीं पहुंचा पाता, क्योंकि शब्द बहुत आदमी के कमजोर है और तलवार नहीं बन सकते। लेकि न अगर बन जाए और आपके हृदय को टुकड़े-टुकड़े कर दे तो शायद आपकी जिंदगी में कुछ हो जाए, क्योंकि जड़ता हो गई है घनी, सो गए है गहरे अब तो कोई बहुत क्रूरता से, कठोरता से न हिलाए तो हिलना भी संभव नहीं है। तो कोई बहुत जोर से तूफान आ जाए और कोई आंध ी और भूकंप आ जाए और सब हिल जाए तो शायद हमारी नींद टूटे और हो सकता है न भी टूटें। क्योंकि बहुत ही गहरे सोने वाले हो तो, शायद भूकंप में भी सोए रहे।

इधर तीन दिन मैंने बहुत सी चोटें पहुंचाई जान कर। दुख रहेगा तो उन लोगों का जिनको चोट न पहुंची हो, तो उनसे क्षमा मांगता हूं कि अगली बार आऊंगा तो और जोर से पहुंचाने की क ोशिश करूंगा। लेकिन जिनको पहुंच गई हो, उनका धन्यवाद करता है, उनका स्वागत करता हूं, वह चोट उनको चिंतन का मौका दें, विचार का, खोज का, उनके जीवन में कोई घड़ी आ जाए कि वे जाग सकें, खुद कुछ जान सकें, तो ही उन्हें उनकी आत्मा उपलब्ध हो सकती है। अंतिम बार हम अब रात के ध्यान के लिए बैठेंगे। ध्यान में जरूरी है...

मेरे प्रिय आत्मन्

बीते दो दिनों में मनुष्य के मन पर कौन सी जंजीरें हैं, उन जंजीरों में से दो जंजीरों की हमने बात की हैं और आज तीसरी जंजीर की बात करेंगे।

पहली जंजीर इस बात की है, यह बोध, यह भ्रम, यह खयाल की मैं जानता हूं। ज्ञान का भ्रम मनुष्य के मन की कारागृह की पहली इ□ट है। दूसरा मैं कर्ता हूं, कर्म का मालिक हूं, अपना मालिक हूं, यह भाव भी एकदम भ्रांत और झूठा है। यह दोनों बातें हमने विचार की है। आज तीसरी और सर्वाधिक कठिन बात पर हम विचार करेंगे। शायद ये दो बातें खयाल में भी आई हों। तीसरी बात खयाल में आनी और भी थोड़ी मुश्किल है, लेकिन जिन लोगों ने दो सीढ़ियों को समझा हैं वे जरूर ही तीसरी भी समझ सकेंगे।

मैं जानता हूं यह भ्रम है, मैं कर्त्ता हूं यह भ्रम है और सबसे बड़ा भ्रम यह है कि मैं हूं, मेरा होना। मेरा होना सबसे बड़ा भ्रम है, मैं हूं, यह मनुष्य के जीवन का केंद्रीय भ्रम है, केंद्रीय असत्य और इसी असत्य के आस-पास वह जीता है। इसलिए जो जीवन खड़ा होता है, वह सारा जीवन ही मिथ्या और झूठ हो जाता है। इस संबंध में हम आज की सुबह बात करेंगे।

मैंने कहा, कठिन होगी यह बात खयाल में लानी, क्योंकि इसे तो हमने जन्म के साथ ही स्वीकार कर लिया है कि मैं हूं और हमने न इस पर कभी विचारा, न इसकी कभी खोज की, कि यह मैं क्या है? यह है भी या नहीं है। यह मैं कौन हूं? न हमने इसे खोजा, न सोचा, न हमने इसका कोई अनुसंधान किया, हमने इसे मान लिया है, हमने इसे स्वीकार कर लिया है। यह स्वीकृति हमारी एकदम अंधी है, यह तो इस बात से ही ज्ञात हो जाएगा कि हमें पता नहीं है कि मैं कौन हूं, जिस मैं को हम माने हुए बैठे हैं, उसका हमें कोई भी पता नहीं है कि वह क्या है और जिस चीज का हमें पता ही न हो कि वह क्या है, उसे मान लेना अंधा तो होगा ही। लेकिन सामान्यतया हमने कुछ कामचलाऊ छाल पैदा कर लिए हैं, जिनसे हमें लगता है कि मैं हूं, यह हूं, वह हूं।

एक छोटी सी कहानी कहूं और उससे ही अपनी चर्चा शुरू करूं।

एक रात, एक सराय में, एक नया मेहमान आया। सराय भरी हुई थी, रात बहुत बीत चुकी थी और उस गांव के दूसरे मकान बंद हो चुके और लोग सो चुके थे। सराय का मालिक भी सराय को बंद करता था, तभी वह मेहमान अपने घोड़े को लेकर वहां पहुंचा और उसने कहा, कुछ भी हो, कहीं भी हो, मुझे रात भर टिकने के लिए जगह चाहिए ही। इस अंधेरी रात में अब मैं कहां खोजूं और कहां जाऊं। सराय के मालिक ने कहा, ठहरना तो हो सकता है, लेकिन अकेला कमरा मिलना कठिन है। एक कमरा है, उसमें एक मेहमान अभी-अभी आकर ठहरा है, वह जागता होगा, क्या तुम उसके साथ ही उसके कमरे में सो सकोगे। वह व्यक्ति राजी हो गया। एक कमरे में दो मेहमान ठहरा दिए गए, जो नया मेहमान आया था, वह अपने बिस्तर पर लेट गया, न तो उसने जूते खोलें, न अपनी पगड़ी निकाली, न अपना कोट अलग किया। वह सब कपड़े पहने हुए लेट गया। दूसरा आदमी जो वहां ठहरा हुआ था, उसे हैरानी भी हुई, लेकिन अपरिचित आदमी से कुछ कहना ठीक न था, वह चुप रहा। लेकिन जो आदमी पगड़ी बांधे ही सो गया था, वह करवटें बदलने लगा और नींद आनी उसे कठिन हो गई।

दूसरे मेहमान अंततः संकोच तोड़ा और उसने कहा मित्र! अगर बुरा न मानें, तो मैं सोचता हूं आपको इसीलिए नींद नहीं आ पा रही है कि आप जूते पहनें हैं, सारे कपड़े पहनें हैं, पगड़ी बांधे हुए हैं, ऐसे कभी कोई सोया है। थोड़े शिथिल हो जाएं, थोड़े इन कपड़ों को अलग कर दें, थोड़े आराम से हो जाए तो शायद नींद आ जाए। वह आदमी उठकर बैठ गया और उसने कहा, मैं भी सोचता हूं कि कपड़े अलग कर दूं, जूते अलग कर दूं, लेकिन एक बड़ी कठिनाई हैं, उस वजह से मैं अलग नहीं कर पा रहा हूं, अगर मैं अकेला होता इस कमरे में तो मैं कपड़े अलग कर देता, पगड़ी अलग कर देता, आराम से सो जाता, लेकिन तुम भी हो। उस आदमी ने कहा, मेरे होने से क्या कठिनाई हैं। वह व्यक्ति बोला, कठिनाई यह है कि अगर मैंने अपने सारे कपड़े उतार कर रख दिए, तो सुबह मैं कैसे पहचानूंगा कि मैं कौन हूं, कपड़ों के कारण ही तो मैं पहचानता हूं कि मैं कौन हूं। अगर अकेला होता तो मैं समझ जाता कि मैं वही हूं और ये कपड़े मेरे हैं, लेकिन यहां दो आदमी हैं और रात भर की नींद के बाद इनमें उठूंगा तो यह तय कैसे होगा कि मैं कौन हूं और ये कपड़े किसके हैं।

वह आदमी बहुत हैरान हुआ, उसने कहा, आश्चर्य की बात है। क्या आप अपने को अपने कपड़ों से पहचानते है। उस आदमी ने कहा, मैंने आज तक एक आदमी ऐसा नहीं देखा, जो कपड़ों के अलावा और किसी चीज से अपने को पहचानता हों। कपड़ों से ज्यादा पहचान किसी की गहरी नहीं है, भीतर कौन है उसे तो कोई भी नहीं जानता। बाहर जो है, उसी को हम सब जानते हैं, वह तो कपड़े से ज्यादा नहीं है। आदमी ने तो बात बड़ी अदभुत कहीं। वह दूसरे व्यक्ति ने कहा, तब एक काम करें, नींद तो लेनी जरूरी है और आपने जो मसला उठा दिया, वह बहुत कठिन है। अब एक ही रास्ता है और आप न सो पाए तो मैं भी न सो पाऊंगा, उस कमरे में उन दोनों मेहमानों के पहले जो लोग ठहरे होंगे, उनके बच्चे, खेलने की एक गुड़िया और फुग्गा छोड़ गए थे और दूसरे आदमी ने इस पगड़ी बांधे वाले आदमी से कहा, आप कृपा करें, कपड़े उतार दें, यह गुब्बारा पड़ा हुआ है, इसको अपने पैर में बांध लें और यह गुड़िया अपने बिस्तर पर रख लें, यह आपके चिह्न हो जाएंगे, सुबह जब आप उठेंगे तो आप जान लेंगे कि मैं कौन हूं और अपने कपड़े पहन लेना। यह बात तय हो गई, उस आदमी ने कपड़े उतार दिए, पैर में गुब्बारा बांध लिया और गुड़िया पास रख लीं और सो गया। थोड़ी ही देर बाद लेकिन उस दूसरे आदमी को मजाक सूझी। उस सोए हुए आदमी के पैर से गुब्बारा निकाल कर, उसने अपने पैर में बांध लिया और उसकी गुड़िया उठाकर अपने बिस्तर पर रख लीं। कोई चार बजे रात वह आदमी घबड़ाकर उठा और जोर से चिल्लाने लगा और

दूसरे आदमी को उसने हिलाकर उठाया और कहा कि मेरे मित्र! मैंने जो कहा था, वह गड़बड़ मालूम होता है हो गई, कठिनाई खड़ी हो गई। मेरा नाम मुल्ला नसरुद्दीन है, था, जब मैं कपड़े पहने हुए था, मैं जानता था कि मैं मुल्ला नसरुद्दीन हूं। तुमने कहा था कि पैर में गुब्बारा बांध लो, वह गुब्बारा कहां है, वह तुम्हारे पैर में बंधा हुआ है। वह गुड़िया तुम्हारे पास रखी हुई, इससे तय हो गया कि तुम मुल्ला नसरुद्दीन हो, लेकिन मैं कौन हूं अब?

अब मैं कौन हूं? यह बड़ी मुश्किल हो गई पहचाननी और अब इस जिंदगी में बड़ी कठिनाई हो जाएगी, आइडेंटिटी खो गई। मेरा नाम खो गया, मेरा व्यक्तित्व खो गया, यह कहानी बड़ी अनूठी मालूम पड़ती है, लेकिन आपको भी शायद पता नहीं है आपके कपड़े छीन लिए जाएं, आपकी पदवियां छीन ली जाएं, आपका नाम छीन लिया जाएं, तो आप क्या रह जाएंगे, आपकी आइडेंटिटी भी खो जाएगी, आपका व्यक्तित्व भी खो जाएगा, आप भी खड़े हो जाएंगे, न कुछ 'नोबॉडी', जिसकी कोई पहचान नहीं है, जिसकी कोई रिकगनीशन नहीं है, जिसका कोई नाम नहीं है, जिसका कोई ठिकाना नहीं है। हम अपने मैं को कैसे पहचानते हैं, कौन से रास्तों से पहचानते हैं।

एक सम्राट ने एक महाकवि को अपने घर भोजन पर आमंत्रित किया। तो वह कवि दरिद्र था। वह अपने फटे-पुराने कपड़ों को पहनकर पहुंच गया, लेकिन द्वार पर खड़े द्वारपालों ने उसे वापिस लौटा दिया और कहा, भाग जाओ। सम्राटों से मिलने योग्य तुम्हारी सूरत नहीं मालूम होती, बात सच थी वह कोई भिखमंगा मालूम पड़ता था। वह वापिस लौट आया, उसने अपने मित्रों को कहा, मित्रो ने कहा, तुम पागल हो। सम्राटों के द्वार पर आदमी नहीं कपड़े पहचाने जाते हैं। सच्चाई तो यह है कि किसी द्वार पर आदमी नहीं पहचाने जाते, हर द्वार पर कपड़े पहचाने जाते हैं। तुम व्यर्थ ही दरिद्र कपड़े पहनकर वहां पहुंच गए, अगर एक मुर्दा आदमी भी अच्छे कपड़े पहनकर पहुंच जाता तो उसका स्वागत होता। क्योंकि कपड़े दिखाई पड़ते हैं आदमी तो दिखाई पड़ता नहीं और आदमी का पता किसको है कि आदमी क्या है? कपड़े दिखाई पड़ते हैं, कपड़े पहचाने जाते हैं, कपड़े सब कुछ है। उस कवि की बुद्धि में बात आ गई, उसने उधार कपड़े मांगे मित्रों से और अच्छे कपड़े पहनकर वह थोड़ी देर बाद वापिस उसी द्वार पर पहुंच गया। संतरी भागे हुए आए, राजा को खबर दी गई, राजा खुद द्वार पर महाकवि को लेने आया, उसके हाथ में हाथ डालकर वह भीतर गया। उसे भोजन पर बिठाया, बहुत स्वर्ण की थालियों में, बहुत बहुमूल्य भोजन आए, वह महाकवि, वह राजा आमने-सामने बैठे, उस राजा ने कहा, शुरू करें भोजन कृपा करें। उस कवि ने कहा, शुरू करूं, भोजन उठाया और अपने कोट से बोला, मेरे कोट तू पहले भोजन कर लें, अपनी पगड़ी को भोजन लगाया और कहा, तू भोजन कर लें, अपने जूते को भोजन लगाया। राजा ने कहा, महानुभाव! बड़ी अजीब आदतें है आपकी, भोजन शुरू करने की। ऐसी आदतें मैं कभी देखी नहीं, यह क्या कर रहे हैं आप। उस कवि ने कहा, मैं तो पहले भी आया था, लेकिन द्वार पर जगह न मिल सकी। अब जिन कपड़ों के कारण द्वार खोले हैं, अगर उन्हें भूल जाऊं तो बड़ी अशिष्टता होगी। यह कपड़े हकदार है पहले भोजन कर लेने के, यही मुझे लाए हैं। सच तो यह है, यही यहां आए है, मैं कहां हूं। क्योंकि मैं तो पहले भी आया था, लेकिन द्वार बंद पाए थे।

कपड़ों से आदमी पहचाना जाता है, दूसरे पहचानते हो यह तो ठीक हो, हम खुद भी अपने को अपने ही कपड़ों से पहचानते हैं।

एक यहूदी मित्र ने जो जर्मनी से भारत की यात्रा पर आया, मुझसे एक बात कहीं , उससे मैं यह कह रहा था। उस से मैं यह कह रहा था कि आदमी अभी कपड़ों के ऊपर नहीं नहीं उठ सका, आत्मा की बात बहुत दूर है। उसने अपनी एक घटना सुनाई हिटलर के जमाने में, वह जर्मनी के एक जेलखाने में बंद रहा, यहूदियों की हत्या की हिटलर ने, पांच सौ यहूदी रोज मारे जाते रहे। अकेले हिटलर ने कोई बीस लाख यहूदी मारें, पांच सौ यहूदी रोज नियमित हत्या करने की योजना रही। वह भी यहूदी था, वह भी पकड़ लिया गया था। यह बिलकुल संयोग की बात थी कि वह बच गया, क्योंकि वह आखिरी दिनों में पकड़ा गया और उसके मरने की लिस्ट थोड़ी दूर थी और युद्ध समाप्त हो गया। उसने मुझे बताया कि जब मैं पहली दफा ले जाया गया तो मेरे साथ कोई दो हजार यहूदी और थे। हम सारे लोगों को जेल में ले जाकर सबसे पहले काम यह किया गया कि हमारे सारे कपड़े छीन लिए गए और हम नग्न कर दिए गए। दो हजार लोग नग्न कर दिए गए, फिर हमारे सिर घोंट डाले गए, हमारी मूंछें बना दी गई, हमारे सारे बाल साफ कर दिए और तब उसने कहा कि मैं इतना घबड़ा गया आप ठीक

कहते हैं, दो हजार नंगे और सिर घुटे लागों में पहचानना मुश्किल हो गया कि कौन कौन है। जो अपने मित्र थे वे भी समझ में नहीं आने लगे कि यह कौन है, खुद को आईने में देखकर शक होने लगा कि यह मैं, मैं ही हूं।

कपड़ों ने और कपड़ों से मेरा मतलब बहुत सी बातों से हज। जो कपड़े हम पहने हुए हैं, वे तो कपड़े हैं ही, हमने और तरह के कपड़े भी पहन रखे हैं, पद के, पदवियों के, वंशों के, नामों के, परिवारों के, वे भी हमारे कपड़े हैं, वे भी हमने ओढ़ रखे हैं।

एक आदमी मिनिस्टर हो जाए, तो बड़े ऊंचे कपड़े हैं और मन पर उसके ओढ़ लिए जाते हैं। एक आदमी राष्ट्रपति हो जाए, तो उसकी आत्मा पर बड़ी गहरे लबादे ओढ़ लिए जाते हैं और उसके राष्ट्रपति को नीचे उतार लो उसकी कुर्सी से, उसके कपड़े छीन जाएंगे, वह नाकुछ हो जाएगा। उसे फिर कोई पूछेगा नहीं, कोई फिक्र नहीं करेगा। बहुत तरह-तरह के कपड़े हमारे ऊपर इकट्ठे हैं और इन्हीं कपड़ों को हम समझते हैं, मेरा होना, मेरा अस्तित्व, मैं। धन हो, पद हो, यश हो, पदवी हो, प्रतिष्ठा हो, तो मेरा मैं मजबूत हो जाता है, न हो तो मेरा मैं छोटा हो जाता है, क्षीण हो जाता है।

मरते वक्त नेपोलियन हार चुका था युद्ध में और एक छोटे से दीप सेंट हैलेना में उसको बंद कर दिया था। अब नेपोलियन उन थोड़े से लोगों में से था, जिन्होंने सारी जमीन को हिला दिया। जिन्होंने पहाड़ों से कहा, हट जाओ, तो पहाड़ों को हट जाना पड़ा। जिन्होंने कौमों से कहा, मिट जाओ, तो कौमों को मिट जाना पड़ा। उन थोड़े से लोगों में एक था। आखिरी वक्त हार गया और हैलेना में बंद कर दिया गया। पहले ही दिन सुबह उठकर वह घूमने निकला, एक छोटी सी पगडंडी पर, उसका मित्र, उसका डाक्टर उसके साथ था। छोटी थी, संकरी थी पगडंडी। उस तरफ से एक घास लेने वाली औरत, घास का गट्ठा सिर पर लिए हुए आती थी, नेपोलियन के डाक्टर मित्र ने चिल्लाकर कहा, घसियारन, रास्ता छोड़ दें देखती नहीं कौन रास्ते पर आ रहा है। लेकिन नेपोलियन ने कहा, मेरे मित्र तुम भूल करते हो, रास्ता हमें छोड़ देना चाहिए, अब नेपोलियन कहां है, अब मैं कौन हूं, एक कैदी से ज्यादा नहीं और नेपोलियन छोड़कर रास्ता खड़ा हो गया और उसने कहा, घास वाली को निकल जाने दो, वह कुछ है, मैं तो कुछ भी नहीं हूं। मैं नेपोलियन था कल तक और मैंने पहाड़ों से कहा होता, रास्ते से हट जाओ, तो पहाड़ हट गए होते, लेकिन आज, आज मैं क्या हूं, एक घास वाली फिर भी कुछ है, मैं तो कुछ भी नहीं, नाकुछ, नोबॉडी, मुझे हट जाने दो। वह नेपोलियन हट गया, यह नेपोलियन कल तक सब कुछ था,आज नाकुछ कैसे हो गया। क्या छीन गया इसके पास से, इसके वस्त्र छिन गए, इसके कपड़े छिन गए, इसकी कुर्सी छिन गई, अब यह नाकुछ है। हम सारे लोगों को भी यह जो खयाल है कि मैं कुछ हूं, क्या यह हमें पता है कि हम क्या है, उसका यह खयाल है, या केवल उन वस्त्रों का जो हमने पहन रखे हैं।

हमने जो वस्त्र पहन रखे हैं, हमने जो नकाब ओढ़ रखे हैं, हमने जो मुखौटे पहन रखे हैं, हमने जो नाटक और अभिनय सीख लिया है, वही है हमारा मैं या कुछ और भी है। कोई और गहरा परिचय है या इसी से परिचय है, अगर इसी से परिचय है तो यह बड़ा झूठा मैं है और इसे छोड़ देना जरूरी है। यह मैं, यह मेरे होने का भाव अत्यंत मिथ्या है, इसकी कोई सत्ता नहीं है, हम प्याज की भांति है, हम प्याज के छिलके निकालते चले जाएं, निकालते चले जाएं, आखिर में क्या बच रहता है। बस छिलके निकल जाते हैं और निकल जाते हैं, और भीतर कुछ भी नहीं है। वस्त्र ही वस्त्र है प्याज में, उसके भीतर कुछ भी नहीं हैं। ऐसा ही हमारा ही यह मैं है, इसमें वस्त्र ही वस्त्र है निकलते चले जाएं, निकालते चले जाएं, भीतर बच रहता है नाकुछ। भीतर कुछ पता नहीं चलता कि क्या है, क्या हैं आप, उसको थोड़ा छीलना शुरू करें, उसके कपड़े निकालने शुरू करें और धीरे-धीरे आप पाएंगे कि भीतर रह गया शून्य, वहां किसी मैं का कोई पता नहीं चल रहा है कि मैं कौन हूं। इसीलिए तो कोई भीतर नहीं जाना चाहता। हम बातें इतनी सुनते हैं कि अपने को जाना हो, भीतर जाओ, सुन लेते हैं, लेकिन कभी भीतर जाना नहीं चाहते क्योंकि भीतर जाने में बड़े प्राणों पर संकट आ जाएगा, खुद की चमड़ी निकाल-निकाल कर अलग करनी होगी, तभी तो कोई भीतर जा सकता है। यह जितने वस्त्र हमने पहन रखे हैं, अपने मैं के आस-पास हमने जो सजावट कर रखी है वह उखाड़ देनी पड़ेगी तभी तो हम भीतर प्रवेश कर सकते हैं, उसको उखाड़ने में कोई भी डरता है, घबराता है, वही तो मैं हूं, इसलिए भीतर जाने में एक भय है, एक फिअर है, एक चिंता, एक संताप मालूम होता है।

आज की सुबह इस मैं की पर्तों को उखाड़ने का ही हम काम करेंगे, इस मैं की, प्याज के छिलकों को अलग करने की कोशिश करेंगे, ताकि भीतर जाया जा सके और जाना जा सके कि वहां क्या है, वहां कौन छिपा है, कौन सी सत्ता, कौन सी आत्मा वहां निवास करती है। आत्मा को जानने के पहले मैं की पर्तों को उखाड़ लेना जरूरी है। जैसे कोई कुआं खोदता है, मिट्टी निकालता है, पत्थर निकालता है, खोदता है जमीन को, पर्त-पर्त जमीन को अलग करता है ताकि भीतर छिपे जल के स्रोत उपलब्ध हो सकें, ऐसे ही मनुष्य की आत्मा की खोज में भी खुदाई करनी होती है और मैं की बहुत सी पर्तें जो कि जमीन की भांति, आत्मा के जल को घेरे हुए हैं, उन्हें तोड़ना पड़ता है और निकालना पड़ता है। और जब सारी मैं की पर्तें उखड़ जाती है, तब जो शेष रह जाता है, वही आत्मा है, वही मैं हूं, मैं की झूठी पर्तों को जो उखाड़ने में समर्थ होता है, वही सच्चे मैं को जानने में समर्थ हो पाता है और जो मैं की पर्तों को मजबूत किए जाता है, वह सदा के लिए आत्मा से दूर हो जाता है। हम सारे लोग मैं की पर्तों को मजबूत करने में लगे रहते हैं। छोटा मकान मैं को उतनी मजबूत पर्त नहीं देता, बड़ा मकान और मजबूत पर्त देता है। इसलिए छोटे मकान से बड़े मकान की दौड़ चलती है, थोड़े रुपये मैं को मजबूती नहीं देते, बहुत रुपये मैं को मजबूती देते हैं। इसलिए थोड़े रुपयों से बहुत रुपयों की तरफ दौड़ चलती है।

एंड्रूकार्निक ही मरा, अमरीका का एक अरबपति, मरते वक्त उसके पास कोई चार अरब रुपये थे। चार अरब रुपये बहुत रुपये हैं, लेकिन दूसरे के पास हो तो, अगर खुद के पास हो तो बहुत कम है। अगर आपके पड़ोसी के पास चार अरब रुपये हैं, तो आपको लगेगा बहुत हैं, लेकिन अगर आपके पास हों तो आपको लगेगा, क्या है, केवल चार अरब ही तो हैं। एंड्रू मरा उसके पास चार अरब रुपये थे, उसकी जीवन कथा लिखने वाले एक लेखक ने उससे मरने के दो दिन पहले पूछा कि मित्र तुम तृप्त हो गए होओगे। तुम्हारे पास तो अटूट और अपार संपत्ति है। एंड्रू कारनेगी ने कहा, क्या कहते हों। दस अरब की मेरी योजना थी, मैं एक असफल आदमी हूं, केवल चार अरब कमा पाया। मैं दुखी हूं, मैंने जितना चाहा था, मैं उतना नहीं कमा पाया। अमरीका में ऐसे लोग भी हैं, जिनके पास दस अरब रुपया भी है। एंड्रू कारनेगी के पास चार अरब रुपये का होना कोई सुख का कारण नहीं है। लेकिन अमरीका में ऐसे लोग हैं, जिनके पास दस अरब रुपया हैं, यह दुख का कारण जरूर है। क्यों है यह दुख का कारण, जिनके पास, दस अरब है उनका अहंकार और भी प्रगाढ़ और मजबूत है। एंड्रू कारनेगी उनके सामने छोटा है, वे बड़े हैं। उनकी अस्मिता, उनकी ईगो और मजबूत हैं। कारनेगी के बेचारे की थोड़ी छोटी है, उसके पास केवल चर अरब रुपये हैं। कारनेगी दुःखी मरा, दुनिया में कोई आदमी सुखी नहीं हो सकता, अहंकार किसी को सुखी नहीं होने देगा, क्योंकि अहंकार की सतत मांग यह होती है और आगे, और आगे, क्योंकि जितना मिल जाता है, वह तो अहंकार उसे आत्मसात कर लेता है और उसकी भूख खड़ी हो जाती है और आगे चाहिए। उसकी कोई तृप्ति नहीं है, तृप्ति इसलिए नहीं है कि अगर अहंकार कोई वास्तविक चीज होती, तो उसकी तृप्ति भी हो सकती थी, वह बिलकुल छाया है। छाया की कभी कोई तृप्ति नहीं हो सकती।

एक राजमहल के द्वार पर एक सुबह बहुत भीड़ लग गई थी। एक भिखारी आया था और उसने अपना भिक्षापात्र राजा के महल के द्वार के सामने फैलाया और राजा से उसने कहा, मुझे भिक्षा मिल सकेगी। उस राजा ने कहा, जिस द्वार पर तुम खड़े हो, वहां से कभी कोई खाली हाथ वापिस नहीं लौटता। क्या चाहते हो, जो चाहोगे मिल सकेगा, लेकिन उस भिक्षु ने कहा, सवाल यह नहीं है कि क्या मैं चाहूं, मेरी शर्त दूसरी है और आज तक मेरी शर्त कोई पूरी नहीं कर पाया। एक भिखारी राजा से ऐसा कहे, तो राजा के अहंकार को चोट लग जानी स्वाभाविक है। राजा ने कहा, तुम पागल हो, क्या तुम्हारी शर्त है बोलो, हम पूरा कर देंगे। उस भिखारी ने कहा, बड़ी छोटी है मेरी शर्त, लेकिन पूरा करने का वचन देना के पहले बहुत सोच लेना। यह जो भिक्षा-पात्र है मेरे पास, जो तुम्हें देना हो, मिट्टी देनी हो, मिट्टी सही, लेकिन एक शर्त पर स्वीकार करता हूं, तेरा पूरा पात्र भर देना, अधूरा मत रखना, खाली मत रखना। चाहे मिट्टी डाल देना, तो राजी हूं, लेकिन अधूरा पात्र लेकर वापस न जाऊंगा, पात्र पूरा भरने पड़ेगा। राजा हंसने लगा, छोटा सा पात्र था और राजा के पास क्या थी कमी, सारी जमीन जीत चुका था, उसने अपने मंत्रियों को कहा, जाओ, हीरे-जवाहरातों से इसके पात्र को भर दो। यह भी याद रखें कि राजाओं के द्वार पर मिट्टी दान में नहीं मिलती और क्या छोटी सी तेरी मांग है कि पात्र को पूरा भर दो और पात्र ही लाना था तो कोई बड़ा ले आना था। भिक्षु लेकिन खड़ा मस्कुराता रहा, सदा ऐसा हुआ है, भिक्षु हमेशा राजाओं पर मुस्कुराते रहे हैं, लेकिन

बहुत कम राजा समझ पाए हैं कि भिक्षु क्यों मुस्कुराते हैं। वह भिक्षु मुस्कुराता रहा, वजीर भरकर ले आए हीरे-जवाहरात, बहुत ज्यादा ले आए थे, पात्र बहुत छोटा था ताकि भिक्षु देख ले और उसकी आंखें समझ लें कि किसके द्वार पर वह आ गया है और वह हीरे-जवाहरात उस पात्र में डाले गए, लेकिन भिक्षु हंसता रहा। वह हतप्रद न हुआ, उस चमक को देखकर और थोड़ी देर में राजा की मुस्कुराहट खो गई, आंखों की रोशनी जाने लगी। भिक्षु का पात्र कुछ अजीब था, जितना भी उसमें डाला गया खो गया, उसे भरना कठिन हो गया। खजाने खाली होने लगे, सुबह बीत गई, दोपहर आने लगी। नगर भर में खबर पहुंच गई, भीड़ बढ़ने लगी। द्वार के समक्ष राजधानी इकट्ठी होने लगी, भिक्षु खड़ा था और हंस रहा था और राजा की हंसी समाप्त हो गई थी और वजीर भागे हुए तिजोरियों से सोने-चांदी को लाने लगे, हीरे जवाहरात चुभ गए थे। सोना-चांदी डाला जाने लगा, लेकिन पात्र था अजीब, भरता नहीं था। जो भी डाला जाता था, खो जाता था उसमें। सांझ हो गई और राजा हार गया, असल में सांझ होते-होते कौन राजा हार नहीं जाता। सभी हार जाते हैं, सांझ हो गई, राजा हार गया और पैरों पर गिर पड़ा उस भिखारी के और कहा क्षमा कर दो! भूल हो गई हमसे, कैसा है भिक्षापात्र तुम्हारा, क्या है जादू इसमें, देखने में इतना छोटा और भरने में इतना अपूर, इतना दुष्पूर, खजाने मेरे खाली हो गए और तुम्हारा पात्र खाली का खाली है, कहां गया सब जो इसमें डाला गया, क्या है इसका रहस्य, क्या है मिस्टरी।

वह भिक्षु बोला, कोई रहस्य नहीं है, कोई जादू नहीं, एक मरघट से निकलता था, एक आदमी की खोपड़ी मिल गई, उसी से मैंने यह भिक्षापात्र बना लिया और यह तो आप जानते हैं, आदमी की खोपड़ी कभी नहीं भरती इसलिए भिक्षापात्र भी कभी नहीं भरता। बहुत राजा इस भिक्षापात्र के सामने हार चुके हैं, यह कभी नहीं भरा है और यह कहानी कुछ ऐसी नहीं है कि किसी एक महल के द्वार पर घट कर समाप्त हो गई है। यह हर आदमी के द्वार पर रोज घट रही है। हम अपनी-अपनी खोपड़ी के भिक्षापात्र में भरने में लगे हैं, कभी भरता नहीं, भर नहीं सकता, भरने का कोई उपाय नहीं है, कारण है कुछ न भरने का, कुछ कारण है और वह कारण यह है कि जो चीज हो, वह भरी भी जा सकती है, लेकिन जो हो ही न हो, उसे कैसे भरा जा सकता है। जो चीज हो, उसे भरा जा सकता है, लेकिन जो हो ही न हो उसे कैसे भरा जा सकता है। जिसका अस्तित्व हो, उसके साथ कुछ किया जा सकता है, उसे भरा जा सकता है, खाली किया जा सकता है, लेकिन जिसका कोई अस्तित्व न हो, जिसका होना केवल कल्पना हो, उसके साथ कुछ भी नहीं किया जा सकता।

जैसे इस कमरे में अंधकार भरा हो और हम सारे लोग अंधकार को निकालने की कोशिश करे, तो क्या हम अंधकार का निकाल पाएंगे। हम कितनी ही गठरियां बांधे, गठरिया बाहर चली जाएंगी, अंधकार यही रह जाएगा, हम कितने ही धक्के दें और पहलवानों को लिवा लाए, पहलवान थक जाएंगे और अंधकार यही रहेगा। अंधकार को निकाला नहीं जा सकता, अंधकार को लाया जा सकता है, न निकाला जा सकता है, न लाया जा सकता है, अगर हम सारे लोग निकल पड़े कि चलो आज थोड़ा-थोड़ा अंधकार ले आएं इस कमरे में भरने को, सांझ को हम खाली हाथ वापिस लौट आएंगे, अंधकार कोई भी ला नहीं सकेगा। न अंधकार लाया जा सकता है, न निकाला जा सकता है, क्यों? क्योंकि वस्तुतः अंधकार है ही नहीं, उसका कोई एग्स्सिटेंस नहीं है, उसकी कोई सत्ता नहीं है, वह केवल दिखाई पड़ता है, है नहीं। हां प्रकाश लाया जा सकता है और प्रकाश आ जाए, तो अंधकार विलीन हो जाता है, विलीन हो जाता है यह कहना भी गलत है। क्योंकि जो था ही नहीं, वह विलीन कैसे होगा, उचित होगा यही कहना कि प्रकाश होते ही पाया जाता है कि अंधकार नहीं है और प्रकाश बुझते ही पाया जाता है, अंधकार है। अंधकार फिर क्या है, अंधकार केवल प्रकाश का अभाव है, एबसेंस। अंधकार की अपनी को प्रेजेंस, अपनी कोई उपस्थिति नहीं है, अंधकार की, वह खुद नहीं है। वह किसी का न होना है, वह किसी की गैरमौजूदगी है, वह किसी की एबसेंस है, वह किसी की अनुपस्थिति है। खुद का उसका कोई होना नहीं है, इसलिए अंधकार के साथ हम कुछ भी नहीं कर सकते। न हम उसे ला सकते, न उसे निकाल सकते हैं, अंधकार के साथ डाइरेक्ट एक्शन नहीं हो सकता। कोई सीधा कृत्य नहीं हो सकता, अंधकार के साथ कुछ करना हो तो प्रकाश के साथ कुछ करना पड़ता है। उलटे रास्ते से, इनडायरेक्ट जाना पड़ता है। अंधकार की ही तरह है हमारा अहंकार, उसकी अपनी कोई सत्ता नहीं है। इसलिए अहंकार को न तो कोई भर सकता और न कोई निकाल सकता, उसका अपना कोई होना नहीं है, अगर उसके साथ कुछ भी करना हो तो, आत्मा के साथ कुछ करना पड़ता है। आत्मा की अनुपस्थिति है, अहंकार, आत्मा की एबसेंस है अहंकार, जैसे अंधकार

प्रकाश की अनुपस्थिति है, वैसे अहंकार आत्मा की अनुपस्थिति है। अहंकार के साथ सीधा कुछ भी नहीं किया जा सकता है, लेकिन अहंकार के साथ हम दो काम करते हैं, हजारों वर्ष से करते रहे हैं। एक काम तो है; अहंकार को भरने का, उसकी कथा वही है जो उस भिक्षु की कथा है और उसके पात्र की। भरते हैं, भरते हैं, भरते हैं, भरते-भरते खुद मिट जाते हैं और पाते हैं अहंकार नहीं भरा है, वह वहीं के वहीं है, उतना का उतना, वैसा का वैसा खाली है। क्या आप सोचते हैं, सिकंदरों, नेपोलियनों, हिटलरों के अहंकार भर जाते हैं, नहीं। सिकंदर ने मरने के पहले दुख जाहिर किया था। उसने कहा था कि मैं बहुत दुखी हूं, भगवान बहुत अजीब है इसमें केवल एक ही दुनिया बनाई, कम से कम दो तो बनानी थी ताकि कोई आदमी जीतना चाहे तो दो दुनिया जीत सके, एक ही दुनिया केवल एक दुनिया है जीतने को।

सिकंदर को दुख था कि कम से कम दो दुनिया होनी चाहिए। कम से कम दो तो बनानी थी, जीतने वाले को कुछ सुविधा तो होती, एक ही दुनिया है केवल। अहंकार अगर पूरी दुनिया जीत लें, तो फौरन सोचेगा कि दूसरी दुनिया कहां है। यह जो चांद-तारों पर जाने की इतनी कोशिश चल रही है, इसके पीछे बहुत गहरे में मनुष्य का अहंकार, जमीन काफी नहीं है, चांद-तारें जीतने होंगे। दूर के सितारों पर राज्य कायम करना होगा, वहां झंडे गड़ाने होंगे और इसलिए बड़ी जोर की दौड़ है, पता नहीं रूस पहले झंडा गाड़ दे चांद पर कि अमरीका, कौन मालिक हो जाए उसका। अब अहंकार आकाश में लड़ रहे हैं, दूसरी दुनिया की खोज हो गई है, अगर सिकंदर को उसकी कब्र में पता चल जाए, तो बड़ी बेचैनी होगी उसे कि चांद खोज लिया गया, बड़ी गलती की जो दो हजार साल पहले पैदा हुए, आज पैदा होना था न केवल जमीन के मालिक हो सकते थे बल्कि चांद के भी। लेकिन कोई चांद से हल होने को नहीं है क्योंकि दुनिया बहुत बड़ी है और अहंकार अपूर है, दुष्पूर है उसे भरने का कोई रास्ता नहीं है। कितना ही भरे वह खाली रह जाता है और खाली रह जाने से दुख होता है, पीड़ा होती है। खाली रह जाने से चिंता होती है उसे भरने का मन होता है। हम सारे लोग जो दुखी और पीड़ित है, उस दुख और पीड़ा में क्या है, वह अहंकार जो नहीं भरा जा सक रहा है। वह जगह खाली है, तो सोचते हैं कि शायद आगे जगह पहुंचने से वह भर जाएगा, तो जिस छोटी कुर्सी पर मैं बैठा हूं, बड़ी कुर्सी पर पहुंच जाऊं तो भर जाएगा। लेकिन हमारी आंखें अंधी है, हम देखते नहीं कि उस बड़ी कुर्सी पर जो बैठा है, वह भी उतना ही दुखी है और आगे की बड़ी कुर्सी को देख रहा है। उस बड़ी और बड़ी कुर्सी को जो बैठा वह भी उतना ही दुखी है और आगे की बड़ी कुर्सी को देख रहा है। जमीन पर कहीं कोई एकाध आदमी ऐसा है जो आगे न देख रहा हो। अगर कहीं कोई ऐसा आदमी मिल जाए तो समझ लेना कि वह आदमी परमात्मा का आदमी है, जो आगे न देख रहा हो और जान लेना कि उस आदमी ने आत्मा जैसी कोई चीज जानी होगी क्योंकि जो आगे की तरफ देख रहा है वह अहंकार की दौड़ में हैं। फिर हो सकता है कि वह आगे उदयपुर से दिल्ली की तरफ देख रहा हो या यह भी हो सकता है उदयपुर से स्वर्ग की तरफ देख रहा हो या यह भी हो सकता है उदयपुर से मोक्ष की तरफ देख रहा हो, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। आगे की तरफ जो देख रहा है, वह अहंकार की दौड़ में खयाल है कि वहां पहुंच जाऊं, तो पूर्ती हो जाएगी। लेकिन जो आदमी इस भाषा में सोचता है कि वहां पहुंच जाऊं तो सब ठीक हो जाएगा, वहां पहुंचने पर भाषा तो यही रहेगी, दिल तो यही रहेगा, दिमाग तो यही रहेगा, वह और आगे का सोचने लगेगा, वहां पहुंच जाऊं तो सब ठीक हो जाएगा और यह मन कहीं नहीं बदलता इसलिए मनुष्य की खोपड़ी का भिक्षापात्र कभी नहीं भरता है।

यह हमारा अहंकार है, जो नहीं भरने नहीं देता। अहंकार दुख और पीड़ा है, फिर क्या करे। तो शिक्षक और उपदेशक मिल जाते हैं जो कहते हैं छोड़ दो इस अहंकार को। यह अहंकार दुख है तो छोड़ दो, अहंकार दुख है तो हटा दो अहंकार दुख है तो भगवान के चरणों में डाल दो, समर्पण कर दो। अहंकार दुख है तो विनम्र हो जाओ, निरहंकारी हो जाओ। बड़ी ठीक बात मालूम पड़ती, तर्कयुक्त मालूम पड़ती है, छोड़ दो अहंकार को। लेकिन जो है ही नहीं उसे क्या छोड़ा जा सकता है। जो है ही नहीं, उसे छोड़ा जा सकता है, यह बात तो बड़ी लाजिकल, बड़ी तर्कयुक्त मालूम पड़ती है, हजारों साल से कही जा रही है अहंकार छोड़ो। छोटे-छोटे बच्चों को हम समझाते हैं अहंकार छोड़ो, स्कूल में समझाते हैं, समाज में समझाते हैं, शिक्षा, गुरु, साधु, संन्यासी समझा रहे हैं अहंकार छोड़ा। लेकिन इससे ज्यादा मूर्खतापूर्ण और कोई बात नहीं हो सकती। अहंकार छोड़ा नहीं जा सकता, क्योंकि अहंकार है ही नहीं, अगर होता तब तो हम उसे भर ही लेते, छोड़ने का सवाल क्या था। जैसे अंधकार नहीं छोड़ा जा सकता, वैसे ही अहंकार भी नहीं छोड़ा जा सकता। अगर छोड़ा जा सकता होता तो दुनिया की यह

धार्मिक शिक्षाएं आदमी को अब तक बदल देती। नहीं छोड़ा जा सकता, बल्कि उलटे परिणाम होते हैं, अहंकार छोड़ने वाला जितना अहंकारी हो जाता है, वैसा अहंकारी खोजना कठिन है। बड़ी सूक्ष्म हो जाती है उसकी अस्मिता, बड़ा दबा लेता है अपने अहंकार को, विनम्र लोगों की आंखों में देखे। जो लोग कहते हैं हमने अहंकार छोड़ दिया उनके पास जाए, तो हैरान हो जाएंगे उनका अहंकार बहुत अदभुत हैं। हां, उनके अहंकार के रास्ते दूसरे है, इसलिए पहचानने में देर लग सकती है, लेकिन अहंकार वहां मौजूद है, बड़े सूक्ष्म मार्गों से, जो यह कहता है, मैं विनम्र हूं, यह घोषणा भी अहंकार की ही घोषणा है। मैं विनम्र हूं, यह घोषणा भी अहंकार की ही घोषणा है, क्योंकि जहां अहंकार नहीं है, वहां यह दावा कौन करेगा कि मैं विनम्र हूं। कौन करेगा यह दावा और अगर आप किसी ऐसे आदमी से जो कहता है मैं विनम्र हूं, कह दे कि हां आप तो है, लेकिन हमारे गांव में आपसे भी ज्यादा विनम्र आदमी है। तो वह दुखी हो जाएगा, उसके अहंकार को चोट लग जाएगी कि मुझसे भी ज्यादा विनम्र आदमी कोई और हो सकता है, इसलिए विनम्र आदमी इस बात की कोशिश करते है कि मैं विनम्र हूं और दूसरे जो विनम्र वह झूठे विनम्र है वह सच्चे विनम्रता नहीं है।

एक साधु दूसरे साधुओं के बाबत समझाता फिरता है कि वह काहे के साधु है, अहंकारी है, विनम्र तो मैं हूं। लेकिन यह घोषणा कौन कर रहा है, यह सूचना कौन कर रहा है, यह विज्ञप्ति कौन कर रहा है कि मैं विनम्र हूं, यह मैं की विनम्रता कोई विनम्रता हो सकती है। यह अहंकार की ही सूक्ष्मतम परत है, लेकिन दिखाई नहीं पड़ती। क्योंकि हम एक ही तरह के अहंकार को जानते हैं, भरने वाले अहंकार को, खाली करने वाले अहंकार को हम नहीं जानते। हम भोग के अहंकार को जानते हैं, लेकिन त्यागी के अहंकार को नहीं जानते। लेकिन त्यागी भी अत्यंत अहंकारी होता है, यह अहंकार होता है, मैंने किया त्याग और इसलिए त्याग करने वाले भोग की निरंतर निंदा करते देखे जाते हैं। निंदा क्यों, संसारी को संन्यासी गाली देता देखा जाता है, पापी कहता देखा जाता है क्यों। इसी में उसके अहंकार की तृप्ति और मजा है कि मैं हूं त्यागी और तुम हो भोगी। मैं जाऊंगा स्वर्ग और तुम सड़ोगे नरक में, मैं भगवान के पास बैठूंगा और तुम नरक की ज्वालाओं में सताए जाओगे।

क्राइस्ट को जिस रात पकड़ा गया और सुबह सूली दी गई, जब उन्हें उनके दुश्मन पकड़ कर ले जाने लगे, तो उनके शिष्यों ने पूछा, जीसस तुम चले। लेकिन एक बात बताते जाओ, हो सकता है दुश्मन तुम्हारी हत्या कर दे। एक बात समझा दो, तुमने हमसे कहा था, भगवान का राज्य होगा, 'किंगडम आफ गाड' स्वर्ग का राज्य और तुमने हमें बताया था कि भगवान के सिंहासन के पास तुम बैठोगे, क्योंकि तुम इकलौते पुत्र हो, भगवान के। लेकिन हमारी पोजीशनस क्या होंगी, हमारी जगह क्या होंगी, हम कहां बैठेंगे। तुम भगवान के बगल में बैठोगे, लेकिन हम लोगों के स्थान के क्या होंगे भगवान के आस-पास। स्वर्ग के राज्य में कृपा करके यह तो बता दो, हमने कितना त्याग किया। इस का स्मरण रखना, भूल मत जाना। इन्होंने त्याग किया था, इसलिए ताकि भगवान के पास कोई विशेष जगह पर बैठने का मौका मिल जाए, भगवान का दरबार अगर कहीं हो, तो उसमें कोई नंबर पीछे न लगे, आगे रहे। यह खयाल कि हमने त्याग किया था, उसका बदला क्या होगा स्वर्ग में। यह क्या है, यह अहंकार नहीं तो और क्या है। त्यागी का अपना अहंकार है, भोगी का अपना अहंकार है, होगा भी, क्योंकि त्यागी भी छोड़ रहा है।

एक साधु ने मुझसे कहा कि मैंने लाखों रुपयों पर लात मार दी। मैंने पूछा यह लात कब मारी, उन्होंने कहा, कोई बीस-पच्चीस बरस हो गए होंगे। मैंने उनसे निवेदन किया कि लात ठीक से लग नहीं पाई, नहीं तो तीस वर्ष तक उसके स्मरण रखने की कोई भी जरूरत नहीं थी। उसे कहने और बताने का भी कोई कारण नहीं था, लात अगर लग गई होती तो। लेकिन लात लग नहीं पाई। यद्यपि रुपये खो गए, लेकिन लात नहीं लग पाई और जब लाखों रुपये उनके पास रहे होंगे, तो मैंने उनसे कहा कि जरूर आपको इसका रस आता रहा होगा कि लाखों रुपये मेरे पास है। मैं कुछ हूं और फिर जब आपने उन लाखों रुपयों को छोड़ दिया, तो दूसरा रस आने लगा कि मैंने लाखों रुपयों पर लात मार दी, मैं कुछ हूं। उस मैं कुछ हूं में कोई फर्क नहीं पड़ा, वह वहीं का वहीं खड़ा है, लाखों रुपये थे तो वह था, लाखों रुपये छोड़ दिए तो वह है और मैं आपसे निवेदन करता हूं, पहले होने से दूसरा होने ज्यादा मजबूत है। पहला होना बहुत कच्ची दीवाल पर खड़ा हुआ था कि लाखों रुपये है, लाखों रुपये छिन भी सकते थे। दीवाला निकल सकता था, नुकसान हो सकता था, हुकूमत बदल सकती थी, न मालूम क्या-क्या हो सकता था, लाखों रुपये छिन सकते थे और वह मैं कुछ हूं मिट सकता था, लेकिन लाखों रुपयों

का त्याग अब कोई भी नहीं छीन सकता, इसका कोई दीवाला नहीं निकल सकता। अब यह अहंकार बहुत परमानेंट है, अब यह बहुत स्थाई है, रुपये का दंभ बहुत अस्थाई है, त्याग का दंभ बहुत स्थाई है, उसे अब कोई नहीं छिन सकता, अब कोई रास्ता नहीं है। अब हुकूमत बदले तो बदल जाए, दुनिया बदले तो बदल जाए, लेकिन अब यह त्याग छिन नहीं सकता। यह बड़े हैरानी की बात है और इसीलिए त्यागी को लगता है कि मैंने कोई स्थाई संपत्ति कमा ली, वह अहंकार की ही स्थाई संपत्ति है, क्योंकि त्याग को छीनने का कोई उपाय नहीं है, धन को तो छीना जा सकता है। लेकिन है वह अहंकार, क्योंकि जिसे यह स्मरण है कि मैंने त्यागा उसका अहंकार मौजूद है। अहंकार छोड़ा नहीं जा सकता, फिर क्या किया जाए, न अहंकार भरा जा सकता है, न अहंकार छोड़ा जा सकता है। फिर क्या किया जाए, यह दोनों रास्ते नहीं है। यह दोनों रास्ते गलत साबित हुए हैं, इन दोनों रास्तों ने हजारों साल से मनुष्य के मन को पीड़ित किया है और परिणाम नहीं आया। आगे भी इनसे परिणाम आने को नहीं है, बुनियादी रूप से यह बात गलत है।

सबसे पहली, सबसे पहला सूत्र, अहंकार की खोज में यह होगा कि मैं पहले यह तो देख लूं, कि जिसे मैं भरने या जिसे मैं छोड़ने चला हूं, वह है भी या नहीं। एक आदमी अगर अपने घर से कोई चीज निकालता चाहता हो, तो पहले यह तो पता लगा लें कि वह है भी या नहीं या कोई चीज भरना चाहता हो, तो यह तो पता लगा लें कि वह है भी या नहीं। कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति पहले यह तो जान लें कि यह अहंकार है, कहां है? क्या है? अगर यह है, तो फिर इसके बाद कुछ किया जा सकता है, लेकिन आश्चर्यों का आश्चर्य है कि जो लोग अहंकार को खोजने जाते हैं, वे पाते हैं कि वह है ही नहीं। न तो उसे भरना पड़ता है और न छोड़ना पड़ता है। वह नहीं पाया जाता है।

भारत से एक भिक्षु कोई चौदह सौ वर्ष पहले चीन गया, नाम था उसका बोधिधर्मा। वह चीन पहुंचा, उसके पहुंचने के पहले उसकी ख्याति चीन पहुंच गई, वह बहुत अदभुत व्यक्ति रहा होगा। चीन का सम्राट उसे लेने चीन की सीमा पर आया। उसने स्वागत किया बोधिधर्म का और एकांत में बोधिधर्म से कहा, भिक्षु! बड़ी प्रशंसा मैंने सुनी है तुम्हारी और बड़े दिन से तुम्हारी प्रतीक्षा करता हूं कि तुम कब आ जाओ, मेरे जीवन का एक दुख है। उसे मैं मिटाना चाहता हूं, अहंकार मुझे पीड़ा दे रहा है और सैकड़ों-सैकड़ों धर्मोपदेशको ने मुझे समझाया है कि अहंकार छोड़ो तो दुख के बाहर हो जाओगे, लेकिन मैं अहंकार कैसे छोड़ूं। मैंने सब उपाय किए है, मैंने उपवास किए, मैंने रूखे-सूखे भोजन किए, मैं गद्दियां छोड़कर जमीन पर सोया। मैंने शरीर को क्रसकाय कर लिया, मैं भूखों मरा, मैंने सब तरह के भोग बंद किए, मैंने सब तरह के अच्छे वस्त्र पहनने बंद कर दिए। सर्दियां और गर्मियां मैंने लंगोटियां पर गुजारी, लेकिन भीतर मैं पाता हूं कि अहंकार मरता नहीं, वह मौजूद है। धन भी मैंने देख लिया, राज्य भी मैंने देख लिया, त्याग भी मैंने देख लिया। मैं बड़ा परेशान हूं, यह अहंकार तो जाता नहीं, वह तो मौजूद है, वह कहीं छोड़ता नहीं पीछा, अब मैं क्या करूं। उस बोधिधर्म ने कहा, मेरे मित्र! तुमने जो भी किया है, वह व्यर्थ है, क्योंकि तुमने सबसे बुनियादी बात नहीं की। वह बुनियादी बात कल सुबह हम करेंगे, तुम चार बजे आ जाओ। मैं तुम्हारे अहंकार को खत्म ही कर दूंगा।

वह राजा बहुत हैरान हुआ। इतनी आसान है क्या बात जिसे जीवन भर उसने खत्म करने की कोशिश की है, यह कहता है व्यक्ति कि चार बजे रात आ जाओ, खत्म कर देंगे, खैर देखे। वह राजा उतरने लगा, उस मंदिर की सीढ़ियां जहां बोधिधर्म ठहरा था, वह आधी सीढ़ियों पर होगा कि बोधिधर्म ने कहा कि सुनो, एक बात खयाल रखना, जब आओ तो अकेले मत आ जाना, अहंकार को साथ ले आना। राजा थोड़ा हैरान हुआ, चूंकि उसने कहा, यह क्या बात हुई कि अहंकार को साथ ले आना। बोधिधर्म ने कहा इसलिए कहता हूं कि तुम अकेले आ गए, तो मैं हत्या किसकी करूंगा, साथ ले आना अहंकार को, तो उसको खत्म कर दूंगा, एक बारगी में मामला निपट जाएगा, बात खत्म हो जाएगी। चार बजे वह आया, आते से बोधिधर्म ने पूछा, ले आए अहंकार। उसने कहा, आप भी कैसी बातें करते हैं, अहंकार कोई वस्तु तो है नहीं , कि मैं ले आता। बोधिधर्म ने कहा, चलो एक बात तय हो गई कि अहंकार कोई वस्तु नहीं है। फिर क्या है अहंकार? उस राजा ने कहा, अहंकार तो एक भाव है, एक चित्त की दशा है। उसने कहा, चलो दूसरी बात मान लेता हूं कि अहंकार भाव है। अब आंख बंद करके बैठ जाओ, खोजो कि वह भाव कहां है, और तुम्हें मिल जाए तो मुझे बता देना, वही मैं उसकी मैं हत्या कर दूंगा। उस अंधेरी रात में, चार बजे सुबह वह राजा आंख बंद करके बैठ गया और खोजने लगा अपने भीतर कि अहंकार

कहां है, और बोधिधर्म सामने डंडा लिए बैठा हुआ था, वह डंडा हमेशा अपने हाथ में रखता था और उसने कहा तुम्हें मिल जाए, तो मुझे बस बता भर देना कि पकड़ लिया, मैं उसकी हत्या कर दूंगा। वह सामने बैठा है, और राजा को बीच-बीच में डंडे से धक्के देते जाता है कि देखो, खयाल से खोजो, कोई जगह चूक न जाए। कोई कोना बिना जाना न रह जाए, सारे मन को खोज डालो कि कहां है अहंकार और पकड़ लो उसे वहां कि यहां है, यह है और तुम जैसे ही कह सकोगे, यह है, मैं उसकी हत्या कर दूंगा। आधी घड़ी बीती, घड़ी बीती वह जो राजा बैठा था, उसका चेहरे पर बड़ा तनाव खोज रहा है। लेकिन धीरे-धीरे चेहरे का तनाव शिथिल होता गया, उसके चेहरे के स्नायु तंतु शिथिल होते गए। उसका चेहरा एकदम शांत होता गया, घंटा बीता, दो घंटा बीता, वह खोज रहा है, लेकिन अब, अब उसकी आंखों के आसपास कोई बड़ी शांति इकट्ठी होने लगी। उसके होठों के आसपास, कोई मुस्कुराहट घनी होने लगी, वह खोज रहा है और सुबह होने लगी और सूरज निकलने लगा और सूरज का प्रकाश आने लगा और उसके चेहरे पर सूरज की रोशनी पड़ने लगी। वह कोई दूसरा आदमी हो गया और बोधिधर्म ने उसे हिलाया और कहा, मित्र कब तक खोजते रहोगे। उसने आंख खोली, उसे बोधिधर्म के पैर पड़े और कहा, मैं जाता हूं। जिसकी हत्या के लिए मैं आया था, वह है ही नहीं। मैंने आज तक खोजा नहीं, इसलिए वह था, आज मैंने खोजा तो पाया वह नहीं है।

बोधिधर्म ने कहा, वैसा ही है यह, जैसे किसी घर में अंधेरा हो और किसी आदमी को हम कहें कि जाओ दीया ले जाओ और खोजो कहां है। दीया लेकर वह भीतर जाए, तो अंधेरा नहीं मिलेगा, अंधेरा होता है, क्योंकि दीया नहीं होता और दीया लेकर भीतर कोई जाता है तो पाता है, अंधेरा नहीं है। ऐसे ही जब कोई सम्यक रूपेण मन के भीतर होशपूर्वक दीया लेकर जाता है, विचार का, विवेक का, प्रज्ञा का, दीया लेकर खोजता है भीतर तो पाता है, वहां कोई अहंकार नहीं है। जब तक नहीं चाहता खोजने, तब तक अहंकार है। हमारी अनुपस्थिति अहंकार है, जैसे ही हम भीतर उपस्थित होते है खोजने को, वहां को अहंकार नहीं है।

सुना है ऐसा मैंने कि एक बार अंधकार ने भगवान की अदालत में शिकायत कर दी थी और अर्जी दे दी थी कि सूरज मेरे पीछे नाहक पड़ा हुआ है। रोज सुबह से सांझ तक मुझे परेशान करता है और मैंने आज तक इसका कुछ बिगाड़ा नहीं है, कोई कसूर नहीं किया, कोई झगड़ा नहीं है। पता नहीं करोड़ों-करोड़ों साल से इसको क्या सूझ गई है कि रोज सुबह से मौजूद हो जाता है और मुझे परेशान करता है, मेरा पीछा करता है। आप सूरज को समझा दें, भगवान ने सूरज को बुलाया और कहा, कि तुम क्यों पड़े हो व्यर्थ अंधेरे के पीछे, क्या बिगाड़ा है उसने तुम्हारा। सूरज ने कहा, कैसा अंधेरा, कौन अंधेरा, मेरा आज तक उससे मिलना नहीं हुआ। कौन कहता है, मैं उसके पीछे पड़ा हूं। मेरी कोई मुलाकात भी नहीं हुई। झगड़े का तो कोई सवाल नहीं है, कहां है वह अंधेरा, उसे मेरे सामने ले आएं और अगर वह मेरी शिकायत करे तो मैं माफी मांगू और सदा के लिए उसका पीछा बंद कर दूं। लेकिन वह है कहां, इस बात को हुए बहुत दिन हो गए। भगवान भी थक गए, वे अभी तक अंधेरे को सूरज के सामने नहीं ला सके, मामला वही पड़ा हुआ है, फाइल के भीतर ही पड़ा हुआ है और वह फाइल में ही पड़ा रहेगा। भगवान की अदालत में यह फैसला हो नहीं पाएगा कभी, क्योंकि अंधेरे को सूरज के सामने लाया नहीं जा सकता। आत्मा के सामने अहंकार को नहीं लाया जा सकता। ज्ञान के सामने अहंकार को नहीं लाया जा सकता। अवेकंड माइंड के सामने, जागे हुए मन के सामने अहंकार को नहीं लाया जा सकता। तब सवाल क्या है, सवाल सीधा और साफ है। सवाल यह है कि हम किस भांति जाग जाए और भीतर देख सकें। अगर हम भीतर जाग कर देख सकें तो वहां कोई ईगो, कोई अस्मिता, कोई अहंकार, कोई मैं वहां नहीं है। फिर वहां जो है वही परमात्मा है, फिर वहां जो है वही मोक्ष है, फिर वहां जो है वही निर्वाण है। फिर उसे कोई-कोई नाम दे दें, इससे कोई भेद नहीं पड़ता। वहां जो है, वही परम आनंद है, वही परम सत्य है।

कैसे हम जाग जाए, कैसे हम भीतर ज्योति जगा लें, कैसे भीतर दीया जल जाए और हम खोज सके, जल सकता है, ज्योति मौजूद है, दीया मौजूद है, सब कुछ मौजूद है। सिर्फ हमारी दृष्टि उस और नहीं है, सिर्फ हमारा खयाल, सिर्फ हमारे विचार की दिशा और गति उस और नहीं है। सब मौजूद है, चित्त पूरी तरह तैयार है। जागरण की पूरी की पूरी सामग्री साथ है। सिर्फ हमारा खयाल नहीं है, हमारा विचार नहीं है, हमारी दृष्टि नहीं है। और हमारी दृष्टि जिस तरफ है, तीन दिनों मैंने आपसे बातें

की है, उस तरफ की दृष्टि इस तरफ दृष्टि को जाने नहीं देती। एक ही सूत्र है समस्त जीवन के सार को उपलब्ध करने का, एक ही विज्ञान है, एक ही सीक्रेट है और वह है स्वयं के भीतर जागरण को, होश को, अवेयरनेस को उपलब्ध कर लेना, कैसे जागे।

तीन छोटी-छोटी बातें इस संबंध में इस अंतिम चर्चा में आपसे मैं कहूंगा। वे बातें छोटी हैं, लेकिन उनका प्रयोग बहुत वृहत परिणाम ला सकता है, उससे बड़ा और कोई परिणाम किसी बात से नहीं आता। एक छोटी सी चिंगारी पूरे पर्वत में आग लगा सकती है, ऐसी ही छोटे से तीन सूत्र है जागरण के, वे उपलब्ध हो तो अहंकार नहीं पाया जाता है और जो पाया जाता है, वही आत्मा है।

पहला सूत्र—हमारे चारों तरफ जो जगत है, उसके प्रति हमें जाग्रत होना चाहिए, सोए हुए नहीं। हम उसके प्रति साए हुए हैं, क्या आपको खयाल है, कभी आपने सड़क पर चलते हुए लोगों को पांच मिनट के लिए रुक कर होश से देखा हो। क्या आपको खयाल है कि दरख्तों के पास बैठकर आपने पांच मिनट दरख्तों को होश से देखा हो। क्या आपको खयाल है सुबह उगते सूरज को पांच क्षण ठहरकर आपने पूरे विवेक से देखा हो, पूरे जागरण से, रात के आकाश के तारे कभी देखे हो। सब भांति शांत और मौन होकर देखा हो, सब तरह के विचार को छोड़कर, निर्विचार होकर, शांत होकर, चारों तरफ जो दुनिया पहली है, उसे पहचाना हो, उसके प्रति आंखें खोली हों। नहीं खोली, हम करीब-करीब सोए-सोए चले जाते हैं, चलते रहते हैं, सोए-सोए। सोए-सोए चलने का, सलीपिंग हालत में चलने का मतलब मेरा दुनिया बाहर होती है, हम भीतर आक्यूपाइड होते हैं। भीतर विचार में उलझे होते है, विचार की एक धुंधली परत भीतर चलती रहती है, बाहर सड़क पर आप चले जा रहे हैं, लोग समझते हैं आप सड़क पर चल रहे हैं, और हो सकता है आप अपने घर में अपनी पत्नी से झगड़ा कर रहे हैं। लोग समझते हैं आप सड़क पर चल रहे हैं, हो सकता है आप ईसराइल में किसी की हत्या कर रहे हो, आप कहां है। चल कहां रहे हैं, ये दोनों दो बातें हैं, चित्त आपका कहीं और है, चलना कहीं और तो चलना सोया हुआ होगा, जागा हुआ नहीं हो सकता। कोई भी क्रिया जागी हुई तब होती है, जब चित्त भी वहीं होता है, जहां क्रिया होती है। तो बाहर के जगत के प्रति जागरण का प्रयोग कैसे करें, कभी अचानक ठहर जाए। चलते-चलते रास्ते पर रुक जाए और जरा देखें चारों तरफ क्या है, कभी घर की छत पर आंख खोलकर बैठ जाए और देखें ये तारें क्या है। कुछ सोचे न, सिर्फ देखें क्योंकि आपने सोचा कि आप कहीं और गए, सोचा कि आप सोए, आपने सोचना शुरू किया कि जो मौजूद है वह हट गया और कोई चीज जो मौजूद नहीं है आ गई, एक गुलाब के फूल के पास आप बैठे हैं और आपने सोचना अगर शुरू कर दिया गुलाब के फूल के बाबत तो वह जो फूल आपके सामने है उसके प्रति आप सो गए। हो सकता आपने गुलाब के फूल पर जो कविताएं पढ़ी हों, वह याद आ जाए और जिन मित्रों ने आपको गुलाब के फूल भेंट किए हो, वे याद आ जाए या गुलाब के फूल से जो-जो एसोसिएशन हो, जो-जो संबंध हों, वे याद आ जाए, लेकिन ये गुलाब का फूल जो मौजूद है, इसके प्रति आ सो गए, आपका मन कहीं और गया।

चीजों के प्रति जागने का मतलब है सोचे नहीं देखें और हम देखने में इतने असमर्थ हो गए हैं कि एक पति अपनी पत्नी जिसके पास वह वर्षों से रह रहा है, उसको भी नहीं देख पाता। उसको भी उसने कभी आंख भरकर पूरी तरह देखा नहीं। एक पिता अपनी बेटे को कभी देखता नहीं कि पूरी तरह देखा हो, क्या है यह। एक मित्र अपने मित्र को नहीं देखता और आप हैरान हो जाएंगे कभी जरा पांच मिनट आंख बंद कर लें और अपनी मां का चेहरा स्मरण करें, आप हैरान हो जाएंगे, आपको मां का चेहरा तक स्मरण नहीं आएगा, कभी देखा ही नहीं ठीक से, स्मरण कैसे आएगा। पांच मिनट आंख बंद करके खयाल करें, मेरी मां का चेहरा कैसा। तो सब रेखाएं धुंधली हो जाएंगी, वहां कुछ दिखाई नहीं पड़ेगा, बड़ी हैरानी होगी कि मां का चेहरा भी मुझे स्पष्ट, मेरी स्मृति में नहीं है, क्यों? हां ऐसे अगर खयाल न करें तो शायद आपको यह खयाल होगा कि मुझे याद है अपनी मां का चेहरा। लेकिन आज ही आप जरा कोशिश करना आंख बंद करके, तो आपको पता चलेगा कि सब रेखाएं मिट जाती है, बिगड़ जाती है। मां का चेहरा भी पकड़ में नहीं आता कि ठीक-ठीक कैसा है, मां की आंख कैसी थी, कैसी है, क्या उसकी आंखों में भाव हो, वे कुछ भी न पकड़ेंगे। कभी आपने देखी नहीं है गौर से, किसने देखी है अपनी मां की आंख को गौर से, जिसे हम प्रेम करते हैं, उसको भी हमने कभी देखा थोड़ी है, उसके पास से निकल जाते हैं, सोए-सोए

दूसरी पच्चीस बातें सोचते हुए उसके पास बैठे रहते हैं, जिस मित्र को हम प्रेम करते हैं उसको गले से लगाए बैठे रहते हैं, लेकिन हमारा मन तो न मालूम कहां होता है। इसलिए दिखाई हमें पड़ता है कि हम किसी को गले से लगाए, लेकिन हमारे भीतर हजारों मीलों का फासला होता है, क्योंकि हम कहीं और होते है।

ऐसा सारा जीवन सोया-सोया है, इस सोए-सोए जीवन में जब हम बाहर के प्रति ही नहीं जाग सकते, तो भीतर के प्रति क्या जागेंगे, वह तो बहुत कठिन बात है। तो पहला सूत्र है, बाहर के प्रति जागना। जो भी बाहर दिखाई पड़े, बहुत है बाहर, क्या नहीं है बाहर, उसे बहुत ध्यान से देखना, बहुत ध्यान से सुनना, सारी इंद्रियों का अत्यंत ध्यान से, बहुत इंटैनसिवली उपयोग करना हैः भोजन करते वक्त पूरी तरह स्वाद लेना जरूरी है, आंख खोलकर फूल को देखते वक्त पूरी तरह से उसके सौंदर्य को पी लेना जरूरी है, संगीत सुनते वक्त उसकी ध्वनियों को पूरे-पूरे कानों की, पूरे-पूरे प्राणों तक पहुंच जाना जरूरी है। किसी का हाथ, हाथ में ले, तो उसका हाथ-हाथ से जुड़ जाना जरूरी है। इतनी समग्रता से, इतने होश से, इतनी तन्मयता से जब कोई व्यक्ति बाहर के जीवन में जीना शुरू करता है, तो एक अवेयरनेस, एक जागरण, एक ज्योति उसके भीतर जागनी शुरू होती है, फिर यही ज्योति।

दूसरे सूत्र में मन के प्रति लगानी होती है। मन है भीतर, विचारों से भरा हुआ, विचार ही विचार है वहां, कामनाएं, कल्पनाएं, इच्छाएं है वहां, स्मृतियां है, भविष्य की आकांक्षाएं हैं, वह सब मन के भीतर चल रही है। जैसे सड़क पर लोग चल रहे हैं, ऐसा मन में भी यात्रा चल रही है बहुत सी चीजों की, पहले बाहर के प्रति जागें, फिर मन के प्रति जागें, फिर मन को देखें कि यह क्या हो रहा है, मन के भीतर। हम सोए-सोए चल रहे हैं, मन के प्रति हमने कभी देखा ही नहीं कि वहां क्या हो रहा है। हम अपने काम में लगे हैं और मन अपना काम कर रहा है, हमें खयाल भी नहीं है कि मन में क्या हो रहा है, कितना हो रहा है, कितनी बड़ी फैक्ट्री वहां चौबीस घंटे चल रही है। अगर कोई आपके दिमाग से सारी की सारी फैक्ट्रि को बाहर निकालकर रख दें, तो पूरा शैतान का कारखाना वहां मिलेगा, वहां क्या हो रहा है, नहीं कहां जा सकता है। एक छोटे से आदमी के मन के भीतर कितना क्या चल रहा है, उसे भी देखना और जानना जरूरी है, उसके प्रति भी जागना जरूरी है, उसके प्रति भी होश रखना जरूरी है। कभी दो क्षण बैठकर उसे भी देखें कि मन के भीतर क्या हो रहा है। लेकिन हम तो कभी मन को देखते भी नहीं, कि वहां क्या होता है। शायद हम डरते हैं, शायद हम भयभीत है कि पता नहीं वहां क्या हो रहा हो। कौन देखें चले चलो अपने काम में उलझे रहो, हम इसीलिए काम में उलझे रहते हैं कि कहीं भीतर देखने का मौका न आ जाए। नहीं तो बड़ी पीड़ा भी हो सकती है, क्योंकि जो आदमी समझता है कि मैं साधु हूं, हो सकता है उसके मन में किसी की हत्या के खयाल चल रहे हो, वह कैसे भीतर देखें, भीतर देखें तो अहंकार को चोट लगती है कि मैं हूं साधु। मैं हूं अच्छा आदमी, हजार लोग मेरे पैर पड़ते हो, महाराज-महाराज कहते हो, मेरे भीतर यह चलता है तो उसको देखना ही बंद कर देता है, ताकि जो दिखेगा ही नहीं, समझेंगे कि वह है ही नहीं।

जैसा कि इस रेगिस्तान में शुतुरमुर्ग होता है, दुश्मन आता है तो सिर घुपा कर खड़ा हो जाता है रेत में। दुश्मन दिखाई नहीं पड़ता, शुतुरमुर्ग सोचता है, जो दिखाई पड़ता नहीं, वह है ही नहीं। आसानी से छुटकारा हो गया, ऐसे ही हम शुतुरमुर्ग की तरकीबें काम में लाते हैं, मन को देखते नहीं, ताकि पता ही न चले कि क्या है। जितना हम फिक्र करते हैं अपने कपड़ों की, कि वे ठीक है कि गलत, अपने जूतों की, उनमें कील निकली है कि नहीं। अपने बालों की कि वे ठीक काढ़े गए की नहीं। उतनी फिक्र भी हम उस मन की नहीं करते, जो हमारे प्राणों में भीतर बैठा है कि वहां क्या हो रहा है। वहां कितनी कीलें है, वहां कितनी गंदगी है, वहां कितना सब अव्यवस्थित है, कितना डिसओरडर है, कितना अनार्की है, कितनी अराजकता है, कितना पागलपन है, वहां कोई देखने की फिक्र नहीं है, वह अपने कपड़े ठीक-ठीक कर लेते हैं, बाहर से इत्र छिड़क लेते हैं, फूल सजा लेते हैं और चल पड़ते हैं और भीतर क्या लिए हुए हैं। उसके प्रति भी जागना क्या जरूरी है।

अत्यंत निष्पक्ष भाव से जो भी चलता हो मन में, बुरा-भला, कुछ भी, उसे शांति से देखते रहें, देखते रहें, देखते रहें और आप हैरान हो जाएंगे। उसे देखते-देखते ही आपको दो बातें पता चलेंगी।

एक, कि जिसे आप देख रहे हो वह, और आप, अलग है। एक यह बहुत क्रांतिकारी बोध होगा, कि विचारों को जिन्हें आप देख रहे हैं, वे अलग है। आप अलग है, नहीं तो आप देख भी नहीं सकते थे, देखने वाला अलग है। और यह बोध आ

जाएगा कि देखने वाला अलग है, तो मन एकदम बदल जाएगा। बात दूसरी हो जाएगी, मैं अलग हूं, विचार अलग है। फिर विचारों की कोई पीड़ा, बोझ, भार, नहीं रह जाएगा मन पर, जो अलग है, वह बात खत्म हो गई।

दूसरी बात, देखते-देखते यह पता चलेगी, जैसे कोई हवाई-जहाज से उड़ रहा हों। नीचे के मकानों को देखें, तो मकान सब जुड़े हुए मालूम पड़ते हैं, दो मकानों के बीच में खाली जगह मालूम नहीं पड़ती। अभी आप इतने लोग यहां बैठे हैं। अगर हजार फीट ऊपर से जाकर मैं देखूं, तो आपके बीच में कोई खाली जगह दिखाई नहीं पड़ेगी। लेकिन मैं धीरे-धीरे, धीरे-धीरे, धीरे-धीरे करीब आऊं, तो हर आदमी और उसके पड़ोसी के बीच में खाली जगह दिखाई पड़ेगी, इनटरवल होगा, गैप होगा। जब आप विचारों के प्रति जागेंगे और उनके करीब आकर देखेंगे, तो दूसरी बात आपको पता चलेगी। हर दो विचारों के बीच में थोड़ी सी खाली जगह है, जहां कोई विचार नहीं। एक विचार जाता है, फिर दूसरा आता है, दोनों के बीच में एक खाली जगह है, जहां कोई विचार नहीं है, इंटरवल है, गैप है। वह गैप बड़ा अदभुत है, उसी खाली जगह में आपकी आत्मा है, उसी विचार शून्य क्षण में आप गहरे कूंद सकते हैं, वही जगह है जहां से आप भीतर छलांग ले सकते हैं। जब आपको यह गैप दिखाई पड़ेंगे तो आपको पता चलेगा, विचार मैं नहीं हूं, बल्कि जो रिक्त जगह है, वह मैं हूं। और जैसे ही यह बोध होगा कि जो रिक्त स्थान है, जो खाली शून्य अंतराल है, वह मैं हूं। वह जो स्पेस है, बीच में, वह मैं हूं। तो आपको आत्मा की तरफ जागने का पहला मौका इन्हीं रिक्त स्थानों में से मिलेगा।

और तीसरा जागरण है, आत्मा का, वह आपको करना नहीं पड़ता है। दो जागरण आप करते हैं, तीसरा जागरण अनायास, अपने आप घटित होता है। दो काम आप करते हैं, तीसरा काम परमात्मा करता है। बाहर के प्रति और उस मन के प्रति आप जाग जाए। तीसरा जागरण अपने से अपने से पैदा होगा। तीसरा जागरण, दो जागरण का अनिवार्य परिणाम है। जैसे एक किसान बीज बो देता है, फिर बीज बोने के बाद पौधे की रक्षा करता है, फिर पौधे में फल आते हैं, फूल आते हैं। लेकिन फूल लाने नहीं पड़ते, फूल अपने आप आते हैं। बीज बोना पड़ता है, पौधे की सम्हाल करनी पड़ती है, लेकिन फूल लाने नहीं पड़ते, वे अपने आप आते हैं। उनको कोई खींच-खींच कर नहीं निकालता, कि अब फूल भी निकाले, जैसे बीज बोए थे, अब फूल भी निकाले और किसी ने अगर फूल निकालने की कोशिश की तो फिर फूल कभी न निकलेंगे। फूल तो अपने से आते हैं, वह फलावरिंग अपने से होती है। दो काम किसान करता है, बीज बोता है, पौधे की रक्षा करता है, तीसरा काम परमात्मा करता है, फूल खिलाने का।

जीवन की खोज में भी, जागरण का बीज मनुष्य को बोना पड़ता है। जागरण की रक्षा मनुष्य को करनी पड़ती है और वह जो परम जागरण है, उसके फूल अपने आप आते हैं। वह सहज आते हैं, वह परमात्मा की तरफ से आते हैं। वह हमारे श्रम की भेंट है परमात्मा की ओर से, वह हमें खींच कर नहीं लाने पड़ते। इसलिए दो जागरण आप साधें, तीसरा जागरण आपको उपलब्ध होता है। इसीलिए जब तीसरा जागरण उपलब्ध होता है, तो साधक को पता चलता है कि मैंने क्या किया, यह तो अपने आप आया और तभी वह परमात्मा के प्रति कृतज्ञता और ग्रेटीटयूट से भर जाता है। वह कहता है, मैंने क्या किया। मैंने तो कुछ और ही किया था, जिसका कोई मूल्य नहीं है और यह जो मिल गया है, यह तो मैं जानता भी नहीं था कि मैंने कभी किया। यह क्या हो गया, एक बिलकुल अनूठा, अद्वितीय, अलौकिक, अज्ञात, अनमोल अनुभव उसके ऊपर अवतरित हो जाता है। वह उसे ग्रेस मालूम होती है, वह भगवतकृपा मालूम होती है, लगता है कि भगवान की कृपा से यह हो गया है। वह सहज तीसरी घटना घटती है, वह तीसरी घटना घट सकें, उसके लिए दो घटनाओं की तैयारी हर मनुष्य को करनी होती है।

इधर तीन दिनों में मैंने तीन बंधन तोड़ने को आपसे कहें, ज्ञान का, कर्म का और आज अहंकार का। कैसे यह अहंकार का बंधन विलीन हो सकता है। उसकी मैंने आपसे बात की, कैसे यह जागरण, जाग्रत हो सकता है भीतर, जिसके प्रकाश में अहंकार नहीं पाया जाएगा, कैसे यह सूरज लाया जा सकता है, जिसके सामने अंधकार नहीं होगा, उसकी मैंने आपसे बात कहीं। लेकिन बातों से कुछ भी नहीं होता, बातें सुनने में कितनी भी अच्छी लगती हो, इससे भी कुछ नहीं होता है। बल्कि अकसर यह होता है, कि जो बातें हमें सुनने में अच्छी लगती है, हम उन्हें इसीलिए सुन लेते हैं कि वह अच्छी लगती है और बात खत्म हो जाती है। अच्छी बातों में एक खतरा है, बड़ा खतरा अच्छी बातों में यह है कि वे सुखद लगती है और हम

सुनकर उनका सुख ले लेते हैं और बात समाप्त हो जाती है। बात समाप्त नहीं होनी चाहिए, क्योंकि जो बात सुनने में तक अच्छी लगती हो काश! वह हमारे अनुभव में आ जाए तो क्या होगा। जो बात सुनने में भी एक सौंदर्य की तरफ, एक संगीत की तरफ मन को खोलती हो। सुनने में जिसका कोई बड़ा मूल्य नहीं है, अगर वह बात घटित हो जाए, तो क्या होगा। अगर वह स्थिति उपलब्ध हो जाए तो क्या होगा। कैसे आनंद में और कैसे नृत्य में हमारा प्रवेश हो जाएगा। कैसे आलोक में हम प्रतिष्ठित हो जाएंगे, तो अंतिम रूप से यह कहूंगा कि परमात्मा करें, वह प्यास इन बातों से आपके भीतर गहरी हो। जो इन बातों को केवल सुनने का सुख न बनाए, बल्कि किसी दिन अनुभूति के आनंद में परिवर्तित करते हैं। तो अंतिम रूप से यह बात कहता हूं, परमात्मा प्यास को जगाए, गहरी करें, आपके प्राणों को परेशान कर दें। आपको असंतोष भर दें, इतनी गहरी प्यास से भर दें कि आप बेचैन हो उठें, जब तक कि उस तरफ का द्वार न खुल जाए, जहां से शांति के सागर की धारा उपलब्ध होती है। आप पागल हो उठे, जब तक कि वह द्वार न खुल जाए, उस द्वार को ठोकते ही चले जाए, पीटते ही चले जाए, जब तक कि उस द्वार से खुलने की खबर न आ जाए।

क्राइस्ट ने कहा है, नोक, एंड द डोर शैल बी ओपनड अन टू यू। खटखटाओ और द्वार तुम्हारे लिए खुल जाएंगे, लेकिन मैं तो यह कहता हूं खटखटाने की तो बात दूर द्वार के करीब तो आओ। द्वार के पास तो आओ, पास आते ही द्वार खुल जाएंगे और यह भी बात दूर की द्वार खुल जाएंगे। सच तो यह है कि हम दूर खड़े हैं, इसलिए द्वार बंद है। हम पास हुए कि द्वार खुले ही हुए है। परमात्मा के द्वार बंद नहीं है, लेकिन हम दूर खड़े हैं। यही उनके बंद होने का एकमात्र कारण और कोई भी नहीं। हम निकट हुए कि वे खुलें, शायद वो खुले ही है दूर होने की वजह से हमने बंद दिखाई पड़ते हैं। पास होते ही पाया जाता है कि वे खुले, तो प्यास जगें और हम द्वार के करीब आए, बातें अर्थपूर्ण नहीं है। लेकिन बातों से प्यास जग जाए तो प्यास अर्थपूर्ण है, उस प्यास के लिए कुछ, उस प्यास के लिए कुछ मुझे नहीं, आपको करना होगा। और प्यास के लिए निपट रूप से आपको करना होगा, कोई साथी और सहयोगी नहीं हो सकता। कोई पड़ोसी आपका साथ नहीं दे सकता, अपने ही निगूढ़, अंतरतम में, अपने ही एकांत में, अपने ही प्राणों के भीतर उस प्यास को जगाना होगा, जो जगा लेते हैं, वे धन्यता को उपलब्ध हो जाते हैं। जो नहीं जगा पाते, उनका जीवन एक दुख स्वप्न से ज्यादा नहीं।

इतनी ही बात अभी सुबह मुझे आपसे कहनी है। कुछ और आपके प्रश्न होंगे इस संबंध में वह मैं दोपहर और रात बात करूंगा। अब हम सुबह के ध्यान के लिए थोड़ी देर बैठेंगे, एक दस मिनट के लिए।